लोकभाव स्वरांजली



जनमेजय सिंह गुलेरिया
चन्द्ररेखा ढडवाल

इंडियन नेशनल ट्रस्ट फार आर्ट एण्ड कलचरल हैरिटेज

लोकभाव स्वरांजली

कांगड़ा के चौरासी जन्मगीतों का भाव विश्लेषण व स्वरांकन

लोक मानस को अभिव्यक्ति देने वाले अनाम शब्दशिल्पियों, संगीत विद् व गीतकारों को समर्पित । लोक संस्कृति व परम्परा जिनकी वजह से वर्तमान का जीवंत घटक बनी रहती है ।

गीत चयन व स्वरांकन - **जनमेजय सिंह गुलेरिया**
कथ्य विश्लेषण व भावानुवाद - **चन्द्ररेखा ढडवाल**

आवरण पृष्ठ का चित्रांकन - **प्रो. सुरेन्द्र शर्मा**

इंडियन नेशनल ट्रस्ट फार आर्ट एण्ड कलचरल हैरिटेज

ISBN	: 978-81-931425-0-9
सर्वाधिकार	: सुरक्षित (लेखक)
प्रकाशक	: **देस संगीत प्रकाशन,** दुर्गा भवन, धर्मशाला (कांगड़ा)
शब्द संयोजन	: सुश्री नीलम व नीला (साई कम्प्यूटरज़, धर्मशाला)
प्रथम संस्करण	: 2015
मूल्य	: 250 ₹
अधिकृत वितरक	: पाठक पब्लिकेशनज़ 35, जीरो रोड, महाजनी टोला इलाहाबाद – 211003 दूरभाष : 098395 53886
	: ढडवाल स्टेशनर्ज एण्ड स्पोर्टस, कचैहरी अड्डा, धर्मशाला। दूरभाष : 01892–224867

मुद्रक : अर्पित प्रिंटर्ज गगल, कांगड़ा # 94180 44708

आभार

कवि-कथाकार व लोक संस्कृति के मर्मज्ञ चितेरे डॉ. गौतम शर्मा व्यथित, हिन्दी, पहाड़ी व लोक संस्कृति को समर्पित सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. पीयूष गुलेरी तथा हिन्दी व पहाड़ी में समान गति से लिख रहे चर्चित साहित्यकार डॉ. प्रत्यूष गुलेरी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। हिन्दी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर, प्रसिद्ध समालोचक डॉ. ओम अवस्थी, सुपरिचित चित्रकार प्रो. सुरेन्द्र शर्मा, संगीत विद् व ख्याति प्राप्त बांसुरीवादक डॉ. राजेन्द्र सिंह गुरूंग, शास्त्रीय संगीत के अध्ययेता व व्याख्याता गुरु डॉ. सौभाग्यवर्धन बृहस्पति तथा स्वामी अवधपुरी महाराज के प्रति आभार।

इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एण्ड कलचरल हैरिटेज (इंटैक) के संयोजक श्री लक्ष्मी नारायण अग्रवाल तथा अन्य सदस्यों से मिले सहयोग व कांगड़ा सहकारी बैंक समिति के अध्यक्ष श्री जगदीश सिपहिया से मिले स्नेह अनुदान के लिये विशेष धन्यवाद। हम इटैक की प्रदेश प्रभारी श्रीमती मालविका पठानिया के प्रति भी आभार व्यक्त करते हैं। पूर्व प्रकाशित लोक संस्करणों के प्रणेताओं तथा सहृदयी महिला लोक-गायिकाओं के हम ऋणी रहेंगे, जिनसे हमें जन्म-गीतों की अमूल्य निधि प्राप्त हुई।

स्वर्गीय श्रीमती पावनो देवी अवस्थी, सम्मानीय श्रीमती शकुन्तला ढडवाल, कृष्णा पठानिया, सरला गुलेरिया, शकुन्तला देवी, विद्या देवी, पुष्पलता, सावित्री देवी, सुषमलता मनकोटिया, शारदा राणा, निर्मला गुलेरिया, कामिनी पठानिया, वीना पठानिया, इच्छया मनकोटिया, विन्ता मनकोटिया, कांता जसरोटिया, सोनी चम्बियाल, वीना बड़ोतरा, वीना देवी, कांता देवी, रेखा सिंह, तृप्ता देवी, आशा देवी, अनीता कुमारी, सुवर्णा देवी, सुनीता देवी, कमलेश कुमारी, विमला देवी, सिमरता जम्वाल, शालिनी, कृष्णा ढडवाल, संचिता, चम्पा देवी, प्रेम लता सलारिया, गायत्री देवी, गीता देवी, सुमन बाला, संदीप कुमारी, कमला देवी, रीना कटोच, कांति सूद, बबिता, निशा, पूजा, रंजना, सुदर्शना देवी, रक्षा कुमारी, रिधि अत्री, शिवानी, ज्योति, पूजा, आरती, दिव्या, नीतिका, विक्रान्त, ब्रजेश, संजय, संजीव कौशल तथा अश्विनी चम्बियाल के प्रति विशेष आभार।

पुस्तक के सम्बन्ध में . . . .

लोक एवं स्वरांकन का अद्भुत संगम

कहा गया है कि जब दो कलाओं का सामंजस्यपूर्ण संगम हो जाए तो उनका साकार रूप एक अद्भुत शाश्वत-भाव को जागृत करके अनेक पीढ़ियों की धरोहर बनकर बहुआयामी प्रेरणा जगाने में समर्थ हो जाता है। किन्तु जब लोक-कला और शिष्ट-कला का संगम हो तो उस मणि-काँचन योग का कहना ही क्या ? इस दृष्टि से "लोकभाव स्वरांजली" एक ऐसी सुन्दर संरचना है जो हिमाचल प्रदेश के जन्म गीतों का सुमंजु संकलन तो है ही है, इस पर उन सभी गीतों की भावपूर्ण काव्यात्मक व्याख्या इस मंजूषा को साहित्य प्रेमियों एवं लोकसाहित्य शोधार्थियों के लिए संग्रहीण बनाती है। तिस पर इन जन्मगीतों का स्वर-शास्त्रीय आधार पर स्वरांकन सोने पे सोहागे जैसा है। लोक जन्मगीतों की व्याख्या एवं उनके स्वरांकन का गुरू गंभीर कार्य अपने-अपने क्षेत्र के स्वनामधन्य दो कलाकारों — चंद्ररेखा ढडवाल एवं जनमेजय सिंह गुलेरिया के सद् प्रयत्नों द्वारा संभव हुआ है।

देवनागरी लिपि में लोक गीतों का स्वरूप एवं उनकी व्याख्या इन्हें अखिल भारतीय स्तर पर देखने-समझने और स्थापित करने में भली-भाँति सफल होगी। यही नहीं इनका स्वरांकन जन्मगीतों के वास्तविक लोकरंग और उनकी गायन-विधि को संजोने-संवारने, सहेजने तथा आगामी अनेक पीढ़ियों तक स्वर, लय, तुक, ताल, धुन एवं लटकों-झटकों आदि को उनके मूल स्वरूप में बनाए रखने के लिए समाजोपयोगी सिद्ध होगा।

विश्वास है कि कलाकार-द्वय की यह सुष्ठु एवं सुन्दर रचना लोक एवं शिष्ट समाज के लिए बड़ी उपादेय कृति सिद्ध होगी।

-डॉ. पीयूष गुलेरी
सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रोफ़ैसर,
अपर्णा-श्री, हाऊसिंग कॉलोनी, धर्मशाला

अतीत व वर्तमान के बीच सेतु

'लोकभाव स्वरांजली' जन्मलोक गीतों का स्वरांकन, भावानुवाद व विश्लेषण लेखन प्रो0 चन्द्ररेखा ढडवाल व श्री जनमेजय सिंह गुलेरिया की टंकित पाण्डूलिपि पढ़ने का अवसर मिला। जो मेरे लिए अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है। आशा है जब यह प्रकाशन पाठक जगत के पास पहुंचेगा, निश्चित रूप से समादरित होगा तथा इसे पर्याप्त सराहना मिलेगी। यह संग्रह शोधार्थियों के लिए विशेष उपयोगी होगा तथा उनका मार्गदर्शन करेगा। यह पुस्तक ऐसी संभावनाओं के बीज भी रोपेगी जिससे इस दिशा में शोध प्रकाशन निरन्तर बना रहेगा तथा आगे बढ़ेगा ..... इस दिशा में मेरा गीतों का संग्रह जिसमें 117 गीत हिन्दी अनुवाद सहित छपे हैं, सन 1972 में छपा था। यह पुस्तक अनेक शोधार्थियों के लिए आधारभूत मानक पुस्तक रही है। क्योंकि लोक गायन संपदा के संग्रह, संपादन व प्रकाशन की दिशा में यह पहला प्रकाशन था। इस लोक गायन परंपरा शैली को जीवंत रखने के लिए शब्द-रूपों से अधिक महत्व गायन शैली का होता है। मुझे कांगड़ा लोक साहित्य परिषद के निदेशन में संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली से जन्म लोक गीतों के स्वरांकन का वीडियो दस्तावेजीकरण रूप में करने की परियोजना मिली (सन 2010-2011 में) उसी समय संगीत विशेषज्ञ के रूप में श्री जनमेजय सिंह गुलेरिया मुझे मिले। संगीत को समर्पित, शिष्ट व सांस्कृतिक व्यक्तित्व से सम्पन्न जनमेजय के सहयोग से हमारा सांझा प्रयास काफी सफल रहा। प्रो0 चन्द्ररेखा ढडवाल ने परोक्ष कथा शीर्षक के अन्तर्गत गीतों के विश्लेषणात्मक वर्णन से जो पूर्व पीठिका संवारी है तथा चौरासी गीतों का हिन्दी में अनुवाद किया है, उसके लिए वह विशेष सम्मान की पात्र हैं। मेरी शुभकामना है कि गीतों के स्वरांकन, अनुवाद व समीक्षा से सम्बद्ध यह पुस्तक सीधे पाठकों तक पहुंचे। अतीत को वर्तमान के लिए किस तरह उपयोगी व सहज सम्प्रेषणीय बनाया जाए, विशेषकर लोक-गीत परम्परा को, उस दिशा में ऐसे प्रयास व संबोधन निश्चित रूप से कारगर सिद्ध होते हैं।

मेरी शुभकामनाएं।

- डॉ. गौतम शर्मा व्यथित

सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रोफ़ैसर,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, धर्मशाला।
नंदन कुटीर, गांव नेरटी, शाहपुर (कांगड़ा)

लोक संगीत - उपादेय एवं संजीवनी

'लोकभाव स्वरांजली' जनमेजय सिंह गुलेरिया एवं चन्द्ररेखा ढडवाल द्वारा कांगड़ा जनपद के जन्मगीतों के विश्लेषण, भावार्थ एवं स्वरांकन को लेकर एक मौलिक पुस्तक हिमाचली पाठकों को भेंट की गई है। लोकगीत किसी भी प्रदेश की सांस्कृतिक थाती होते हैं। इनमें हमारा जनपद बोलता है, हँसता-गाता और नानाविध अठखेलियां करता है। लोक साहित्य सदियों से मानव के लिए उपादेय एवं संजीवनी का कार्य करता रहा है। लोक-साहित्य किसी भी समाज की अस्मिता का प्रतीक होता है। मनुष्य का संपूर्ण जीवन वैसे भी जन्म से लेकर मृत्यु तक संस्कारों पर आधारित हैं। यह हमारे संस्कार ही हैं जिन्हें हम आजीवन ओढ़े एवं पहने रखते हैं। ये तथाकथित सभ्य समाज को दर्पण भी दिखाते हैं।

लोक संस्कृति हमारी ऐसी धरोहर है जो बदलते समय के साथ खतरों से जूझ रही है। इसका रूप स्वरुप बिगाड़ने की साजिशें चौतरफ़ा रची जा रही है। इस अनमोल सांस्कृतिक धरोहर को बचाने का कार्य भी वर्तमान पीढ़ी का है। यह प्रसन्नता की बात है कि कांगड़ा जनपद के जन्मगीतों का संकलन, चयन, संपादन, विश्लेषण एवं स्वरांकन जनमेजय गुलेरिया और चन्द्र रेखा ढडवाल ने किया है - उन्हें बहुत-बहुत बधाई। पुस्तकाकार में ये जन्मगीत सुरक्षित तो रहेंगे ही साथ ही इन्हें गाए जाने की पुरानी तकनीक 'भाख' भी मिलेगी। जन्मगीतों के प्राय: सब रूप इस पुस्तक में उपलब्ध हैं। हिन्दी भावार्थ देने से ये हिमाचली जन्मगीत पूरे देशवासियों को आनंद उठाने में सुगम हो गए हैं।

- डॉ. प्रत्यूष गुलेरी
सदस्य साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली,
कीर्ति कुसुम, सरस्वती नगर, धर्मशाला (हि.प्र.)

कला उपासकों की सराहनीय कृति

'लोकभाव स्वरांजली', शीर्षक के अन्तर्गत प्रस्तुत संरचना जिसमें कांगड़ा जनपद के जन्म संस्कार गीतों का संकलन, स्वरांकन, भावानुवाद एवं समीक्षात्मक वर्णन, श्री जनमेजय सिंह गुलेरिया व प्रो. चन्द्ररेखा ढडवाल द्वारा किया गया है, निःसंदेह एक सराहनीय प्रयास है। श्री जनमेजय सिंह, उच्च शैक्षणिक योग्यता रखने के साथ-साथ परिश्रमी, मृदुभाषी, कर्त्तव्य-निष्ठ एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ तथ्यों का आंकलन करने वाले व्यक्तित्व के स्वामी हैं। वर्ष 2008 से 2010 में उन्होंने मेरे निर्देशन में ''कांगड़ा के जन्म गीतों की गायनशैली का संगीतात्मक अध्ययन'' शीर्षक के अन्तर्गत संगीत चूड़ामणि (पी.एच.डी.) उपाधि के लिए शोध प्रबन्ध लिखा। इन्होंने जन्म संस्कार गीतों के संकलन के साथ-साथ राग लक्षण-तत्त्वों के आधार पर 84 गीतों का संगीतात्मक विश्लेषण एवं मूल्यांकन कर उन्हें स्वरलिपिबद्ध किया है। जो भविष्य में शोधार्थियों, कला मर्मज्ञों एवं सुधी पाठकों के लिए महत्त्वपूर्ण साबित होगा। इसी क्रम में प्रो. चन्द्ररेखा ढडवाल के बहुप्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व में जहाँ एक ओर कवयित्री, कहानीकार, निबन्धकार एवं लोक संस्कृति विश्लेषिका का गुण झलकता है, वहीं दूसरी ओर वे ईश्वर प्रदत्त मधुर कंठ की स्वामिनी भी हैं। उन्होंने अपने व्यापक अनुभव के आधार पर जन्म संस्कार गीतों में वर्णित लोक नारी के मनोभावों को बड़ी ही सहजता एवं सूक्ष्मता से उकेरा है, जो शब्द और स्वर का आवरण ओढ़े उस काल-परिस्थिति का सहज दिग्दर्शन करवाने में सक्षम हुई हैं। इन दोनों कला उपासकों को उनकी इस अनुपम कृति के लिए दिल की गहराईयों से शुभकामना एवं साधुवाद देना चाहता हूं तथा प्रार्थना करता हूं कि यह पुस्तक अपने मूल रूप में सुरक्षित, संरक्षित एवं संवर्धित रहे तथा बदलते समय के प्रभाव में काल कवलित होने से बची रहे।

– डॉ. राजेन्द्र सिंह गुरूंग
सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रोफ़ैसर
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय धर्मशाला
137-श्यामनगर, धर्मशाला, जिला कांगड़ा

अनुपम प्रयास

श्री जनमेजय सिंह गुलेरिया व प्रो. चन्द्ररेखा ढडवाल द्वारा रचित ग्रन्थ लोकभाव स्वरांजली, गीतों के संकलन, स्वरांकन, भावानुवाद व विश्लेषण से जुड़ा एक अनुपम संग्रह है। कांगड़ा जनपद के जन्म लोक-गीतों के मोतियों को एकत्रित करके एक माला बनाने का प्रयास सराहनीय है। लोक· गीत तो सामान्यतः पुस्तकों में संकलित मिल जाते हैं। परन्तु उनका भावार्थ व स्वरलिपि भी मिल जाए, ऐसा प्रायः नहीं होता। जनमेजय को पिता से शैक्षणिक परिवेश मिला। पठन-पाठन की वृत्ति मिली जो इस पुस्तक की प्रेरक रही होगी। वह पिछले कई वर्षों से मेरे पास संगीत के विभिन्न आयामों की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। वे साधुवाद के पात्र हैं। संगीत कला की साधना में लगे गुलेरिया ने विविध पुरस्कार प्राप्त किए व छात्रों का भी सही निर्देशन किया है। पुस्तक में कुल चौरासी लोकगीतों का समावेश किया गया है। इन गीतों पर अधिकांशतः पीलू, पहाड़ी, मालकौंस, भैरवी, भूपाली, बिहाग, देस, तिलक कामोद, झिंझोटी, मालगुंजी, वृन्दाबनी सारंग, मधमाद सारंग रागों का प्रभाव है। यही वे राग हैं जो लोक-गीतों को सहजता प्रदान करते हैं। शास्त्रीय स्वरूप में यही राग तदन्तर परिष्कृत हुए।

कवि व कथाकार प्रो. चन्द्ररेखा ढडवाल ने लोक साहित्य के क्षेत्र में भी कार्य किया है। यही कारण है कि उन्होंने गीतों का मार्मिक अनुवाद किया है। परोक्ष कथा शीर्षक के अन्तर्गत जन्म गीतों के विषय की समीक्षा की है तथा उनके भीतरी अर्थ-सत्य को सामने रखा है। भावार्थ जानने के कारण लोकगीत गायन में भावों की सहज उत्पत्ति, गायन को अत्यन्त मधुर बनाने में सहायक रही है। इन लोक गीतों का विश्लेषणात्मक वर्णन अत्यन्त सराहनीय है। उन्हें मेरी शुभकामनाएं। जनमेजय को शुभ आशीष। संगीतकार व साहित्यकार की रचनात्मकता में प्रभु सतत् वृद्धि करें।

डॉ. सौभाग्य वद्र्धन 'बृहस्पति'।
प्रोफ़ैसर
विभागाध्यक्ष, राजकीय कन्या महाविद्यालय,
सैक्टर – 42 चण्डीगढ़

सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण-एक अनोखा प्रयास

राष्ट्रीय कला व संस्कृति धरोहर न्यास की स्थापना सन् 1984 में हुई। स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की अध्यक्षता में निर्मित इस संस्था का उद्देश्य देश की सांस्कृतिक धरोहर के प्रति दायित्व भाव को समझते व समझाते हुए इसके संरक्षण के लिए अनुप्रेरित होना है। सन् 1984 से आज तक अपनी प्राकृतिक व सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध यह संस्था अत्यन्त प्रभावी है। इसका मूल लक्ष्य लोगों में भारत की विविध व बहुआयामी संस्कृति के प्रति भाव-बोध पैदा करना है। राष्ट्रीय धरोहर का संरक्षण, सांस्कृतिक संसाधनों का दस्तावेज निर्माण, धरोहर सम्बन्धी सिद्धान्त व नियमावली, सम्बद्ध व्यवसायों मे प्रतिभा विकास हेतु कार्यों के प्रति यह संस्था समर्पित है। उदारवादी बाज़ार के प्रसार व तथाकथित प्रभामंडल में सांस्कृतिक विविधता को बनाए रखने के लिए धरोहर संरक्षण व संवर्धन महत्वपूर्ण दायित्व है। यह धरोहर पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते हुए लोक द्वारा प्रचारित-प्रसारित व पुनरजीवित होती है। .... कांगड़ा के जन्मगीतों के संकलन, स्वरांकन, भावानुवाद तथा समीक्षात्मक वर्णन से सम्बद्ध पुस्तक - लोकभाव स्वरांजली, संगीतज्ञ जनमेजय सिंह गुलेरिया तथा साहित्यकार प्रो. चन्द्ररेखा ढडवाल का सम्मिलित प्रयास है। जो लोक-साहित्य के पुनरपाठ से भविष्य को अतीत से जोड़ने की सफल चेष्टा है। यह पुस्तक लोक गीतों से सम्बन्धित शोध कार्य में लगे छात्रों के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। लोक संस्कृति के संरक्षण को समर्पित हमारी संस्था के लिए, 'लोकभाव स्वरांजली' पुस्तक का प्रकाशन एक उपलब्धि है।

- लक्ष्मी नारायण अग्रवाल
संयोजक कांगड़ा चैपटर (इटैक)
धर्मशाला, जिला कांगड़ा

जन्मगीत . . .

परोक्ष कथा (कथ्य विश्लेषण)

किसी स्थान विशेष की पहचान उन संस्कारों से होती है। जिनका निवर्हन वहां रहने वाले, स्वतास्फूर्त अन्तरप्रेरणा से करते हैं। इन संस्कारों का सर्वमान्य, समग्र व संग्रहीभूत रूप उस जन-पद की संस्कृति है। यह संस्कृति बाहरी विधि-विधान से संचित व प्रचारित नहीं होती। लोक मानस की सहज अभिव्यक्तियां इसका स्त्रोत हैं। जो गेय कवितावलियों में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तान्तरित हो रही हैं। सतत चल रहा यह क्रम लोक चेतना को जीवंत बनाए रखता है। परन्तु आधुनिकता के भ्रामक मोह में हमारा मौलिक स्वरूप हमसे विलग रहा है। नया इस तरह और इतना चमत्कृत कर रहा है कि हम समझ ही नहीं पा रहे हैं कि हमसे हमारा क्या छूटता जा रहा है। अपने अतीत से जुदा होना, धुरी विहीन होते जाने का भयावह अभिशाप है। जिसे स्वेच्छा से ग्रहण करने की प्रक्रिया में हैं हम। वास्तव में किसी भी समाज का लोक साहित्य उस समाज की अस्मिता का केन्द्र बिन्दू है। पथ भी है और पथप्रदर्शक भी। क्योंकि लोक का सत्य यदि इसमें है तो उसके स्वप्न भी इसी में है।

जन्म से मृत्यु तक जीवन, संस्कारों में बद्ध है और इन संस्कारों का सैद्धान्तिक दस्तावेज़ है लोकगीत। परिवेश के प्रतिकूल व ओढ़ी हुई संस्कृति के प्रभाव का खतरा तब उतना नहीं होता जब अपने परिवेश का वास्तविक स्वरूप, मन-अन्तर के किसी कोने में ही सही, अपनी निश्चित व स्थायी जगह बनाए बैठा हो। परन्तु यह जगह भाषण व नारों से नहीं बनती। उग्र व हिंसात्मक प्रतिबन्धों से भी नहीं। आन्तरिक प्रेरणा से ही संभव है यह और प्रेरक है मिट्टी की बहुत अपनी सी, सौंधी-सौंधी गन्ध में रचा-रमा लोक साहित्य। जो आसमान की ओर बाहें फैलाए आदमी को ज़मीन देता है। अति आधुनिकता के मोह में नए की ओर भागती चेतना को ठहराव देता है। ..... यद्यपि इन दिनों लोक-साहित्य के प्रति रूझान कुछ ज़्यादा ही हो रहा है। परन्तु लोक-संस्कृति, लोक को जोड़ने का नहीं, तोड़ने का हथकण्डा बनाई जा रही है। आन्दोलनों व नारों में भुनाई जा रही है। अस्मिता के प्रश्न के अन्तर्गत, कभी सांस्कृतिक प्रदूषण के सन्दर्भ में तो कभी स्वधर्म के नाम पर। एक दृष्टि, लोक संस्कृति को एक

अजूबे की तरह देखते, बैठक में मृत्त सजावटी चीज़ की तरह संजोकर रखने की ही चीज़ समझती है। इसीलिए राजनीतिज्ञों, साहित्यकारों, सिनेमा जगत के गीतकारों व संगीतकारों की जरूरत तो यह बन रही है। परन्तु हमारे आचार-व्यवहार को नियन्त्रित नहीं कर पा रही। सारी चर्चाओं और झगड़ों के बावजूद इसका दर्जा पर्व-त्यौहारों पर झांकी-प्रदर्शन जितना ही है आज भी।

विडम्बना देखिए कि वर्तमान समय में लोक-साहित्य में से मणि-मुक्ता खंगालने का कार्य व्यक्ति स्तर पर ही नहीं, संस्था व राज-सत्ता के स्तर पर भी बहुत ज़्यादा हो रहा है। और आज के ही समय में हम व्यवहार के पैमाने पर इससे बहुत-बहुत दूर भी हो रहे हैं। कारण यह है कि लोक-साहित्य की सच्चाइयां सहज धर्म नहीं बन पा रहीं। क्योंकि कोशिशों के पीछे कहीं आकर्षण, कहीं मन बहलाव तो कहीं धूर्त स्वार्थ है। हमने अपने लोक साहित्य को अवकाश के क्षणों का पाहुन और अतीत के प्रति दायित्व भाव का उपक्रम मात्र बनाया है। इसमें वह नहीं ढूंढना चाहा जो जीवन को दिशा दे। अपनी ज़मीन पर खड़ा करके सम्बद्ध जाति-समुदाय का विधान बने। इसके प्रति प्रचलित दोनों ही दृष्टिकोण, अति भावुक होकर आग्रही होना या पूर्णतया उदासीन हो रहना, सही नहीं हैं। ज़रूरत है लोक-साहित्य का वैचारित विश्लेषण, आधुनिक सन्दर्भों में, आज के प्रश्नों को समक्ष रख कर किया जाए और उसके अन्तर्सत्य में निहित मानव मूल्यों को पहचाना जाए।

जन्मगीत, शिशु जन्म व जन्मदिवस के आयोजन के अवसर पर आनन्दतिरेक का प्रकटीकरण हैं। यह आनन्द बोध स्वयं में विविध आयाम लिए हुए हैं। अत्यन्त महत्वपूर्ण तथ्य ईश्वर के प्रति आभार व्यक्त करना है। जो मिट्टी से, कुलदेवी की प्रतिमा बना कर उसकी प्रतिष्ठा व पूजा अर्चना में प्रकट होता है। इसे भ्याई देवी, कह कर सम्बोधित करते हुए घर-परिवार तथा आस-पड़ोस की स्त्रियां फूल, अक्षत, धूप, दीप व नैवेद्य से की जाने वाली आराधना पद्धति को सुर-ताल में गाती हैं। विभोर होकर गातीं हुईं ये लोक नारियां सहज ही सन्यासियों के अध्यात्म को छू लेती हैं। वे इस समय नवजात शिशु के स्वास्थ्य व दीर्घायु की कामना के साथ ही अपने-अपने आत्मजों के लिए भी प्रार्थनारत होती हैं। ..... इन गीतों में हृदय की उदारता का कोई ओर छोर नहीं रह जाता। परिवार की परिधि में शिशु के मां-पिता व दादा-दादी के

अतिरिक्त पिता के भाई बहन तथा मां के भाई-बहन सब सिमट आते हैं। खुशियां सांझा करने की चेष्टा में उदार चित्त लोक-मानस अत्यन्त भव्य दिखाई पड़ता है। घर में सास या जेठानी से कोई मान मनोबल चल भी रहा है पर शिशु की मां परस्पर स्नेह सम्बन्धों के प्रति आश्वस्त है कि वे पुत्र जन्म की शुभ सूचना सुनते ही दौड़ी चली आएंगी।

शिशु जन्म पर वह चाहती है कि उसके मायके की भी उपस्थिति हो। कभी पति से उन्हें बुला लेने का आग्रह तो कभी कागा द्वारा सन्देश देने का प्रयास करती है। ससुराल व मायके का तुलनात्मक मूल्यांकन भी कुछ गीतों में है। जन्मगीत, शिशु जन्म के पूर्व से आरम्भ हो जाते हैं। इनमें मां बनने जा रही युवती के कायिक व मानसिक भावों-अनुभवों का सजीव चित्रण है। ये गीत बहुत महत्वपूर्ण तथ्य रेखांकित करते हैं। इस समय युवती स्वयं को बहुत विशेष अनुभव करती है। इससे पूर्व वह कभी भी परिवार के केन्द्र में नहीं रही। परन्तु आज सारा घर उसी की रीझों को पूरा करने में लगा है। ऐसे में वह कभी इस तो कभी उस वस्तु के लिए शिशु सुलभ हठ करती है। मां बनना कितना बड़ा गौरव है यह सत्य, गीत स्पष्ट कर देते हैं। इन्हीं को सुनते और गाते हुए स्त्री स्वयं को एक बनी बनाई राह पर डाल देती है। विशेष बात इन जन्म गीतों की यह है कि इनमें पुत्र की मां बनने की ही कामना की गई है। इसलिए सम्मान मिलेगा क्योंकि वह वंश वृद्धि का माध्यम बनेगी। एक स्त्री ही मां बनेगी, इस तथ्य को नकार कर, शिशु रूप में केवल और केवल पुत्र की इच्छा, यद्यपि स्त्री कर रही है, परन्तु वास्तव में यह पुरूष वर्चस्व का परोक्ष रेखांकन है। नारी को अपने मनोनीत सांचे में ढाल देने की सिद्धहस्त कला है। ...... अधिकांश गीतों में विभिन्न पेड़-पौधों का वर्णन है। पर्यावरण यहां चिन्ता या चिन्तन नहीं है बल्कि जीवन का अभिन्न अंग है। जीवन का स्वभाव है। हरियाए पेड़-पौधे, हरी दूब, पानी से भरे कलश, कुंआ, पनघट व चान्दनी, गीतों की शब्दावली में ही नहीं निहितार्थ में भी उपस्थित है ..... सन्त कवियों का प्रभाव लोक मानस को अभिभूत करता रहा है। तुलसीदास तथा सूरदास का वात्सल्य रस केन्द्र में है। विशेषतया सूरदास के पद्यांश प्रतिध्वनित हैं इन गीतों में। शिशु की कल्पना कृष्ण के रूप में की गई है। उन्हीं की तरह सुन्दर सलोना व नटखट रूप हर मां अपने बच्चे पर रूपायित करती है। वात्सल्य रस के पर्यायी सूरदास, कांगड़ा जनपदीय

जन्मगीतों के उपजीव्य हैं। कृष्ण जन्म की कथा अपनी-अपनी भाषा तथा मुहावरे में कहने का सफल प्रयास हुआ है। ..... बधाई गीतों में दान-दक्षिणा का वर्णन है। जो अपेक्षाकृत अभावग्रस्त लोगों की सहायता करने की प्रथा का प्रचार-प्रसार है। .... हास-परिहास के अन्तर्गत ननद व भाभी के बीच सटीक व मनोरंजक संवाद हैं। भाई के घर पुत्र जन्म की खुशी में ननद सोने के कंगन या शीश फूल (फुलझड़ियां) मांगती है, भेंट स्वरूप। भाभी नहीं देना चाहती क्योंकि ये उपहार उसे बाबुल से मिले हैं। ननद रूठ जाती है। पर अन्ततः नवजात शिशु की मां कंगन व फुलझड़ियां दे देती है। बेटी सदैव मायके पर अपना अधिकार मानती है पर इसमें एक दूसरे घर की बेटी अनावश्यक दवाब सहने को विवश होती है। परन्तु अपनी ससुराल में स्त्री को सहनशील व विनम्र ही रहना है। भले ही वह कुलदीपक की गौरवमयी मां है।

रिश्तों के सन्दर्भ में ही नहीं स्थान के सन्दर्भ में भी इन गीतों का फ़लक दूर तक फैला है। बच्चे का पालना दादा रावल पिण्डी से लाते हैं तो मां के कहने पर बेटे के लिए झुनझुना पिता लाहौर से मंगवाते हैं। वर्तमान समय में ये शहर दूर हैं। मीलों की ही नहीं, भावनाओं की भी दूरियां हैं। पर गीतों में बहुत निकट के हाट-बाजार हैं जैसे। ..... कथ्य व धुनों में साम्य है। परन्तु भाषा की दृष्टि से पचास-पच्चपन मील की दूरी पर अन्तर आ जाता है। कांगड़ा पंजाब का हिस्सा रहा है। इसलिए पंजाबी का असर भी दिखाई देता है। विशेष रूप से देहरा, चिन्तपुरनी, ऊना के जन्मगीत ज्यादा प्रभावित हुए हैं। बैजनाथ, पालमपुर व धर्मशाला के बोलों में पहाड़ों की रूनझुन व धैर्य दोनों हैं।

ये जन्मगीत कांगड़ा जनपद की सतत संचित धरोहर है। आवश्यकता है आज की भाषा व मुहावरों में इनकी प्रसंगिकता व महत्त्व को आधुनिक पीढ़ी के समक्ष रखना। ताकि उनका सहज रूझान इसकी ओर हो। हमारी सांस्कृतिक धरोहर भी बचे और आने वाली पीढ़ी ज्ञान व भाव सम्पन्न भी हो सके।

- चन्द्ररेखा ढडवाल

जन्मगीतों का संगीतात्मक पक्ष

परिवर्तन प्रकृति का सहज धर्म है। केवल बाहरी स्तर पर ही नहीं, हृदय के स्तर पर भी बदलाव आते हैं। परन्तु कभी-कभी बदलाव की हवा अति तेज़ होकर, जीवन के लिए बहुत ज़रूरी चीज़ों को भी, उड़ा ले जाती है। दादी व नानी के मुख से सुनी सरल तथा मधुर लोक-धुनें तथाकथित आधुनिक व ऊंचे संगीत में गुम होती जा रही हैं। यद्यपि इन धुनों में ऐसी सरसता व ठहराव है। जिससे मन को शान्ति मिलती है। आज की भागती हुई पीढ़ी को किसी दिन यह भूला-बिसरा संगीत याद आएगा ही। इसी उम्मीद में इन धुनों को संजोने का प्रयास किया है। इस सम्बन्ध में पहली कोशिश जन्मगीतों को लेकर की गई है। कांगड़ा जनपद के जन्मगीत यथासंभव मौलिक स्वरूप में संकलित हैं। इनका हिन्दी अनुवाद, विशलेषणात्मक अध्ययन तथा स्वरांकन इस पुस्तक में है। ताकि कभी भी इन्हें इनके उसी मौलिक स्वरूप में गाया व समझा जा सके। स्थान-स्थान से जन्मगीत एकत्रित किए गए हैं। प्रसवपूर्व गाए जाने वाले गीत, जिनमें गर्भावस्था के हाव-भाव अभिव्यक्त होते हैं, सूहड़ियां कहलाते हैं। जन्म के अवसर पर गाए जाने वाले गीत अर्थात सोहर, कुलदेवी की मूर्ति बना कर पूजा प्रतिष्ठा सम्बन्धी ध्याई गीत और नवजात के परिजनों को बधाई सम्प्रेषित करते बधावे इसमें संकलित हैं ..... ये गीत सामान्यता ऐसी महिलाओं द्वारा गाए जाते हैं, जिन्होंने विधिवत, संगीत की शिक्षा प्राप्त नहीं की होती। परन्तु धुनें अत्यंत मधुर व कर्णप्रिय हैं। अधिकांश गीतों में तो राग-रागनियां सहज ही ध्वन्ति हुई हैं।

अधिकतर चार अथवा पाँच स्वरों वाले अद्‌र्धसप्तकीय गीत प्राप्त हुए हैं। ऐसे में गीतों का सप्तक, थाट, राग, जाति, वर्जित, स्वर, आरोह, अवरोह, पकड़ आदि स्पष्ट करना थोड़ा कठिन रहा है। कई जन्मगीतों का स्वरांकन इतना मिश्रित तथा कलिष्ठ है कि कोई एक राग या थाट का प्रभाव नहीं कहा जा सकता। लोकसंगीत भावना प्रधान होता है। यह संगीत शास्त्रीय संगीत के नियमों

से दूर आकाश में उड़ते पक्षी की उस चहचहाट के समान है। जिसमें लय व माधुर्य तो है पर कोई बन्धन नहीं। परन्तु शास्त्रीय संगीत के नियमों के आधार पर विश्लेषणात्मक अध्ययन किए बिना इन लोकगीतों का संगीतात्मक पक्ष दिखाना सम्भव भी नहीं है। क्योंकि पृष्ठभूमि में अपनी अनगढ़ता में ही सही, शास्त्रीय संगीत लोक संगीत में विद्यमान है। यह कहना भी संगत है कि शास्त्रीय संगीत का मूल आधार लोकसंगीत ही होता है। इसलिए संगीतात्मक विश्लेषण के मुख्य तत्वों के आधार पर इन लोक (जन्म) गीतों का स्वरांकन किया गया है। क्योंकि गीतों का तब तक कोई अर्थ नहीं रह जाता जब तक कि इनकी ध्वनियों को स्वरलिपियों में न बांधा जाए अथवा इनकी धुने तैयार न की जाएं। तभी तो इस संगीतात्मक परम्परा का प्रचार-प्रसार सम्भव है।

इन जन्मगीतों में अधिकतर काफ़ी, पीलू, पहाड़ी, मालकौंस, भैरवी, भूपाली, विहाग, देस, देशकार, तिलक कामोद, झिंझोटी, मालगुंजी, वृन्दावनी, सारंग व मधमाद सारंग आदि रागों के समान स्वर मिले हैं। कई गीतों के संगीत पक्ष को उभारने में लोकनारियां शास्त्रीय संगीत के सुर व ताल से अनभिज्ञ होते हुए भी स्वाभाकि व अनायास ही कण, मीण्ड व अलंकरणों का प्रयोग कर लेती हैं। संगीत तत्व की दृष्टि सें जन्मगीतों का संगीत वैदिक प्रणाली का है। इनका स्वरूप अनुष्ठानिक होने के कारण स्वरों में स्थाई अधिक है। इन गीतों के स्वर तथा लय मुख्य तत्व हैं। यही छन्द के मुख्य आधार हैं। परन्तु स्वरूप में मौखिक होने के कारण इनके शब्द, स्वर तथा लय पीढ़ी दर पीढ़ी परिवर्तित होते रहते हैं।

जन्मगीतों को काँगड़ा की स्थानीय भाषा में काले़ महीने, सूहड़ियां, सोहर, हस्सणू-खेलणू, रूणझुणे, बधाइयां व भ्याइयां आदि की संज्ञा दी गई है। सूहड़ियों का संगीत भाव-प्रधान है। क्योंकि इनका मुख्य तत्व नारी मन की सुखद कल्पना है। भावुकता के आधिक्य से ये गीत भावावेश में आकर गाये जाते हैं। सोहर गीतों का संगीत अधिक मुखर होता है। आह्लाद की भावना से ओत-प्रोत ये गीत दैवी आनन्द का सृजन करते हैं। काले़ महीने व भ्याई गीतों का संगीत भक्तिभाव व अध्यात्मिकता से परिपूर्ण है। ये गीत शान्त रस से

ओतप्रोत हैं। एक तरफ शिशु की तुलना कृष्ण से की जाती है तो भ्याई गीतों में कुलदेवी को प्रतिष्ठित किया जाता है। बधाई गीतों में आनन्द के साथ-साथ थोड़ी छेड़-छाड़ भी की जाती है। इन गीतों का स्वर-स्वरूप कहीं-कहीं करूण रस से ओत-प्रोत हो जाता है। ज्यादातर गीतों में उल्लास, हर्ष, करूणा आदि की प्रधानता है। करूण गीतों में स्वर-विस्तार अधिक है। इन में मन्द्र सप्तक के स्वर अधिक प्रयुक्त हुए हैं।

लगभग सभी जन्मगीत, दीपचन्दी (स्थानीय भाषा में चांचर के नाम से जाना जाता है) व कहरवा की आठ मात्रा में लयबद्ध हैं। चौदह मात्राओं में रचित गीतों को अनिबद्ध रूप से गाने का प्रचलन है। जिससे स्थानीय भाषा में 'लम्बी भाख' अथवा लम्बे स्वरों वाले गीत कहते हैं। कई गीतों में एक समान स्वर, थाट, राग तथा जाति होने पर भी स्वर विशेष पर ठहराव, न्यास के स्वर, स्वर संगीत, कण, खटका, मीण्ड, मुर्की आदि अलंकरणों के कारण एक दूसरे से अलग मधुरता विद्यमान है। ये स्वर रचनाएं, राग, रस के सिद्धान्त के आधार पर रचित ना होने पर भी गीत के भाव, अवसर तथा समय की दृष्टि से पूर्णतया सटीक नज़र आते हैं।

नई सभ्यता तथा अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव से इन गीतों को गाने वालों का अभाव होता जा रहा है। यदि ये गीत विस्मृत हो गये और इनकी पारंपरिक व ऐतिहासिक उपयोगिता को न पहचाना गया तो निश्चित ही हम इस अमूल्य धरोहर को खो बैठेंगे। अतः समय पर इन गीतों को संकलित, सम्पादित तथा प्रकाशित करके लोकमानस के प्रति श्रद्धा भाव जगाकर इस परम्परा को बनाए रखना अति आवश्यक है। इन लोक (जन्म) गीतों को संग्रहित किया गया है। इस उद्देश्य ये इनकी साहित्यिक पक्ष की विवेचना हुई भी है। परन्तु इनके स्वरांकन का पर्याप्त प्रयास नहीं हो सका है। बहुत ज़रूरी है कि लोक-संस्कृति को समर्पित संस्थाएं इस ओर ध्यान दें। जिला व राज्य स्तरीय आयोजनों में विशेष रूप से इन गीतों को केन्द्र में रखते हुए युवाओं में प्रतियोगिताएं करवाई जाएं ताकि हमारी धरोहर संरक्षित व संवर्धित हो सके।

लगभग 12 वर्षों तक गणित के अध्यापन से सम्बद्ध रहने के बाद मुझे संगीत जैसे सहृदयी विषय से जुड़ने का सौभाग्य मिला। लोकसंगीत जैसी समृद्ध कला के संरक्षण एवं संवर्धन में मेरा यदि थोड़ा भी योगदान हुआ तो मैं अपने प्रयास को सार्थक मानूँगा।

अन्त में मैं स्वर्गीय माँ श्रीमती शकुन्तला गुलेरिया जी की स्मृतियों को नमन करता हूँ। पिता, श्री देस राज गुलेरिया जी के शुभाशीष एवं प्रोत्साहन के लिए सदैव ऋणी रहूँगा। पत्नी निशा गुलेरिया का सहयोग मेरा आत्मिक सम्बल है। मैं विशेष रूप से आभार प्रकट करना चाहूँगा प्रो. चन्द्ररेखा ढडवाल व प्रो. प्रकाश ढडवाल से मिले स्नेह सहयोग व मार्ग दर्शन के लिए। इस पुस्तक लेखन के दौरान इन दोनों से मेरा अद्भुत आत्मीय संबंध बना जिसे मैं अपनी उपलब्धि मानता हूं।

–जनमेजय सिंह गुलेरिया

बसंत पंचमी
24 जनवरी, 2015

1. किद्दर देसे ते आई भ्याई राणी

किद्दर देसे ते आई भ्याई राणी, किद्दर देसे जो जाणा
अज भ्याई राणी स्हाड़ैं जे आई ....
दख्खण देसे ते आई भ्याई राणी, पच्छम देसे जो जाणा
अज भ्याई राणी स्हाड़ैं जे आई ....
किन्ही भ्याई राणी सद्दी बुलाई, किन्ही घड़ी मन चित्त लाई
अज भ्याई राणी स्हाड़ैं जे आई ....
रामैं भ्याई राणी सद्दी बुलाई, सीता घड़ी मन चित्त लाई
अज भ्याई राणी स्हाड़ैं जे आई ....
किन्ही भ्याई राणी सद्दी बुलाई, किन्ही घड़ी मन चित्त लाई
बावैं भ्याई राणी सद्दी बुलाई, माइया घड़ी मन चित्त लाई
अज भ्याई राणी स्हाड़ैं जे आई ....

भावार्थ : शिशु जन्म के अवसर पर यह गीत कांगड़ा जनपद के लगभग हर क्षेत्र में गाया जाता है। वरदायिनी देवी की मिट्टी की मूरत घड़ी जाती है। जिसे भ्याई रानी कहा जाता है। यह कुल देवी की प्रतीक है। गीत प्रारम्भ होता है कि भ्याई रानी कौन से देश से आई है तथा कहां जाएगी। प्रश्न व उत्तर से क्रमशः गीत उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। भ्याई रानी दक्षिण देश से आई है और पश्चिम देश की ओर जाएगी। आज भ्याई रानी हमारे घर आई है। फिर प्रश्न कि किसने भ्याई रानी को आमंत्रित किया है और किसने मन-चित्त लगा कर इसे घड़ा है। उत्तर यह कि रामचन्द्र ने आमंत्रण दिया और सीता ने मनोयोग से इसे घड़ा। इसके बाद शिशु के परिजनों के नाम से गीत आगे बढ़ता है। दादा ने बुलाया और दादी ने मूर्त घड़ी। पिता ने बुलाया और मां ने मिट्टी से भ्याई रानी को रूपाकार दिया। इसी तरह अन्य सम्बन्धियों को शुभ अवसर पर सम्मान स्नेह दिया जाता है। उन्हें इस अनुष्ठान में सम्मिलित करके बच्चे की दीर्घायु तथा सुख-स्वास्थ्य के लिए भ्याई देवी की श्रद्धापूर्वक पूजा अर्चना की जाती है।

स्वर लिपी :-

			2				0			3			
प़	–	–	ध़	प	ध़	सा	सा	–	–	सा	–	ध़	–
कि	–	–	द्	द	र	ऽ	दे	ऽ	ऽ	से	ऽ	ते	ऽ
सा	–	रे	ग	सा	सा	–	$^{\text{ग}}$रे	–	सा	सा	–	–	–
आ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	[illegible]	ऽ	या	ऽ	ई	रा	ऽ	णी	ऽ
ग	–	–	ग	–	$^{\text{प}}$म	–	ग	–	रे	रे	सा	सा	–
कि	ऽ	ऽ	द्	द	र	ऽ	दे	ऽ	ऽ	से	ऽ	जो	ऽ
रे	–	–	सा	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
जा	ऽ	ऽ	णा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प़	–	–	ध़	सा	–	–	ध़	–	–	$^{\text{प}}$म़	–	–	–
अ	ऽ	ऽ	ज	ऽ	[illegible]	ऽ	या	ऽ	ई	रा	ऽ	णी	ऽ
प़–	–	–	ध़	सा	–	–	$^{\text{ग}}$रे	–	सा	सा	–	–	–
स्हा	ऽ	ऽ	ड़ैं	ऽ	जे	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ

प्रस्तुत गीत में केवल स्थाई है। गीत की अन्य पंक्तियां इन्हीं स्वरों पर गाई जाएंगी।

2. अज भ्याई राणी स्हाड़ैं जे आई

अज भ्याई राणी स्हाड़ैं जे आई
करी लैंणी भ्याइयां दी पूजा
अज भ्याई राणी स्हाड़ैं जे आई
देसां तां देसां ते परोहत सदान्दी
करी लैणी भ्याइयां दी पूजा
अज भ्याई राणी स्हाड़ैं जे आई
देसां तां देसां ते फुल मंगान्दी
करी लैणी भ्याइयां दी पूजा
अज भ्याई राणी स्हाड़ैं जे आई
देसां तां देसां ते धूप मंगान्दी
करी लैणी भ्याइयां दी पूजा
अज भ्याई राणी स्हाड़ैं जे आई
देसां तां देसां ते द्रूब मंगान्दी
करी लैणी भ्याइयां दी पूजा
अज भ्याई राणी स्हाड़ैं जे आई

भावार्थ : इस गीत में कुलदेवी की प्रतीक रूप, माटी से घड़ी गई भ्याई मां की विधि विधान से पूजा-अर्चना का वर्णन है। नवजात की मां प्रसन्नतापूर्वक कहती है कि आज हमारे घर मां पधारी हैं। हम उनकी पूजा करेंगे ताकि उनका आशीर्वाद हमारे घर परिवार पर रहे। विशेष रूप से मेरे पुत्र को उनका वरदान प्राप्त हो। दूर-दूर से मैं पुरोहित बुलाती हूँ, विधिवत देवी की पूजा के लिए। मैं दूर-दूर के देशों से फूल मंगाती हूं, देवी की वन्दना के लिए। इसी क्रम में धूप तथा दूब्र मंगवाने की बात कही गई है। भ्याई मां के प्रति श्रद्धा का भाव प्रकट हुआ है।

स्वर लिपी :-

			2				0			3			
प़	–	–	ध़	सा	सा	ध़	ध़	–	म़	म़	–	म़	–
अ	ऽ	ऽ	ज	ऽ	ꣻ	या	ई	ऽ	ऽ	रा	ऽ	णी	ऽ
प़-	–	–	ध़	सा	सा	–	(ग)रे	–	सा	सा	–	–	–
स्हा	ऽ	ऽ	ड़ैं	ऽ	जे	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	–	ग	–	(प)म	–	ग	–	रे	रे	सा	सा	–
क	री	ऽ	लै	ऽ	णी	ऽ	ꣻ	या	इ	यां	ऽ	दी	ऽ
रे	–	–	सा	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
घू	ऽ	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प़	–	–	ध़	सा	–	–	ध़	–	–	(प)म़	–	–	–
अ	ऽ	ऽ	ज	ऽ	ꣻ	ऽ	या	ऽ	ई	रा	ऽ	णी	ऽ
प़-	–	–	ध़	सा	–	–	(ग)रे	–	सा	सा	–	–	–
स्हा	ऽ	ऽ	ड़ैं	ऽ	जे	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ

प्रस्तुत गीत में केवल स्थाई ही स्वरबद्ध है। गीत की अन्य पंक्तियां इन्हीं स्वरों पर गाई जाएंगी।

3. चरखा बड़ा घूमेदार

चरखा बड़ा घूमेदार नीं ओ सइयो, चरखा बड़ा घूमेदार ।
चरखा कतां कि मैं बालके खलावां, चरखा बड़ा घूमेदार।
काले़ महीने दियां न्हेरियां रातीं, जन्मेया कृष्ण मुरार नीं ओ सइयो,
जन्मेया कृष्ण मुरार, चरखा कतां कि मैं बालके खलावां, चरखा बड़ा घूमेदार।

जां जम्मेया तां दीपक बले़आ, चौंई पासैं होएआ उजास नी ओ सइयो,
चरखा कतां कि मैं बालके खलावां, चरखा बड़ा घूमेदार।
टुटी गे न जन्दरे खुली गेइयां कारां, प्रगटेआ विष्णु औतार नी ओ सइयो,
प्रगटेआ विष्णु औतार, चरखा कतां कि मैं बालके खलावां, चरखा बड़ा घूमेदार।

अग्गे अग्गे बसूदेव पिच्छे पिच्छे जमना, नदिया च आएआ उफ़ाण नी ओ सइयो,
नदिया च आएआ उफ़ाण, चरखा कतां कि मैं बालके खलावां, चरखा बड़ा घूमेदार।
बाल्लैं कन्हाइऐं पैर डुबाया, लहरां तां होइआं न शान्त नी ओ सइयो,
लहरां ता होइआं न शान्त, चरखा कतां कि मैं बालके खलावां, चरखा बड़ा घूमेदार।

बृज दिआं नारा गाया बदौआ, जसुदा दिया गोदिया लाल नी ओ सइयो,
जसुदा दिया गोदिया लाल, चरखा कतां कि मैं बालके खलावां, चरखा बड़ा घूमेदार।
पन्न पतासा मैं गुड़ सक्कर दिन्नी ऑं, शगणा दी हरी हरी दाख नी ओ सइयो,
शगणा दी हरी हरी दाख, चरखा कतां कि मैं बालके खलावां, चरखा बड़ा घूमेदार।

भावार्थ : जन्म गीतों में इस गीत का विशेष महत्त्व है। मूल गीत के कुछ अन्तरे विभिन्न मुखड़ों के अन्तर्गत गाए जाते हैं। नवजात शिशु को कृष्ण-रूप में देखने की परम्परा के पीछे कृष्ण की बाल लीलाओं का विशेष योगदान है। इस गीत में देवकी के पुत्र जन्म से लेकर नन्द-यशोदा के घर पहुंच जाने तक का वर्णन है। यह कथात्मक गीत है अतः अत्यन्त लोकप्रिय व प्रचलित है। नवजात शिशु की मां कहती है कि मैं चरखा कातूं या बच्चे को सम्भालू, चरखे के प्रति भी लगाव है क्योंकि वह बहुत तीव्र गति से घूमता है। काले महीने की अंधेरी रात में कृष्ण ने जन्म लिया। उनके जन्म लेते ही मानों दीपक प्रज्ज्वलित हो उठा। चारों ओर उजास फैल गया। कंस की कारावास के ताले टूट गए और द्वार खुल गए। विष्णु ने अवतार लिया। वासुदेव कृष्ण को लेकर जमुना पार नन्द के गांव

स्वर लिपी :-

ग			२				०			३			
सा	रे	सा	नि़	सा	नी़	–	सा	–	–	रे	सा	रे	प
च	र	ऽ	खा	ऽ	ब	ऽ	ड़ा	ऽ	ऽ	घू	ऽ	मे	ऽ
म	–	–	–	–	–	प	म	–	ग	रे	–	सा	–
दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	नीं	ऽ	ओ	स	इ	यो	ऽ
सा	रे	सा	नि़	सा	नी़	–	सा	–	–	रे	सा	रे	प
च	र	ऽ	खा	ऽ	ब	ऽ	ड़ा	ऽ	ऽ	घू	ऽ	मे	ऽ
म	–	–	–	–	–	–	म	–	–	–	–	–	–
दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–	रे	सा	रे	म	म	–	–	म	–	रे	–
च	र	ऽ	खा	ऽ	क	ऽ	तां	ऽ	ऽ	कि	ऽ	मैं	ऽ
म	प	–	प	ध	ध	म	प	–	–	म	–	–	–
बा	ऽ	ल़	के	ऽ	ख	ऽ	ला	ऽ	ऽ	वां	ऽ	ऽ	ऽ
सा	रे	सा	नि़	सा	नी़	–	सा	–	–	रे	सा	रे	प
च	र	ऽ	खा	ऽ	ब	ऽ	ड़ा	ऽ	ऽ	घू	ऽ	मे	ऽ
म	–	–	–	–	–	–	म	–	–	–	–	–	–
दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

गीत के अन्य बोल भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाए जाएंगे।

की ओर चले तो नदी में तूफान आ गया। वास्तव में लहरें श्री कृष्ण के चरण स्पर्श करना चाहती थीं। कान्हा ने पांव पानी में डुबोया तो जमुना शान्त हो गई। बृज की नारियों ने नन्द के घर बधाई गीत गाए। मां यशोदा की गोदी में कन्हाई पहुंच गए। जननी कहती है कि प्रसन्नता वश मैं बताशा तोड़ कर बांटती हूं। साथ ही गुड़ शक्कर भी दे रही हूं। शगुन के तौर पर हरी-हरी दाख (किशमिश) भी सब में बांट रही हूं।

4. हरेयां बागां दी मैं

हरेयां बागां दी मैं दुवां मंगानीआं,
दादा जी दी पगड़ी सजायो मेरे राम।

बन्न पगड़िया दादा चुखण्डिया जो जांदे,
धन-धन करदी सुहाई मेरे राम।
हरेयां बागां दी मैं दुवां मंगानीआं।

बन्न पगड़िया ताया मण्डिया जो जान्दे।
छैल्-छैल् करदी सुहाई मेरे राम,
हरेयां बागां दी मैं दुवां मंगानीआं।

बन्न पगड़िया चाचा मदरसे जो जान्दे,
शुभ-शुभ करदी सुहाई मेरे राम।
हरेयां बागां दी मैं दुवां मंगानीआं।

बन्न पगड़िया मामा मेले जो जान्दे।
लस-लस करदी सुहाई मेरे राम,
हरेयां बागां दी मैं दुवां मंगानीआं।

भावार्थ : यह एक बधाई गीत है। पुत्र जन्म पर सगे-सम्बन्धियों को हरी दूब भेंट करके बल्कि पगड़ी में सजा कर बधाई दी जाती है। इस गीत में इसी का वर्णन है कि मैं हरे बागों की दूब मंगा कर उसे शिशु के दादा जी की पगड़ी में सजाती हूँ। इस पगड़ी को पहन कर वह चौखन्डी (घर से अलग एक ऐसा खुला स्थान जिसमें घर के मर्द बैठते हैं तथा पुरूष अतिथि भी वहीं पर ठहराए जाते हैं) जाते हैं। हरी दूब उन्हें इतना सुशोभित करती है कि देखने वाले धन्य-धन्य कह उठते हैं। ताया जी दूब सजी पगड़ी पहन कर मण्डी जाते हैं। चाचा मदरसे और मामा दूब जड़ित पगड़ी पहन कर मेले में जाते हैं। सभी को पगड़ी अत्यन्त सुन्दर लगती है, और देखने वाले भी मोहित हो रहे हैं। ..... हरी दूब शुभ व शगुन का प्रतीक है। इसे भेंट करने का अभिप्राय बधाई स्वरूप कुछ भेंट प्राप्त करना भी होता है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
सारे	गरे	रे-	रेसा	सा	–	सारे	रेध़
हऽ	रेऽ	यांऽ	बाऽ	गां	ऽ	दीऽ	मैंऽ
ध़-	सा	ध़	प़	ध़	सा	रे	सा
द्बुऽ	ऽ	वां	मं	गा	ऽ	नी	आं
सारे	गरे	रे	रेसा	ध़	ध़	ध़सा	सासा
दाऽ	दाऽ	जी	दीऽ	प	ग	ड़ीऽ	सऽ
सारे	गरे	रे	रेसा	सा	–	–	–
जाऽ	योऽ	मे	ऽरे	रा	ऽ	ऽ	म

गीत के अन्य बोल भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाए जाएंगे।

5. डुग्घी-डुग्घी बासी

डुग्घी-डुग्घी बासी, लगदी उदासी डोला, उच्चेयाँ बँगला पुआई दे।
बँगला पुआई दे, मोरियाँ रखाई दे डोला, विच-विच सीसे जड़ाई दे।
पैड़ियां चड़दियां गेया लसकारा डोला, मेरिया सस्सू सदाई दे।

सस्स तेरी माता मेरी गोरिये, सैह् भी पीह्ड़े जो अड़ी है।
सद तरखाणे बड्ड चनण डोला, ऊजो पीह्ड़ा बनवाई दे।
अड़ियां पूरियां कराई दे, मेरिया सस्सू सदाई दे।
पैड़ियां चड़दियां गेआ लसकारा डोला, मेरिया जठाणियां सदाई दे।

जठाणी तेरी भाबो मेरी गोरिए, ओ भी अद्धे जो अड़ी है।
सद पटवारी, सद्ट जरेबां ड़ोला अद्दो-अद्द बंडाई दे,
अड़िया पूरियां कराई दे, मेरिया जठाणियां सदाई दे।

पैड़ियां चड़दियां गेआ लश्कारा ड़ोला, मेरिया नणदा सदाई दे।
नणद तेरी भैण मेरी गोरिए, सैह् भी कंगणे जो अड़ी है।
सद सन्यारे जन्मेया बेटा ड़ोला, उन्हूँ कंगण कढ़ाई दे,
अड़िया पूरियां कराई दे, मेरिया नणदा सदाई दे।

भावार्थ :- प्रस्तुत गीत गर्भवती युवती के मान-अभिमान से आरम्भ होता है। उसे लगता है, नीची जगह बने घर में रहते हुए मन उदास होता है। वह चाहती है कि उसके लिए ऊँचाई पर एक बंगला बनवा दिया जाए व उसमें ऊँची-ऊँची खिड़कियां तथा उन खिड़कियों में शीशे लगे हों। जब बंगला बनकर तैयार हो जाता है और जब वह चढ़ने लगती है तो उसकी तबीयत अचानक खराब हो जाती है। दर्द की एक लहर सी डोल जाती है। तो वह अपने पति से कहती है

स्वर लिपी :-

			2				0			3			
										सा	सा	सा	सा
										ड़ु	ग्घी	ड़ु	ग्घी
ऩी	–	–	प़	–	–	–	–	–	–	सा	सा	सा	सा
बा	ऽ	ऽ	सी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ग	दी	उ
सा	ऩी	सा	रे	सा	सा	म	रे	–	–	रे	सा–	सा	सा
दा	ऽ	ऽ	सी	ऽ	डो	ऽ	ला	ऽ	ऽ	उ	च्चे	याँ	ऽ
ऩी	ऩी	ऩी	ऩी	सा	सा	रे	म	रे	सा	सा	–	–	–
बँ	ग	ऽ	ला	ऽ	पु	ऽ	आ	ई	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ऽ

गीत के अन्य बोल भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाए जाएंगे।

कि मेरी सास को बुलवा दो। पति कहता है कि तुम्हारी सास मेरी माता है वह चौकी–पीहड़ा के लिए अड़ी है तो पत्नी कहती है कि तरखान को बुलाकर उसके लिए चौकी बनवा दो और उसकी जिद्द पूरी कर दो। जेठानी आधी जायदाद चाहती है, युवती पटवारी बुला कर बंटवारा कर देने को कहती है। ननद को बुलाने पर पति कहता है कि वह कंगण मांगती है तो सुन्यारा (स्वर्णकार) बुलाकर कंगण देने का अनुरोध करती है अर्थात मां बनने को आतुर व उत्साहित युवती कुछ भी और कैसा भी उपहार दे देने को तत्पर है। यहां यह भी स्पष्ट हुआ है कि दुख व कष्ट आप अकेले नहीं काट सकते।

6. हरे-हरे लेण लपायो

हरे-हरे लेण लपायो, भ्याइयां दी पूजा करो
गौरजां दे पुत्तर गणेश बली राजा भगती करो
लालड़ा बसन चढ़ायो, भ्याइयां दी पूजा करो
गौरजां दे पुत्तर गणेश बली राजा भगती करो
हरे-हरे लेण लपायो, भ्याइयां दी पूजा करो...।
गंगा जल चढ़ायो, भ्याइयां दी पूजा करो
गौरजां दे पुत्तर गणेश बली राजा भगती करो
हरे-हरे लेण लपायो, भ्याइयां दी पूजा करो
हरी-हरी द्रुब चढ़ायो, भ्याइयां दी पूजा करो
गौरजां दे पुत्तर गणेश बली राजा भगती करो
हरे-हरे लेण लपायो, भ्याइयां दी पूजा करो...।
फुल्ल सन्दूर चढ़ायो, भ्याइयां दी पूजा करो
गौरजां दे पुत्तर गणेश बली राजा भगती करो
हरे-हरे लेण लपायो, भ्याइयां दी पूजा करो...।
मिठड़ा परसाद चढ़ायो, भ्याइयां दी पूजा करो
गौरजां दे पुत्तर गणेश बली राजा भगती करो
हरे-हरे लेण लपायो, भ्याइयां दी पूजा करो।

भावार्थ : शिशु जन्म पर अपने कुल की देवी की प्रतिमा घड़ी जाती है। मिट्टी से मूर्ति घड़ने की परम्परा है। फिर इसकी विधिवत् सब औपचारिकताएं निभाते हुए वन्दना का विधान है। यह पूजा शिशु के स्वास्थ्य व भाग्य के लिए एक प्रार्थना है, शिशु के परिजनों की ओर से। गोबर में हरा रंग डाल कर हरे-हरे दिखते गोबर से लिपाई करो और भ्याई देवी की पूजा करो। साथ ही पार्वती पुत्र गणेश की भी भक्ति करो। लाल वस्त्र, भ्याई देवी को चढ़ाया जाए। गंगा जल से स्नान कराया जाए। हरी दूब तथा फूलों से पूजा की जाए। लाल सिन्दूर से देवी

स्वर लिपी :-

			2				0			3			
सा	रे	सा	सा	नि़	नि़	–	नि़	सा	रे	सा	–	सा	रे
ह	रे	ऽ	ह	ऽ	रे	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ण	ऽ	ल	ऽ
रे	–	–	सा	–	नि़	–	सा	–	–	सा	–	सा	रे
पा	ऽ	ऽ	यो	ऽ	[illegible]	ऽ	या	इ	ऽ	यां	ऽ	दी	ऽ
रे	–	–	सा	–	नि़	ध	नि़	–	–	–	–	–	–
पू	ऽ	ऽ	जा	ऽ	क	ऽ	रो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	रे	सा	सा	नि़	नि़	–	नि़	सा	रे	सा	–	सा	रे
गौ	र	ऽ	जां	ऽ	दे	ऽ	पु	त्त	ऽ	र	ऽ	ग	ऽ
रे	–	–	सा	–	नि़	–	सा	–	–	सा	–	सा	रे
णे	ऽ	ऽ	श	ऽ	व	ऽ	ली	ऽ	ऽ	रा	ऽ	जा	ऽ
रे	–	–	सा	–	नि़	ध	नि़	–	–	–	–	–	–
भ	ग	ऽ	ती	ऽ	क	ऽ	रो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

का श्रृंगार करके मीठा प्रसाद चढ़ाया जाए। देवी व गोरां पुत्र गणेश की श्रद्धा से पूजा अर्चना की जाए। बच्चे के शुभ व मंगलमय भविष्य के लिए। यही इस गीत का अभिप्राय व भावार्थ है। जो जितना प्रिय होता है उतना ही अधिक उसके लिए मन व्याकुल होता है। व्याकुल हृदय प्रार्थना में त्राण प्राप्त करता है।

7. अद्धी अद्धी राती

अद्धी-अद्धी राती भ्यागा दे बेले
कृष्ण होये अवतारी हां ।
उठेआं जी उठेआं पिता वसुदेवा,
कृष्ण होये अवतारी हां ।

भ्यागा दे बेले हां सतिए
जियां हिली कुम्भा पर थाली हां,
गोकल हो सतिए अवतार लेया,
नरैणैं राजे वसुदेवे दे घरें हां।

सत दिन ओबरी सत दिन तारे,
वसुदेवैं बेड़ी बणाई हां।
कृष्ण दे रूपे जन्मेआ विष्णु,
वसुदेवे दी बेड़ी खुली जांदी हां।

अवतार होया नरैणे राजे दा,
बिना कुंजी खुली जांदे ताले हां ।
अगे-अगे चले मेरे पिता वसूदेव,
पिछे जमना पेई उफाणै हां ।

डरैं मत डरैं पिता वसुदेवा
नदी आई चरणां बन्दणा हां।

भावार्थ : इस गीत में पुत्र जन्म के अवसर पर प्रभु कृष्ण की महिमा के बखान से लोक-मन में निरन्तर बह रही भक्ति धारा का परिचय मिलता है। आधी रात के समय पिता वासुदेव के घर कृष्ण ने जन्म लिया। नारायण अर्थात विष्णु कृष्ण के रूप में अवतारित हुए हैं। कृष्ण जन्म होते ही वासुदेव की बेड़ियां खुल गईं। बिना चाबी के कारावास के द्वार पर लगा ताला खुल गया। वासुदेव कृष्ण को गोकुल पहुंचाने के लिए चले तो उनके पीछे-पीछे यमुना की लहरें आने लगी। यमुना नदी कृष्ण के चरणों की वन्दना के लिए लालायित थी। भक्ति-रस में सराबोर लोक-मानस समस्त प्रकृति को अपने प्रभु के चरणों में झुका देख कर आन्नदित होता है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
	निसा	सा	गरे	रे-	ऽऽ	सा-	-
	अद्धी	अ	द्धीऽ	राऽ	ऽऽ	तीऽ	ऽ
-	नी-	नीप	प	सा-	-	नी-	-
ऽ	ध्या	गाऽ	दे	बेऽ	ऽ	लेऽ	ऽ
-	नीसा	सा-	गरे	रे-	--	सा	नी
ऽ	कृऽ	ष्ण	होऽ	येऽ	ऽऽ	अ	व
नीसा	सारे	रे-	सानी	सा	-	-	-
ताऽ	रीऽ	ऽऽ	ऽऽ	हां	ऽ	ऽ	ऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इसी प्रकार गाई जाएंगी।

8. घर वसुदेवे दे

घर वसुदेवे दे जन्मेया पुत्तर,
जसोदा पलंगैं चढ़ी एऽऽऽ ।
नन्द करदा गऊआं दे दान,
सोयने दे सिंग मढ़ी एऽऽऽ ।

भट्ट ब्राह्मण दिन्दे न सीसां,
जीये स्हाड़ा कृष्ण हरि एऽऽऽ ।
आई तां गेइआं वृज दियां नारां,
सोलह सिंगार करी एऽऽऽ ।

सेइआं तां गांदियां मंगल गान,
जीये स्हाड़ा श्याम हरि एऽऽऽ ।
घर वसुदेवे दे जन्मेया पुत्र,
जसोदा पलंगैं चढ़ी एऽऽऽ ।

नन्द करदा ऐ मोतियां दे दान,
थालां कटोरां भरी ए ।
आई तां गेइआं वृज दियां नारां,
सोलह सिंगार करी एऽऽऽ ।

भट ब्राह्मण दिन्दे न सीसां,
जीये स्हाड़ा कृष्ण हरी ए।
घर वसुदेवे.......॥

भावार्थ : इस गीत में पुत्र-जन्म की प्रसन्नता में पिता द्वारा दान का वर्णन है। वसुदेव के घर पुत्र ने जन्म लिया है, यशोदा पलंग पर बैठी है। नन्द प्रसन्नता से गऊओं का दान कर रहे हैं, जिनके सींग सोने से मढ़े हैं। भाट तथा ब्राह्मण आशीर्वाद दे रहे हैं कि हमारा कृष्ण जुग-जुग जिए। बृज की नारियां सोलह श्रृंगार करके आ रही हैं। वे भी मंगल गान गा रही है कि हमारा कृष्ण युगों-युगों तक सकुशल रहे। वसुदेव के घर पुत्र ने जन्म लिया। यशोदा पलंग पर आसीन है। थाल तथा कटोरियां मोतियों से भरकर नन्द दान कर रहे हैं। बृज की नारियां

स्वर लिपी :-

		0				0	
	ऩिसा	सा	ग॒रे	रे-	--	सा-	--
	घर	व	सुऽ	देऽ	ऽऽ	वेऽ	ऽऽ
--	ऩी-	ऩीप़	प़	सा-	-	नी-	-
देंऽ	जन्	मेऽ	या	पुऽ	ऽ	तऽ	र
-	ऩीसा	सा-	ग॒रे	रे-	--	सा	ऩी
ऽ	जऽ	सोऽ	दाऽ	पऽ	ऽऽ	लं	गैं
ऩीसा	सारे	रे-	(ग)साऩी	सा	-	-	-
चऽ	ढ़ीऽ	ऽऽ	ऽऽ	ए	ऽ	ऽ	ऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इसी प्रकार गाई जाएंगी।

सुसज्जित परिधानों में आ रही है। भाट तथा ब्राह्मण आशीर्वाद दे रहे हैं कि श्री कृष्ण दीर्घायु हों। कांगड़ा जनपद में पुत्र जन्म के अवसर पर कृष्ण का जीवन चरित ही बहुधा दोहराया जाता है। पुत्र की कृष्ण-रूप में ही परिकल्पना है।

9. बारहाँ तां बरीयाँ

बारहाँ तां बरीयाँ नणद जे आई सइयो, मंगदी गीगे बधाई
भाण्डेयां दे बिच गागर चंगेरी सइयो,
ओह् स्हाड़ी नणदा जो देओ ।
गागर तां भाबो घर रख अपणे,
मैं लैणियां फुलझड़ियां,
बारहाँ तां बरीयाँ......।
फुलझड़ियां राजे-रौआं दे बेड़े नणदे, स्हाड़े नी फुलझड़ियां.....।
गह्णेयां दे बिच बेसर चंगेरी सइयो,
ओह् स्हाड़ी नणदा जो देओ ।
बेसर तां भाबो घर रख अपणे,
मैं लैणियां फुलझड़ियां,
बारहाँ तां बरीयाँ......।
फुलझड़ियां राजे-रौआं दे बेड़े नणदे, स्हाड़े नी फुलझड़ियां.....।
कपड़ेयां दे बिच घघरी चंगेरी सइयो,
एह् स्हाड़ी नणदा जो देओ ।
घघरी तां भाबो घर रख अपणे,
मैं लैणियां फुलझड़ियां,
बारहाँ तां बरीयाँ......।
फुलझड़ियां राजे-रौआं दे बेड़े नणदे, स्हाड़े नी फुलझड़ियां.....।
मार मटाका नणद जे उठी सइयो लंघ गई दरिया,
घरे तां जादियां सस्स जे पुच्छदी क्या मिली गीगे बधाई,
झूठेयां लोकां झूठ गलाया सस्सू भावो ने धीवड़ जाई।
अज कर नुए पज कर नुए, भावो नैं मुंए नी लाई
बारहाँ तां बरियां बीर घर आया रूठड़ी भैण मनाई
सुच्चेआ मोतिया थाल भराया, उपर फुलझाड़ियां।
उठ-उठ भैणे गल लग मेरे, तू मेरी अम्मा दी जाई
मैं कन्नैं तू अड़िए सगे ता भैण भाई-भावो बगानड़ी जाई।।

भावार्थ : शिशु जन्म के अवसर पर बधाई गीतों का प्रचलन है। ये गीत अत्यन्त रोचक है। यद्यपि इन्हें हास-परिहास हेतु ही गाया जाता है। परन्तु इनमें निकट सम्बन्धियों की प्रसन्नता के साथ-साथ उनकी इच्छाएं भी चित्रित हुई हैं। इस गीत में भाई के घर पुत्र जन्म के बारह वर्ष बाद बधाई लेने आई बहन आभूषण

स्वर लिपी :-

			2				0			3			
ऩीसा	सारे	रेसा	ऩी	ऩीप़	प़	म़	प़	पऩी	ऩी	सा	–	रेग	सा
बा	रहां	तांऽ	ब	रिऽ	याँ	ऽ	न	णद	जे	आ	ई	सेइ	यो
सा	रेरे	पम	गरे	ग	सा	नि	सा	–	–	–	–	–	–
मं	ऽग	दीऽ	गीऽ	ऽ	गे	ब	धा	ई	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ऩीसा	सारे	रेसा	ऩी	ऩीप़	प़-	म़-	प़	पऩी	ऩी	सा	–	रेग	सा
भांऽ	डेऽ	यांऽ	दे	ऽऽ	वि	च	गा	गर	चं	गे	री	सेइ	यो
सा–	रेरे	पम	गरे	ग	सा	ऩि	सा	–	सा	–	–	–	–
ओह	स्हा	ड़ीऽ	नऽ	ण	दा	जो	दे	ऽ	ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

प्रस्तुत गीत में केवल स्थाई है। गीत की अन्य पंक्तियां इन्हीं स्वरों पर गाई जाएंगी।

मांगती है। भाभी टाल मटोल करते हुए कहती है कि घर में जो भी अच्छी से अच्छी वस्तु है, वह मेरी ननद को दी जाए। बर्तनों से आरंभ करके श्रेष्ठतम गहना व वस्त्र देने की बात करती है। परंतु बहन '**फुल्लझड़ियां**' (शीशफूल) लेने के आग्रह पर अड़ी है। अन्ततः भाभी के इन्कार करने पर वह रूठ कर दरिया पार, अपने ससुराल पहुँच जाती है। सास पूछती है कि बच्चे के जन्म पर बधाई स्वरूप क्या मिला तो वह बहाना बनाती है कि लोगों ने झूठी खबर फैलाई थी। मेरी भाभी ने तो बेटी को जन्म दिया है। सास सब समझ कर, ताना देती है। बारह वर्षों बाद भाई घर लौटता है और रूठी हुई बहन को मना कर लाता है। सुच्चे मोतियों से भरे थाल पर फुल्लझड़ियां रख कर देते हुए कहता है कि तू मेरी मां की जाई है और भाभी बेगानी है। ..... गीत में बहन-भाई के स्नेह सम्बन्धकी पराकाष्ठा है तो भाभी की नाराज़गी भी है। सब से बड़ी बात, सास द्वारा बहू को बधाई स्वरूप मिले उपहार के सम्बन्ध में पूछना है। यह बहुओं पर ससुराल का दबाव है। जिसकी वजह से ही वे अपने मायके से कुछ न कुछ बहुमूल्य उपहार चाहती है।

10. बालक जन्मेया मैं सुणेया

बालक जन्मेया मैं सुणेया राधके, जे किछ मंगणा मंगी लै ।
सोयने दे मह्ल पुआ मेरे राजा जी,
बरांडा पुआई देयो दन्दू दा ।
पुठीआँ अड़ीआँ ना पा मेरी राधके,
बरांडा नी दिखेया दन्दू दा ।
बालक जन्मेया...
सर्पां दी पीह्ंग पुआ मेरे राजा जी,
डोर लुआई देयो विच्छुए दी ।
पुठीआँ अड़ीआँ ना पा मेरी राधके,
डोर न दिक्खी बिच्छुए दी ।
बालक जन्मेया...
गोले दी नत्थ बणुआई देयो राजा जी,
चुटकी लुआई देओ चंदे दी ।
पुठीआँ अड़ीआँ नी पा मेरी राधके,
चुटकी नी दिखी ऐ चन्दे दी ।
बालक जन्मेया...।

भावार्थ : इस गीत में पुत्र की माँ मानपूर्वक पति से उपहार माँग रही है। वास्त में वह हास-परिहास की मनः स्थिति में है। – हे राधा! मैंने सुना है कि बाल ने जन्म लिया है अतः तूने जो कुछ माँगना है, वह मांग ले। – हे मेरे राजा! मु सोने का महल बना दो तथा उसका बरामदा हाथी दांत का बना दो। – मे राधिका! उल्टे हठ मत करो, मैंने हाथी दांत का बना बरामदा नहीं देखा। – मेरे राजा जी – मुझे सर्पों की पींग (झूला) बनवा दो, और बिच्छू की डोर उ पर डोर लगा दो। – राधा! अनहोनी बातें मत करो, मैंने बिच्छू की बनी डोर क नहीं देखी। – मेरे राजा! मुझे गरी (नारियल) के गोले की नथनी बनवा दो औ उसमें चांद की चुटकी लगवा दो। – मेरी राधिका! यह कैसी मांग है, मैंने चां की चुटकी कहीं नहीं देखी। पत्नी, पति को जैसे उसकी असमर्थता का भा

स्वर लिपी :-

			2				0			3			
										सा	–	रे	–
										बा	ऽ	ल	ऽ
ग	–	–	रे	–	सा	–	ध़	–	–	सा	–	रे	–
क	ऽ	ऽ	ज	ऽ	मे	ऽ	या	ऽ	ऽ	मैं	ऽ	सु	णे
ग	–	–	रे	–	सा	–	ध़	–	–	रे	–	रे	–
या	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ध	ऽ	के	ऽ	ऽ	जे	ऽ	कि	ऽ
रे	–	सा	सा	–	रे	–	ग	–	–	रे	–	सा	–
छ	ऽ	ऽ	मं	ऽ	ग	ऽ	णा	ऽ	ऽ	मं	ऽ	गी	ऽ
सा	–	–	–	–	–	–	–	–					
लै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ					

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

करवाना चाहती है। बालक को जन्म देकर वह स्वयं भी एक शिशु की मन:स्थिति में पहुँच गई है। यह गीत पति व पत्नी के बीच हुए संवादों पर आधारित है।

11. कुदे हत्थ बंसरी

कुदे हत्थ बंसरी कुदिया गोदिया बाल जी,
मेरे निक्के जेहे ने जन्म लेआ ।

दादे हत्थ बंसरी, दादिया गोदिया बाल जी,
मेरे निक्के जेहे ने जन्म लेआ ।
बज्जण लगी बंसरी खिड़-खिड़ हस्सदा बाल जी,
मेरे निक्के जेहे ने जन्म लेआ ।

ताये हत्थ बंसरी, ताईया गोदिया बाल जी,
मेरे निक्के जेहे ने जन्म लेआ ।
बज्जण लगी बंसरी खिड़-खिड़ हस्सदा बाल जी,
मेरे निक्के जेहे ने जन्म लेआ ।

मामे हत्थ बंसरी, मामिया गोदिया बाल जी,
मेरे निक्के जेहे ने जन्म लेया ।
बज्जण लगी बंसरी खिड़-खिड़ हस्सदा बाल जी,
मेरे निक्के जेहे ने जन्म लेआ ।

भावार्थ : इस बधाई गीत की परिधि में विभिन्न परिजन प्रवेश पा गए हैं। दादा-दादी, ताया-ताई, मामा-मामी आदि का नाम लेकर बधाई दी जा रही है। लोक गीतों में परिवार को अतिरिक्त विस्तार मिलता है। कौन बांसुरी बजा रहा है अर्थात प्रसन्न हो रहा है और किसकी गोदी में बालक है ? इस प्रश्न से गीत आरम्भ होता है। उत्तर में कहा गया है कि दादा के हाथ में बांसुरी और दादी की गोदी में बालक है। ताया-तायी, चाचा-चाची व मामा-मामी सभी का नाम

स्वर लिपी :-

		0				0	
ध़	सा	रे	ग	रे	-सा	सा	-
कु	दे	ह	त्थ	बं	ऽस	री	ऽ
रेम	मम	म-	गरे	रेम	-म	प	मरे
कुऽ	दिया	ऽगो	दिया	बाऽ	ऽल	ज़ी	मेरे
रेरे	-सा	सारे	ग	रे	रेसा	सा	ऽ
निक्के	ऽऽ	जेहे	ने	ज	न्म	ले	आ
ध़	सा	रे	ग	रे	-सा	सा	-
दा	दे	ह	त्थ	बं	ऽस	री	ऽ
रेम	मम	म-	गरे	रेम	-म	प	मरे
दाऽ	दिया	गोऽ	दिया	बाऽ	ऽल	ज़ी	मेरे
रेरे	-सा	सारे	ग	रे	रेसा	सा	-
निक्के	ऽऽ	जेहे	ने	ज	न्म	ले	आ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

लेकर बांसुरी के बजने व बालक के खिलखिला कर हंसने पर गीत समाप्त होता है। ..... कांगड़ा जनपद में हर बालक, कृष्ण का ही प्रतीरूप होकर परिकल्पित है और वह परिवार में सब का लाड़ला-दुलारा है।

12. राजा जे पुच्छदा

राजा जे पुच्छदा राणी सुण गल्ल मेरी
मटकी दे सुच्चे राणी कुसजो देइये।

पुरोहत सदाइये राणी, रास गणाइये,
मटकी दे सुच्चे राणी उसजो देइये।

नाई जे आया राणी, द्रुवा लेई आया,
मटकी दे सुच्चे मोती उसजो देइये।

सुन्यारे दा बेटा जी राजा कंगणू लेई आया,
मटकी दे सुच्चे नी राणी उसजो देइये।

तरखाणा दा बेटा नी राजा पंगूड़ा लेई आया,
मटकी दे सुच्चे नी राणी उसजो देइये।

भावार्थ : इस गीत में शिशु जन्म पर बधाई देने की बात है। राजा अर्थात पति अपनी रानी अर्थात पत्नी से सलाह लेता है कि मटकी में संजो कर रखे हुए 'सुच्चे मोती' उपहार स्वरूप किसे दिए जाएं। फिर बताता है कि रास-गिनाने वाले पुरोहित को बधाई स्वरूप ये मोती दिए जाएंगे। द्रुव लेकर आए नाई को, कंगन बनाकर लाए सुनार तथा झूला बनाकर लाए तरखान को भी उपहार स्वरूप सुच्चे मोती देंगे। मां-बाप अति प्रसन्न हैं और जिस-जिस ने उनके पुत्र के लिए कुछ किया है। वे उसके प्रति आभारी होते हुए भेंट स्वरूप सुच्चे मोती देना चाहते हैं। सेवा कार्य करने वालों के प्रति यह सद्भाव इस गीत को एक अतिरिक्त गरिमा प्रदान करता है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
--	प़ध़	ध़सा	सा-	सारे	गरे	रेसा	सा-
ऽऽ	राऽ	जाऽ	जेऽ	पुच	छदा	राऽ	णीऽ
--	सारे	गसा	रे-	साध़	ध़प़	प़-	--
ऽऽ	सुण	गऽ	ल्ल	मेऽ	ऽऽ	रीऽ	ऽऽ
--	प़ध़	ध़सा	सा-	सारे	गरे	रेसा	सा-
ऽऽ	मट	कीऽ	देऽ	सुऽ	च्चे	राऽ	णीऽ
--	सारे	गसा	रे-	सा-	--	--	--
ऽऽ	कुस	जोऽ	देइ	येऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

13. लाल जन्मे जी

लाल जन्मे जी गोपाल जन्मे,
बडेयां लोकां जो देखणे जो लाल जन्मे ।
खबर करो लाल दे दादा जी नूं,
जी सारी उमर दी कमाई उदी इसी बेला नूं, लाल जन्मे ....।
खबर करो लाल दे ताया जी नूं,
सारी उमर दी कमाई उदी इसी बेला नूं, लाल जन्मे..................।
खबर करो लाल दे मामा जी नूं,
जी सारी उमर दी कमाई उदी इसी बेला नूं, लाल जन्मे............।
खबर करो लाल दे बापू जी नूं,
जी सारी उमर दी कमाई उदी इसी बेला नूं, लाल जन्मे..................।

भावार्थ : इस गीत में शिशु-जन्म की प्रसन्नता व्यक्त हुई है। शिशु-जन्म का समाचार शिशु के दादा, ताया, मामा, पिता को देने का वर्णन है और कहा गया है कि सभी को इस शिशु को देखने का चाव है। इसके दादा को समाचार भेजो और उनसे कहो कि उनकी जीवन भर की कमाई लुटाने का अवसर आ गया है अर्थात इस खुशी के समय यथायोग्य उपहार देने की रीति की ओर संकेत देते हुए, इस गीत में यही बात शिशु के ताया, मामा तथा पिता को कहनी चाही है। कांगड़ा जनपद के जन्मगीतों में पुत्र-जन्म की खुशी को सम्बन्धियों के अतिरिक्त पुरोहित, नाई, लुहार व सुनार सभी से सांझा करने का प्रयास है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
--	प-	पप	-प	पध	ध-	प-	म-
ऽऽ	लाऽ	लज	न्ऽ	मेऽ	ऽऽ	जीऽ	गोऽ
--	रे-	गम	-ग	म-	--	गरे	रे-
ऽऽ	पाऽ	लज	न्ऽ	मेऽ	ऽऽ	बडे	यांऽ
--	सा-	रेसा	-नी̣	ध̣-	नि̣-	सा-	सा-
ऽऽ	लोऽ	ऽकां	ऽजो	देऽ	ऽख	णेऽ	जोऽ
--	रे-	गम	-ग	म-	--	--	--
ऽ	लाऽ	लज	न्ऽ	मेऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ

गीत के अन्य बोल भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाए जाएंगे।

14. खूइया पर जन्मे नन्द लाल

खूइया पर जन्मे नन्द लाल जी बधाई होवै,
कौण सम्भालै मेरे सिर दी गागरिया,
कौण सम्भालै नन्दलाल जी बधाई होवै।

दादा सम्भालै मेरे सिर दी गागरिया,
दादी सम्भालै नन्दलाल जी बधाई होवै।

ताया सम्भालै मेरे सिर दी गागरिया,
ताई सम्भालै नन्दलाल जी बधाई होवै।

मामा सम्भालै मेरे सिर दी गागरिया,
मामी सम्भालै नन्दलाल जी बधाई होवै।

चाचा सम्भालै मेरे सिर दी गागरिया,
चाची सम्भालै नन्दलाल जी बधाई होवै।

भावार्थ : इस गीत में पुत्र जन्म को नाटकीय घटना के रूप में परिकल्पित किया गया है। कुंए पर जल भरने गई युवती का प्रसव वहीं हो जाता है। वह कृष्ण रूपी पुत्र-रत्न प्राप्त करती है। अब उसे चिन्ता है कि उसके सिर पर रखी गागर कौन संभालेगा तथा कौन नन्दलाल को देखेगा। ऐसे समय में उसे अपने परिजन याद आते हैं। वह अत्यन्त आश्वस्त होकर कहती है कि बेटे के दादा गागर संभालेंगे तथा दादी पुत्र को संभालेगी। वह पुत्र की ताई व चाची को भी याद करती है। परोक्षता अपने रिश्तों के प्रति विश्वास प्रकट करते हुए नवजात की जननी कहना चाहती है कि कैसी भी विकट स्थिति उपस्थित हो जाए उसका परिवार सदैव उसकी सहायता के लिए तत्पर है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
	धसा	सा	सानी	सा	रे	सा	नी
	खूइ	या	पर	जन	मे	नं	द
ध	-ध	धसा	सानी	सारे	रे	सानी	सा
ला	ऽल	जीऽ	बऽ	धाऽ	ई	होऽ	वै
सा	ध	सा	रे	ग	म	ग	म
ऽ	कौ	ण	सम	भा	लै	मे	रे
–	मग	गरे	रे	ग	ग	रे	सा
ऽ	सिर	दीऽ	गा	ग	रि	या	ऽ
–	धसा	सा	सानी	सा	रे	सा	नी
ऽ	कौऽ	ण	सम्ऽ	भा	लै	नं	द
ध	ध	धसा	सानी	सारे	रे	सानी	सा
ला	ल	जीऽ	बऽ	धाऽ	ई	होऽ	वै

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

15. स्हाढ़े तां जन्मेयां श्याम

स्हाढ़े तां जन्मेया श्याम नी नणदे,
किल्ही तां किल्ही मत औन्दी नी नणदे,
आयां नणदोइये दे नाल् नणदे।
स्हाढ़े तां जन्मेया............।।

स्हाढ़े तां जन्मेया श्याम नी नणदे,
चोलू तां टोपू मत लियोन्दी नी नणदे,
स्हाढ़े तां है सूटां दा रवाज़ ।
स्हाढ़े तां जन्मेया............।।

स्हाढ़े तां जन्मेया श्याम नी नणदे,
पैदल तां पैदल मत औंदी नी नणदे,
स्हाढ़े तां है डोली दा रवाज़ ।
स्हाढ़े तां जन्मेया............।।

स्हाढ़े तां जन्मेया श्याम नी नणदे,
लड्डू तां पेड़े मत लियोंदी नी नणदे,
स्हाढ़े तां है बर्फी दा रवाज़ ।
स्हाढ़े तां जन्मेया............।।

स्हाढ़े तां जन्मेया श्याम नी नणदे,
दैणे तां लैणे दी गल मत करदी,
भाई तां तेरा है गरीब नी नणदे ।
स्हाढ़े तां जन्मेया............।।

भावार्थ : इस गीत में भाभी का अपनी ननद को पुत्र-जन्म के शुभ अवसर पर आमन्त्रण है। जिसमें ननद के प्रति उसे स्नेह है पर अपने बड़प्पन का भान भी वह उसे करवा रही है। वह अपनी ननद को कहती है कि आप आना परन्तु अकेले नहीं। अपने पति को भी संग लाना। वह कहती है कि हमारे यहां सूट का रिवाज़ है, चोलू-टोपू मत लाना। यह भी कहती है कि हमारे यहां पैदल मत आना, यहां डोली का रिवाज़ है। यह भी समझाती है कि आती बार लड्डू-पेड़े मत लाना यहां बर्फी का रिवाज़ है। फिर अन्त में कहती है कि कुछ लेने की बात मत करना क्योंकि आपका भाई गरीब है। ननद-भाभी के बीच हंसी, ठिठोली, जन्म गीतों का महत्त्वपूर्ण अंग है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
	धसा	सा	सानी	सा	रे	सा	नी
	स्हा	ढ़े	तांऽ	ज	़	मे	या
ध–	–	––	सानी	सारे	रेसा	सा	–
श्या	ऽ	ऽम	नीऽ	नऽ	णऽ	दे	ऽ
–	धऽ	सा	रेऽ	गऽ	म	ग	म
ऽ	किल	ही	तांऽ	किल	ही	म	त
–	मग	गरे	रे	ग	ग	रे	सा
ऽ	औंऽ	दीऽ	नी	न	ण	दे	ऽ
–	धसा	सा–	सानी	सा	रे	सा	नी
ऽ	औंऽ	याऽ	नण	दो	इ	ये	दे
ध–	ध	–	सानी	सारे	रेसा	सा	–
नाऽ	ऽ	ल	ऽऽ	नऽ	णऽ	दे	ऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

16. नी मैं कत्तण बैठी

''नी मैं कत्तण बैठी जी – नी सस्सू लाल पेया मेरी गोदी,
मिंजो लैणा नी औंदा जी – नी सस्सू दैणा नी औंदी लोरी,
मैं आप खलाई लैंगी नी नूएं आप दियां मैं लोरी ।

नी मैं कत्तण बैठी जी – नी जठाणिए लाल पेया मेरी गोदी,
मिंजो लैणा नी औंदा जी – जठाणिए दैणा नी औंदी लोरी,
मैं आप खलाई लैंगी नी दराणिये आप दियां मैं लोरी ।

नी मैं कत्तण बैठी जी – नी नणदे लाल पेया मेरी गोदी,
मिंजो लैणा नी औंदा जी – नी नणदे दैणा नी औंदी लोरी,
मैं आप खलाई लैंगी नी भावो आप दियां मैं लोरी ।

नी मैं कत्तण बैठी जी – नी दराणिए लाल पेया मेरी गोदी,
मिंजो लैणा नी औंदा जी – नी दराणिए दैणा नी औंदी लोरी,
मैं आप खलाई लैंगी जठाणिए आप दियां मैं लोरी।

भावार्थ : इस गीत में पहली बार माँ बनी औरत की सरलता का वर्णन है जो कह रही है कि बच्चे को ठीक से गोदी में लेना व लोरी गाकर सुलाना नहीं जानती। इस पर सास प्रसन्नतापूर्वक कहती है कि वह बच्चे को सम्भाल लेगी। यही बात जेठानी, ननद आदि से कहती है। वे सब भी इस दायित्व को वहन करने का आश्वासन देती हैं। इस गीत में संयुक्त परिवार में मिलने वाली सुविध ाओं का वर्णन है। घर में शिशु ने जन्म लिया, तो सारा परिवार उसका दायित्व उठाने को तत्पर हो उठा है। संयुक्त परिवार में रहते हुए एक–दूसरे से मिलने वाले महत्त्वपूर्ण व उपयोगी सहयोग को रेखांकित किया गया है। नवजात शिशु की मां, अपने सम्बन्धियों को शिशु–पालन प्रक्रिया में सम्मिलित करने के बहाने खोज रही है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
							प़प़
							नीमैं
पध़	ध़सा	सारे	गरे	रेसा	सासा	सारे	गरे
क-	तण	वैऽ	ठीऽ	जीऽ	ऽनी	सऽ	स्सू
रेसा	सासा	सारे	गसा	रेसा	सा	ऽ	प़प़
लाऽ	लऽ	पेया	मेरी	गोऽ	दी	ऽ	मिंजो
प़ध़	ध़सा	सारे	गरे	रेसा	सासा	सारे	गरे
लैऽ	णानी	औऽ	न्दा	जीऽ	ऽनी	सऽ	स्सू
रेसा	सासा	सारे	गसा	रेसा	सा	ऽ	
दैऽ	णानी	औऽ	न्दी	लोऽ	री	ऽ	

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

17. उच्चेयां पिपलां नी माए

उच्चेयां पिपलां नी माए पखरु बोलदे,
धीया तुहाड़िया नी माए बालक जाया ।

हुण तां भेजयां नी माए चोलुआं-टोपुआं,
धीया तुहाड़िया नी माए बालक जाया ।
उच्चेयां पिपलां नी माए पखरु बोलदे,

हुण तां भेजयां नी माए सुंड पनीरियाँ,
धीया तुहाड़िया नी माए बालक जाया ।
उच्चेयां पिपलां नी माए पखरु बोलदे,

हुण तां भेजयां नी माए बीरां दिया जोड़ियां,
धीया तुहाड़िया नी माए बालक जाया ।
उच्चेयां पिपलां नी माए पखरु बोलदे।।

भावार्थ : इस गीत में पुत्र जन्म पर अत्यन्त प्रसन्न बेटी, ससुराल में रहते हुए अपनी माँ से संवाद स्थापित कर रही है। कहती है कि ऊँचे पीपल पर बैठा पखेरु (पक्षी) पुत्र जन्म की सूचना दे रहा है। हे माँ! अब तुम बालक के लिए आवश्यक सभी कुछ भेज दो, जैसे पहनने के लिए कपड़े आदि। मेरे लिए इस अवसर विशेष पर खाए जाने वाले खाद्य पदार्थ भिजवा दो। अन्त में मन की इच्छा व्यक्त करती है कि मेरे दोनों भाईयों के हाथ यह सब भिजवा दो। प्रकृति का मानवीकरण इस गीत में हुआ है। ऊँचे पीपल पर बैठे पंखी के माध्यम से समाचार पहुँचाने की बात है। वास्तव में बेटी के लिए मां के हाथों से बने उपहार अत्यन्त मूल्यवान हैं वह अपनी प्रसन्नता में भाइयों की उपस्थिति आवश्यक मानती है।

स्वर लिपी (अनिबद्ध प्रकार) :-

सा	रे	ग	–प	प	धप	ग	रे
उ	च्चे	यां	ऽऽ	पि	पऽ	लां	ऽ
^{प}ग	रे	सा	ध़	सा	रे	ग	रेग
नी	मा	ऽ	ए	प	ख	रु	ऊऽ
ग	–	रे	सा	सा	रे	ग	प
बो	ल	दे	ऽ	धी	या	तु	ऽ
प	प	ग	रे	^{प}ग	रे	सा	ध़
हा	ड़ि	या	ऽ	नी	मा	ऽ	ए
सा	रे	ग	रेग	ग	–	रे	सा
बा	ल	क	ऽऽ	जा	ऽ	या	ऽ

गीत के अन्य बोल भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाए जाएंगे।

18. उड़ कालड़ेया कागा

''उड़ कालड़ेया कागा भाइया,
उड़ी करी देआं सुनेह्ड़ा ए
जाई आक्खेयां मेरी अम्मड़िया,
धीया होलरु जाया ए ।

अम्मां जाई पुच्छेया पढ़ेयां पंडता,
बाला कुस रासा जाया ए ।
त्रेई-चौहदियां छठ वर्जी करी,
पुन्यां-परगड़िया बाला जाया ए ।

उड़ कालड़ेया कागा भाइया ।।
अम्मां मेरड़िया मिन्जो पथ दित्ता,
हरेयां मुंगा दी अम्मा दाल़ भेजी,
ऊपर घियो दा लच्छ पाया ए ।

उड़ कालड़ेया कागा भाइया ।
उड़ी करी देआं सुनेह्ड़ा ए ।।

भावार्थ : जन्म गीतों में पेड़-पौधों तथा पक्षियों में मानव आत्मा को आरोपित किया गया है। इस गीत में बेटी पुत्र जन्म पर अत्यन्त प्रसन्न होकर अपनी माँ को काले काग के माध्यम से सन्देश भेजती है। मां पंडितों से पूछती है कि बेटे का भाग्य कैसा है। वे आश्वास्त करते हैं कि पुत्र अत्यन्त भाग्यवान है। बेटी माँ द्वारा भेजे खाद्य पदार्थों का भी वर्णन करती है। मां ने मेरे लिए पथ्य (परहेज का खाना) भेजा है। हरे मूंग की दाल और उसमें घी डाला हुआ है। बेटी अपनी खुशी में मां को याद कर रही है। मात्र उसी पर भरोसा जता रही है। उसे संशय है कि ससुराल में उसकी यथासंभव देखभाल नहीं होगी। उसके लिए आवश्यक वस्तुएं मायके से ही आएंगी।

स्वर लिपी :-

			2				0			3			
			सा	–	सा	ग	ग	रे	सा	सा	–	सा	रे
			उ	ऽ	ड़	ऽ	का	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ड़े	ऽ
ऩी	–	प़	–	–	–	–	सा	–	–	सा	–	सा	–
या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	का	ऽ	ऽ	गा	ऽ	भा	इ
ऩी	–	–	ऩी	–	सा	–	ग	रे	सा	सा	–	–	–
या	ऽ	ऽ	उ	ऽ	ड़ी	ऽ	क	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
नी	–	सा	–	–	ऩी	–	सा	–	–	ग	रे	सा	–
दे	ऽ	ऽ	आं	ऽ	सु	ऽ	ने	ह	ऽ	ड़ा	ऽ	ऽ	ऽ
सा	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
ए	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

गीत के अन्य बोल भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाए जाएंगे।

19. गोकुल माए छिंजां पेईयां

गोकुल माये छिन्जां पेईयां, मैं भी छिंजा जो जाणा,
छिंजा नी जाणा पुतरा तित तेरेआं बैरियां होणा।
दुध देआं म्हैसड़िए, श्यामे जो खीर खुआणी,
अग्गे दिन्दी मण वो मण अज कियां दो मण दित्ता।।
मरी जायां म्हैसड़िये श्यामे दा रिजक बधाया,
गाल् मत दिन्दी माये इन्हां मेरा रिजक बधाया।
जाँदे कृष्णे सिम्बल् कटाये टमकां जो बैण बणाये,
पहली चोट टमकें पेईऐ, धरत कम्बे लोकी डरी ऐ।
दुई चोट टमकें पेईऐ, महले बैठी राणी डरी ऐ,
तीजी चोट टमकें पेईऐ, महलां दे कुंगरे टराये।
चौथी चोट टमकें पेई ऐ, गरभणीं गर्भ गराये,
पंजी चोट टमकें पेईऐ, मोआ चूसड़ नामी।
छठी चोट टमकें पेईऐ, मारेया चैनू चाकर,
जुध लगा दूं जणेयां सक्का मामा कनैं सक्का भाणजा।
मिन्जो मत मारदा भाणजा, मैं तेरा मामा लगदा,
तिंजो कैंह नी मारा, तूं मेरा दुश्मण बैरी,
पिठी हथ लाये माऐ, कृष्ण जिती घरें आया।

भावार्थ : कांगड़ा के जन्मगीतों पर भक्ति काल की कृष्णाश्रयी सगुण काव्य परम्परा के प्रतिनिधि कवि सूरदास का प्रभाव है। वात्सल्य भाव के पर्यायी सूरदास कृष्ण के शैशव का चित्रण एक मां की तरह करते हैं। ... यही ममता इस गीत में भी है। शिशु कृष्ण, मनुहारपूर्वक कहते हैं कि मां गोकुल में कुश्ती (छिंज) प्रतियोगिता हो रही है, मैं भी वहां जाऊँगा। मां नहीं चाहती कि वह जाए क्योंकि वहां उसके शत्रु भी होंगे। फिर वह भैंस को कहती है कि वह दूध दे

स्वर लिपी :-

			2				0			3			
												सा	नि
												गो	ऽ
सा	ग	–	ग	म	म	ध	ध	–	प	म	–	ग	म
कु	ल	ऽ	मा	ऽ	ये	ऽ	छिं	ऽ	ऽ	जां	ऽ	पे	ई
म	–	–	–	–	–	–	ग	–	सा	सा	–	सा	नि
यां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मैं	ऽ	ऽ	भी	ऽ	छिं	ऽ
सा	ग	–	म	–	–	–	ग	–	–	सा	–		
जा	ऽ	ऽ	जो	ऽ	ऽ	ऽ	जा	ऽ	ऽ	णा	ऽ		

प्रस्तुत गीत में केवल स्थाई है। गीत की अन्य पंक्तियां इन्हीं स्वरों पर गाई जाएंगी।

क्योंकि कृष्ण को खीर खिलानी है। **फि**र उपालंभ भी देती है कि उसने ज्यादा दूध देकर बच्चे का भोजन बढ़ा दिया। गोकुल पहुंचते ही कृष्ण ने सिम्बल का पेड़ कटवा कर नगारे (टमक) के लिए बैण बनवाएं। नगारे पर पहली चोट पड़ते ही धरती कांपने लगी तथा लोग भयभीत हो गए। दूसरी चोट पड़ते ही महल में बैठी रानी डर गई **फि**र महल के शीर्ष गिरने लगे। तब कृष्ण ने बारी-बारी से शत्रुओं का वध किया। अन्त में मामा कंस का वध कर के, मां के आशीर्वाद से विजयी होकर लौटे।

20. एह् जिसा पहलिआ सूहड़िया

एह् जिसा पहलिआ सूहड़िया, ओठ सुके मुख पीलाजी।
एह् जिसा दूजीया सूंहड़िया, चरूह्ए रिहदा भत्त न भाए।
एह् जिसा तीजिआ सूहड़िया, खुरिआं रंगत आई जी
एह् जिसा चौथिया सूहड़िया, छातिआ रंग फिरेआ जी
एह् जिसा पंजमिआ सूहड़ियां, दराणिआं, जठाणिआं जो सुणाया जी।
एह् जिसा छिठिया सूहड़ियां, ससु नणाना नैं गलाया जी।
एह् जिसा अठीआं, सूहड़ियां, हुण ससु मनाया अठुआं जी
एह् जिसा नौमिआ सूहड़िया, ओवरी पलंग डलाया जी
एह् जिसा दसमिआं सूहड़ियां, जम्मेआ त्रिभूपति राई जी
जणी होई सखालड़ी, सौणा देआं, मेरिए माए जी
सौणा किआं देआं सुहागणी, मेरेआं लागां दुआयां जी
एह् दो गोखड़ियां दो महैसड़ियां, नणदा जो देणी बधाई जी।

भावार्थ : यह सूहड़ी है। बच्चे के जन्म से पूर्व गाया जाने वाला गीत। इसमें गर्भवती स्त्री के कायिक हाव-भाव का चित्रण है। गर्भ धारण के प्रथम मास में ही गर्भवती स्त्री के होंठ सूख गये और मुख पीला पड़ गया। दूसरे मास में चरुए का भात नहीं भाता है। तीसरा मास चढ़ते, बहु की एड़ियों में रंगत आ गई। चौथा मास चढ़ते, वक्ष-स्थल में विशेष रंग छा गया। पांचवा मास चढ़ते, गर्भ की बात देवरानी व जेठानी से की। छठे मास में सास व ननद को बताया। आठवें मास में सास को अठुआवां (विशेष प्रकार का गर्भ सम्बंधी अनुष्ठान) करवाने के लिए कहा। नौवें मास में भीतरी कमरे (ओबरी) में बिस्तर लगाया गया। दसवें मास में त्रिभुवन पति भगवान ने जन्म लिया। अब वह साख-सम्बंधों वाली बन गई। भार मुक्त हुई। जननी कहती है – हे मेरी माँ..... मुझे सोने दो। हे सुहागिन! तुम्हें किस प्रकार सोने दूं, पहले मेरे 'लाग' (वधाई) दिलवाओ। सुहागिन का उत्तर है कि पहली बार सुई भैंसें मेरी ननद को बधाई में देना। सास और बहु के इन्हीं सम्वादों पर गीत समाप्त हो जाता है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
ध़-	ध़रे	रे-	रेसा	सा-	--	ध़-	--
एह	जिसा	पह	लिया	सूऽ	ऽह	ड़िऽ	याऽ
ध़-	ध़सा	सा-	सासा	सारे	रेसा	रेग	गसा
ओऽ	ठसु	केऽ	मुख	पीऽ	लाऽ	ऽऽ	जी
साऽ	रे-	--	सा-	सा-	--	ध़-	--
एह	जिसा	पह	लिया	सूऽ	ऽह	ड़िऽ	याऽ
ध़-	ध़रे	रे-	रेसा	सा-	--	ध़-	--
एह	जिसा	दूऽ	जिया	सूऽ	ऽह	ड़िऽ	याऽ
ध़-	ध़सा	सा-	सासा	सारे	रेसा	रेग	गसा
चरु	हए	रिऽ	हदा	भऽ	ऽत	नऽ	भाए
सा-	रे-	--	सा-	सा-	--	ध़-	--
एह	जिसा	दूऽ	जिया	सूऽ	ऽह	ड़िऽ	याऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इसी प्रकार गाई जाएंगी।

21. उड़ेयां वे कागा

उड़ेयां वे कागा बड़िया भ्यागा, इक सुन्हेड़ा लेई जा।

जाई बोलेयां मेरिया अम्मां नरवेदणिया, धीया जो सुपना होया ऐ।
सुपने दे विच सस सुहागण, हरेयां नरेला लेई आई।

चुप करेयां धीए सर्व सुहागणी, सुपने आई ऐ भ्याई,
जाई बोलेआ मेरिया अम्मां नरवेदणिया, धीया जो सुपना होया ऐ।

सुपने दे विच जठाणी सुहागण, हरी-हरी दाखां लेई आई।
चुप करेयां धीए सर्व सुहागणी, सुपने आई ऐ भ्याई।

भावार्थ :- जन्मगीतों में अति कल्पना (फैंटेसी) का बहुधा प्रयोग हुआ है। ससुराल में बैठी बेटी काग, कोयल या बादल को माध्यम बनाकर माँ से बतिया लेती है। हमारे आँगन में पीपल का वृक्ष है, जिस पर काले काग आ बैठे हैं। कागा! तू प्रातः उड़ना! उड़कर मेरी माँ को संदेश देना कि तेरी पुत्री को स्वप्न हुआ है। जिसमें सौभाग्यवती सुहागिन सास नारियल लेकर आई है। माँ कहती है कि बेटी चुपकर! जोर से नहीं बोलते, तुझ पर 'भ्याई देवी' प्रसन्न हुई है, तू पुत्र जन्मेगी"। - हे काग ! तू प्रातः उड़ना, दूर जाकर मेरी माँ को संदेश देना कि तेरी पुत्री के स्वप्न में जेठानी हरी-हरी दाख (किशमिश) लेकर आई है। बेटी चुपकर! जोर से नहीं बोलते। तुझ पर 'भ्याई देवी' प्रसन्न हुई है, तू पुत्र को जन्म देगी। इस गीत में पुत्र जन्म को लेकर अति उत्साह है और कुछ सौभाग्यसूचक लक्षणों का वर्णन है।

स्वर लिपी :-

			2				0			3				
ग़सा-सारे		रेसा	नी	प़	प़	म़	प़प़	प़सा	सा	नी़	सा	रेग		सा
उड़े	यांऽ	वेऽ	का	ऽ	गा	ऽ	बड़ि	याऽ	़	या	ऽ	गाऽ		ऽ
सारे	रेम	म	गरे	ग	सा	नी़	सा	–	–	–	–	–		–
इऽ	कऽ	सु	न्हे	ड़ा	ले	ई	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ
ग़सा-सारे		रेसा	नी	नी़प़	प़	म़	प़	प़सा	सानी़	नी़	सा	रेग		सा
जाई	बोऽ	लेयां	मे	रिऽ	या	ऽ	अ	म्मा	नर	वे	द	णिऽ		या
सारे	रेम	म	गरे	ग	सा	नी़	सा	–	सा	–	–	–		–
धीऽ	ऽया	जो	सुऽ	प	ना	ऽ	हो	या	ऐ	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इसी प्रकार गाई जाएंगी।

22. गरीबणी दा जाया

काल़े महीने दियां न्हेरियां रातीं जन्मेया कृष्ण मुरारी,
नी मत दिंदियां सेइयो गाल़ी, नी मत दिंदिया भैणों गाल़ी,
नी गरीबणी दा जाया जी, गरीबणी दा जाया।

कित्तणे देवी-देव मनाए तां ए नेमत पाई,
नी मत दिंदियां सेइयो गाल़ी, नी मत दिंदियां भैणों गाल़ी,
नी गरीबणी दा जाया जी, गरीबणी दा जाया।

नौता-धोता पाट लपेट्या टिकलू बिन्दलू लाई,
नी मत दिंदियां सेइयो गाल़ी, नी मत दिंदियां भैणों गाल़ी,
नी गरीबणी दा जाया जी, गरीबणी दा जाया।

होरनां दे घरें पंच-सत्त पुतर मेरा इक गिरधारी,
नी मत दिंदियां सेइयो गाल़ी, नी मत दिंदियां भैणों गाल़ी,
नी गरीबणी दा जाया जी, गरीबणी दा जाया।

भावार्थ : इस गीत में साधारण परिवार में अभी-अभी मां बनी युवती के अन्देशों का वर्णन है। वह सोचती है कि पता नहीं समाज उसकी इस खुशी को किस तरह ग्रहण करता है। कहीं उन्हें उसके मां बनने से ईर्ष्या न हो। कहीं वे उसके बेटे के लिए बुरे शब्दों का प्रयोग न करे। काले महीने की अंधेरी रातों में कृष्ण मुरारी ने जन्म लिया है। सखियो, मेरे बच्चे के प्रति कुभाव मत रखना। उसके लिए गाली अर्थात् अपशब्दों का प्रयोग मत करना। अनेक देवी-देवताओं की अराधना के बाद मैंने यह नेमत अर्थात् बहुमूल्य उपहार प्राप्त किया है। मुझ गरीब मां के बच्चे के प्रति प्रतिकूल भाव मत रखना। नहला-धुला कर इसे वस्त्र में लपेट कर माथे पर टीका लगा दिया है। औरों के घर में तो पांच-सात पुत्र रत्न होंगे। मेरे घर यही एक गिरधारी है। इसे व्यंग्यवाणों या कड़वे शब्दों से आहत मत करना। मुझ गरीब मां के बेटे के प्रति दया भाव रखना। बच्चे के लिए आशीष मांगती मां का चित्रण है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
गरे	गरे	सासा	धधऺ	सासा	सारे	ग-	-प
काऽ	लेम्	हीने	दियां	न्हे	रियां	राऽ	ऽंती
गरे	गरे	सासा	धधऺ	धसा	-रे	गप	पप
जन-	मेया	कृऽ	ष्ण	मुरा	ऽरी	नीऽ	मत
गरे	गरे	सा-	साध	सा-	रे-	गप	पप
दिंदि	यांऽ	सेइ	योऽ	गाऽ	लीऽ	नीऽ	मत
गरे	गरे	सा-	साध	सा-	रे-	गप	प
दिंदि	यांऽ	भैऽ	णोऽ	गाऽ	लीऽ	नीऽ	ग
गरे	-रे	रेग	ग	रे-	सा-	-	-
रीऽ	ऽब	णीऽ	दा	जाऽ	याऽऽ	ऽ	ऽ

प्रस्तुत गीत में केवल स्थाई है। गीत की अन्य पंक्तियां इन्हीं स्वरों पर गाई जाएंगी।

23. छोटा देया बालक

छोटा देया बालक लग्गै माए छैल़ जी,
तोड़ तड़ागी पैरां घुंघराल़ू,
ठुमकुएं-ठुमकुएं चलो मेरे छैल़ जी।

काल़े महीने दियां न्हेरियां रातीं,
जन्मेया कृष्ण मुरारी मेरे छैल़ जी ।
घोल पतासा मैं गुड़-सक्कर दिंदिआं,
सोने दी लाँदी कटोरी मेरे छैल़ जी,
छोटा देया बालक लगे माए छैल़ जी ।

जां जम्मेयां जां दीपक बल़ेया,
लोई होइयां संसार मेरे छैल़ जी ।
छोटा देया बालक लग्गे माए छैल़ जी,
तोड़, तड़ागी पैरां घुंघराल़ू,
ठुमकुएं-ठुमकुएं चलो मेरे छैल़ जी ।

चनण कट्टी मैं पंघूड़ा बणानी आं,
रेशम डोरां लानी मेरे छैल़ जी ।
छोटा देया बालक लग्गे माए छैल़ जी,
तोड़, तड़ागी पैरां घुंघरालू,
ठुमकुएं-ठुमकुएं चलो मेरे छैल़ जी।।

भावार्थ : इस गीत में शिशु की लीलाओं का सुन्दर चित्रण हुआ है। छोटा सा बालक आज बड़ा सुन्दर लग रहा है। इसकी कमर में तड़ागी (करघनी) कसी है। पैरों में घुंघरू डालकर ठुमक-ठुमक चलता हुआ बहुत सुन्दर लग रहा है और चलते हुए सबका मन मोह रहा है। काले महीने की अंधेरी रात को इसने जन्म लिया है। मैं आज सोने की कटोरी में बताशा घोलकर दे रही हूँ। जब इसने जन्म लिया तो आलोकमयी दीप प्रज्ज्वलित हो उठा, जिससे सारे संसार में प्रकाश फैल गया। चन्दन को काटकर झूलना (पालना) बनवाती हूँ और उसमें रेशम की डोरें लगवाती हूँ जिसमें झूलता हुआ मेरा लाल दिव्य लग रहा है। इस गीत में बाल-सुलभ क्रियाओं के वर्णन के साथ-साथ ममतामयी मां द्वारा बच्चे को दिए जा रहे उपहारों का भी चित्रण है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
ग-	गसा	रेग	ग-	रे	-	सा	सा
छोऽ	टाऽ	देऽ	याऽ	बा	ऽ	ल	क
सारे	रेसा	सानी़	नी़	सा	-	रेम	-
लग	गैऽ	माऽ	ए	छै	ऽ	ऽल्	जी
म	म	ग	म	प	प	प	म
तो	ऽ	ड़	त	ड़ा	ऽ	गी	ऽ
पध	धप	पम	म	ग	रेग	म	म
पैऽ	रांऽ	घुंऽ	घ	रा	ऽऽ	लू	ऽ
ग-	गसा	रेग	ग-	रे	-	सा	सा
ठुऽ	मऽ	कुऽ	एंऽ	ठु	म	कु	एं
सारे	रेसा	सानी़	नी़	सा	-	रेऽ	-
चऽ	लोऽ	मेऽ	रे	छै	ल्	जीऽ	ऽ

प्रस्तुत गीत में केवल स्थाई है। गीत की अन्य पंक्तियां इन्हीं स्वरों पर गाई जाएंगी।

24. मेरा मारकण्डा

काले महीने न्हेरियां रातीं,
जन्मेया श्याम मुरारी ।
नी मेरा मारकण्डा...।।
जुग जिये नी मेरा मारकण्डा,
दुध पिये ना मेरा मारकण्डा ।

जां जम्मेया जाँ दीपक वलेया,
चौंई चक होई रहिआं लोई नी ।
नी मेरा मारकण्डा...।।

भन्न बतासा गुड़ सक्कर दिंदियां,
सोने दी कटोरी नी,
नी मेरा मारकण्डा...।

चन्नण कटी पंघूड़ा वणानी,
रेश्मी डोरा लाईयाँ नी,
नी मेरा मारकण्डा...।

तिजो दिह्ंगी मैं दूध कटोरी नी,
ऊपर दिह्ंगी मैं रोटी चूरी नी,
नी मेरा मारकण्डा...।।

भावार्थ : इस गीत का भावार्थ भी काले महीने के अन्य गीतों की तरह ही है। माँ कहती है कि मेरा लाड़ला मारकण्डा जुग-जुग जिये। यह दूध नहीं पीता। भादों मास की अन्धेरी रात में मेरे कृष्ण ने जन्म लिया। उसके जन्मते ही संसार आलोकमय हो उठा। प्रसन्न होकर मां गुड़-शक्कर व बताशे बांट रही है। चन्दन के पेड़ की लकड़ी से झूला बनवा कर रेशमी डोर लगवाई है। दूध की कटोरी में रोटी डाल कर खिला रही है। मां व पुत्र के बीच का स्नेह सम्बन्ध शब्दबद्ध हुआ है इस गीत में।

स्वर लिपी :-

		0				0	
ग-	ग	रे	रे	ग	–	सा	–
काऽ	ऽ	ले	म्	ही	ऽ	ने	ऽ
ग-	ग	रे	रे	ग	–	सा	–
न्हेऽ	ऽ	रि	यां	रा	ऽ	ती	ऽ
ग	ग	ग	रे	(रे)ग-	–	सा	सारे
ज	न्	मे	या	कृऽ	ऽ	ष्ण	मुऽ
रेग	गरे	रे	–	–	सा	सारे	पग
राऽ	रीऽ	नी	ऽ	ऽ	ऽ	मेऽ	राऽ
ग	–	(ग)रे	रेसा	सा	–	ध़	सा
मा	ऽ	र	कण्ऽ	डा	ऽ	जु	ग
रेग	गरे	रे	–	सा	–	सारे	पग
जीऽ	येऽ	नी	ऽ	ऽ	ऽ	मेऽ	राऽ
(प)ग	–	(ग)रे	रेसा	सा	–	ध़	सा
मा	ऽ	र	कण्ऽ	डा	ऽ	दु	ध
रेग	गरे	रे	–	सा	–	सारे	पग
पिऽ	येऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	मेऽ	राऽ
ग	–	(ग)रे	रेसा	सा	–		
मा	ऽ	र	कण्ऽ	डा	ऽ		

प्रस्तुत गीत में केवल स्थाई है। गीत की अन्य पंक्तियां इन्हीं स्वरों पर गाई जाएंगी।

25. चन्ने खड़ोई गोरी

चन्ने खड़ोई गोरी कागां उडारै,
कुण परौमणा आया घुमाणिया भाइया ....।
हत्थां भी धोऐ गोरी पैरां भी धोऐ,
वीर खड़ा है परौली, घुमाणियां भाइया ....।
किन्हीं तूं भेजया बीरा किन्हीं तूं घलेया,
किन्हीं मैं सद्‌यी बुलाई घुमाणिया भाइया ....।
अम्माँ मैं भेजया भैणे बापुऐ मैं घलेआ,
भाबिया सद्‌यी बुलाई मेरिए भैणे ।
चन्ने खड़ोई गोरी.............।।
किन्हीं तां भेजे चार कहार, किन्हीं तां भेजी पँजवीं दायी,
किन्हीं मैं सद्‌यी बुलाई घुमाणियां भाइया।
बापुएं भेजे चार कहार अम्मां भेजी पँजवीं दाई मेरिए भैणे।
चन्ने खड़ोई गोरी.............।।
क्या कुछ दैणा इन्हां चार कहारां,
क्या कुछ दैणा पँजवीं दाई घुमाणियां भाइया।
पँज रुपइए इन्हा कहाराँ, इक बगा पँजवी दाईआ,
घुमाणिया भाइया वीर खड़ा है परौली।

भावार्थ : पहाड़ी जनपद में प्रथा है कि पहले बच्चे को युवती अपने मायके में जन्म देती है। अतः वह बड़ी रीझों से मायके से आने वाले निमंत्रण की प्रतिक्षा करती है। इसी का चित्रण इस गीत में है। घर के बाहर खड़ी होकर गोरी काग उड़ा रही है। कहती है कि आज कोई पाहुन (मेहमान) आयेगा। मैं बलिहारी जाती हूँ, गोरी हाथ-पांव धोकर तैयार होती है। इतने में भाई बाहर आ खड़ा होता है। बहन भाई को कहती है कि भाई तुझे यहां किसने भेजा है और मुझे किसने बुलाया है। इस पर भाई कहता है कि मुझे माता-पिता ने यहां पर भेजा है और आपकी भाभी ने आपको बुलाया है। फिर बहन कहती है कि यह चार कहार किसने भेजे हैं और पाँचवी दाई किसने भिजवाई है। तो भाई कहता है कि पिता ने चार कहार भेजे हैं और माता ने पाँचवी दाई भिजवाई है। फिर बहन कहती है कि इन चारों कहारों और दाई को क्या कुछ देना है, तो भाई कहता है कि पाँच रुपये इन चारों कहारों को देने हैं और कपड़े इत्यादि इस दाई को उपहार स्वरूप देने हैं। गीत में पालकी उठाने वाले कहारों तथा आवश्यकता पड़ने पर उपचार करने में सक्षम दायी (जन्म प्रक्रिया में सहायतार्थ सहायिका) के सम्मान की भी चिन्ता है।

स्वर लिपी (अनिबद्ध प्रकार) :-

ग	मग	रेसा	सारे	रे	ग	मग	–
च	न्ने	खऽ	ड़ोऽ	ई	गो	रीऽ	ऽ
रेसा	सा	ऩिध़	ध़सा	–सा	रे–	–	–
काऽ	गां	उऽ	डाऽ	ऽऽ	रैऽ	ऽ	ऽ
गग	मग	रेसा	सारे	रे	ग	मग	रेसा
कुऽ	णऽ	पऽ	रौऽ	ऽ	म	णाऽ	आऽ
सा	–	ऩिध	धस	–सा	रे–	–	–
या	ऽ	घुऽ	मा	णिया	भाइ	या	ऽ
गग	मग	रेसा	सारे	रे	ग	मग	रेसा
कुऽ	णऽ	पऽ	रौऽ	ऽ	म	णाऽ	आऽ
सा–	–	–	–	–	–	–	–
याऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

26. बालक जम्मेया कुसी दा दिल

बालक जम्मेया कुसी दा दिल कम्बेआ,
कुसी दा दु:ख दूर होई गेया ।
बालक जम्मेया दादी दा दिल कम्बेआ,
दादे दा दु:ख दूर होई गेया ।
पंज लोक भी न खुशियां मनावंदे,
कि फुल्ल बरसांवदे, कि कंस बैरी तार होई गेया।
बालक जम्मेया ताई दा दिल कम्बेआ ।
ताये दा दु:ख दूर होई गेया,
पंज लोक भी न खुशियां मनावंदे,
कि फुल्ल बरसांवदे, कि कंस बैरी तार होई गेया ।
बालक जम्मेया चाची दा दिल कम्बेआ
चाचे दा दु:ख दूर होई गेया
पंज लोक भी न खुशियां मनावंदे
कि फुल्ल बरसावंदे, कि कंस बैरी तार होई गेया।।

भावार्थ : गीत में शिशु जन्म पर कल्पना की गई है कि किसी को प्रसन्नता हो रही है परन्तु कोई भयभीत हो रहा है। वास्तव में यह संकेत कंस की ओर है। अन्तता उसका भी उद्धार ही हुआ है। घर में बालक ने जन्म लिया, पूरा गांव बध ाई गीतों (सोहर) से गूंज उठा। गांव की हर पड़ोसन, रिश्तेदार वहां पहुंच कर बध ाई देती, गाती व खुशियां बांटती है। ऐसा लगता है मानो इस घर में समूचा ब्रजमण्डल आ गया है। शिशु जन्म पर किस प्रकार वातावरण में आनन्द छा जाता है, यही भाव गीत से व्यक्त होता है।

इस गीत में एक मनोवैज्ञानिक सत्य भी उदघटित हुआ है कि सदभाव रखने वाले लोगों को कोई भी अच्छा शुभ समाचार प्रसन्नता देता है परन्तु दुर्भावना रखने वाला व्यक्ति भय के अंदेशों से व्याकुल हो उठता है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
		ध़	सासा	सा	रे-	रे	ग
		बा	लक	ज	म्मे	या	कु
ग	रे	रे	सा	सा	रे-	रे	ग
सी	दा	दि	ल	क	म्बे	आ	कु
ग	रे	रे	सा	ग	-ग	रे	-रे
सी	दा	दु	ख	दू	ऽर	हो	ईऽ
सा	--	ध़	-सा	सा	रे	रे-	ग
गे	या	पं	ऽज	लो	ऽ	कभी	न
ग-	रे-	रे-	सा	सा	रे	रे-	ग-
खुऽ	शिऽ	यांऽ	म	ना	ऽ	वंदे	किऽ
ग-	रे	रे	सा	सा	रे	रे-	ग-
फुल	ल	व	र	सां	ऽ	वदे	किऽ
ग-	ग-	रे-	सा-	ग	-ग	रे	-रे
कंऽ	सऽ	वैऽ	रीऽ	ता	ऽर	हो	ईऽ
सा	ऽ						
गे	या						

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

27. फुल्लां चुगी-चुगी

फुल्लां चुगी-चुगी भरियां छड़ोलियां,
हारां गुंदी गले़ पायां वे वासूदेबे देआ नन्दा ।
माता भी गोरी तेरे पिता भी गोरे,
तू रंग मामे दा लेआ वे वासूदेबे देआ नन्दा ।
फुल्लां चुगी-चुगी भरियां छड़ोलियां,
हारां गुंदी गले़ पायां वे वासूदेबे देआ नन्दा ।
दादी भी गोरी तेरे दादा भी गोरे,
तू रंग बुआ दा लेया वे वासूदेबे देआ नन्दा ।
फुल्लां चुगी-चुगी भरियां छड़ोलियां,
हारां गुंदी गले़ पायां वे वासूदेबे देआ नन्दा ।
नानी भी गोरी तेरे नाना भी गोरे
तूं रंग मासिया दा लेआ वे वासूदेबे देआ नन्दा ।
फुल्लां चुगी-चुगी भरियां छड़ोलियां
हारां गुंदी गले़ पायां वे वासूदेबे देआ नन्दा।

भावार्थ : जन्म के अवसर पर मन की प्रसन्नता को हास-परिहास में अभिव्यक्त करने की प्रथा है। महिलाएं, अधिकांशता सांवले-सलोने कन्हैया को ही केन्द्र में रख कर छेड़-छाड़ करती हैं। गीत आरम्भ होता है कृष्ण के अभिनन्दन से। फूल चुन-चुन कर छड़ोलिया (बांस से बनी खुली-गोलाकार टोकरी) भर ली है। हार गून्थ लिए हैं, वासुदेव के पुत्र, तुम इन्हें धारण करो। फिर कहती हैं कि तुम्हारी मां तथा पिता दोनों गौरवर्णीय हैं। तुमने अपने मामा का रंग लिया है। इसी तरह वह दादा-दादी तथा नाना-नानी आदि सम्बन्धियों का जिक्र करती हैं और मामा के बाद बुआ या मासी के सांवले वर्ण की बात कह कर नवजात के माध्यम से परिजनों से हंसी-ठिठोली करती हैं।

स्वर लिपी :-

			2				0			3			
ध़	–	–	सा	–	सा	–	(ग)रे	–	सा	सा	–	रे	ग
फु	ऽ	ऽ	लां	ऽ	चु	ऽ	गी	ऽ	ऽ	चु	ऽ	गी	ऽ
ग	–	ग	रे	–	(प)ग	–	सा	–	सा	(सा)ध	–	–	–
भ	रि	ऽ	यां	ऽ	छ	ऽ	ड़ो	ऽ	लि	यां	ऽ	ऽ	ऽ
ध़	–	–	सा	–	सा	–	रे	–	सा	सा	–	रे	ग
हा	ऽ	ऽ	रां	ऽ	गुं	ऽ	दी	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ले़	ऽ
ग	रे	–	रे	–	–	–	–	–	–	सा	–	रे	ग
पा	यां	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वा	ऽ	सू.	ऽ
ग	–	ग	रे	–	(प)ग	–	सा–	–	सा	(सा)ध	–	–	–
दे	ऽ	ऽ	वे	ऽ	दे	आ	नन्	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ

गीत के अन्य बोल भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाए जाएंगे।

28. मेरे लाल तिज्जो कैहदा है चॉअ

मेरे लाल तिज्जो कैह्दा है चॉअ्,
मेरिये माए मिन्जो कुण्डलां दा चॉअ्।
कुण्डल तेरे दादा ल्यावेंगें,
गले जो मच्छली ल्यावेंगें,
पैरां जो झांझर ल्यावेंगें,
झांझर छुणमुण छुणकेगी,
गीगैं धड़बड़ नच्चणा जी,
मेरे लाल तिजो ...।

कुण्डल तेरे चाचा ल्यावेंगें,
गले जो मच्छली ल्यावेंगें,
पैरां जो झांझर ल्यावेंगें,
झांझर छुणमुण छुणकेगी,
गीगैं धड़बड़ नच्चणा जी,
मेरे लाल तिजो ...।

कुण्डल तेरे मामा ल्यावेंगें,
गले जो मच्छली ल्यावेंगें,
पैरां जो झांझर ल्यावेंगें,
झांझर छुणमुण छुणकेगी,
गीगैं धड़बड़ नच्चणा जी,
मेरे लाल तिजो ...।

भावार्थ : इस गीत में चाव से भरी मां अपने पुत्र से उसकी इच्छा पूछ रही है कि उसे क्या चाहिए। फिर उसके द्वारा चाही या मांगी गई वस्तु वह निकट सम्बन्धियों से दिलवाने का भरोसा दे रही है। बेटे को कुण्डलों का चाव है, जो उसके दादा जी लाएंगे। साथ में गले के लिए मीन जड़ा हार तथा पैरों के लिए झांझरें लाएंगे। घुंघरू लगी झांझर छम-छम बाजेगी और नन्हा जल्दी-जल्दी पांव धरते हुए झूम कर नाचेगा। यही सब उपहार वह चाचा तथा मामा आदि सम्बन्धियों द्वारा लाने की भी बात करती है। बच्चे को रिश्तों का परिचय देकर उसे इन रिश्तों की स्नेह डोरी में बांधने का प्रयास इस गीत में किया गया है।

स्वर लिपी :-

		0				0			
रे-	-सा	निध़	धनि़	सा-	-सा	सारे	रेम		
मेऽ	ऽऽ	रेऽ	ऽऽ	लाऽ	ऽल	तिऽ	जोऽ		
म-	-ग	रेसा	सारे	^गरे-	--	--	सा-		
कैऽ	ऽह्	दाऽ	हैऽ	चाँऽ	अ़ऽ	ऽऽ	ऽऽ		
रे-	-सा	निध़	धनि़	सा-	-सा	सारे	रेम		
मेऽ	ऽऽ	रिऽ	येऽ	माऽ	ऽए	मिंऽ	जोऽ		
म-	-ग	रेसा	सारे	^गरे-	--	--	सा-		
कुंऽ	डल	लाऽ	दाऽ	चाँऽ	अ़ऽ	ऽऽ	ऽऽ		
मरे	रेम	म-	मग	रेरे	-म	मम	मग		
कुंऽ	डल	तेऽ	रेऽ	दादा	ऽऽ	ल्ऽ	यावें		
रे-	--	मम	मम	रेरे	रेम	मम	मग		
गेऽ	ऽऽ	गले	जोऽ	मच	छली	ल्ऽ	यावें		
रे-	--	मम	मग	रेरे	रेम	मम	मग		
गेऽ	ऽऽ	पैरां	जोऽ	झांऽ	झर	ल्ऽ	यावें		
रे-	--	म-	मग	रे-	रेसा	नीध़	धनी़		
गेंऽ	ऽऽ	झांऽ	झर	छुण	मुण	छुण	केऽ		
साऽ	--	म-	मग	रे-	रेसा	नीध़	धनी़	सा-	-
गीऽ	ऽऽ	गीऽ	गैंऽ	धड़	बड़	नऽ	च्च	णाऽ	

29. बाला जन्मेया कुनी-कुनी

बाला जन्मेया कुनी-कुनी सुणेया, कौण बण्डे बधाइयां जी,
अज मेरे बाले ने जन्म लेआ।

बाला जन्मेया दादे ने सुणेया, दादी बण्डे बधाइयां जी,
अज मेरे बाले ने जन्म लेआ।

बाला जन्मेया ताये ने सुणेया, ताई बण्डे बधाइयां जी,
अज मेरे बाले ने जन्म लेआ।

बाला जन्मेया मामे ने सुणेया, माम्मी बण्डे बधाइयां जी,
अज मेरे बाले ने जन्म लेआ।

इन्हां पुरोहतां क्या कुछ देइये, पंज रुपइए पण्डतां पुरोहतां,
मामियां जो लेई गये गद्दी जी, अज मेरे बाले ने जन्म लेआ।

बाला जन्मेया नाने ने सुणेया, नानी बण्डे बधाइयां जी,
अज मेरे बाले ने जन्म लेआ।

इन्हां पुरोहतां क्या कुछ देइये, पंज रुपइए पण्डतां पुरोहतां,
नानियां जो लेई गये नाई जी, अज मेरे बाले ने जन्म लेआ।

भावार्थ :- गीत में पुत्र जन्म का समाचार देने का तथा इस अवसर पर बधाई स्वरूप भेंट देने का वर्णन है। .... शिशु जन्म हुआ है। किस-किस ने यह समाचार सुना है और कौन बधाइयां बांट रहा है। उत्तर दिया जा रहा है कि दादा को समाचार दिया गया है अर्थात् उन्होंने यह सूचना सुनी है और दादी बधाइयां बांट रही है। इसी तरह ताया, चाचा व मामा आदि का नाम लेकर शुभ समाचार सुनने तथा तायी, चाची व मामी द्वारा उपहार देने का वर्णन गीत में है। गीत के दूसरे हिस्से में छेड़-छाड़ है। .... इस पुरोहित को क्या दिया जाए के उत्तर में कहा गया है कि पुरोहित को पांच रुपए दे दिए जाएं परन्तु शिशु की मामी को गद्दी भगा ले गया। यह गीत क्योंकि शिशु के पिता के घर गाया जा रहा है इसलिए छेड़-छाड़ में मामी व नानी का नाम है। वास्तव में यह उन्हें जन्मोत्सव में शामिल करने का एक बहाना है। ये परिजन अनुपस्थित रहते हुए भी अपनी उपस्थिति दर्ज करा देते हैं।

स्वर लिपी :-

		0				0	
ध़-	ध़सा	सा-	सारे	रेग	रेसा	सा-	सा-
बाऽ	लाऽ	जन्	मेया	कुनी	कुनी	सुणे	याऽ
रेग	गम	गरे	रेसा	सा	साग	रे-	रे-
कौऽ	णव	ण्डे	वऽ	धा	इयां	जीऽ	ऽऽ
सासा	सानी़	ध़-	नी़-	सा-	रेसा	सा-	सा-
अज	स्हाढ़े	बाऽ	लेने	ज-	न्म	लेऽ	याऽ
ध़-	ध़सा	सा-	सारे	रेग	रेसा	सा-	सा-
बाऽ	लाऽ	जन्	मेया	दाऽ	देने	सुणे	याऽ
रेग	गम	गरे	रेसा	सा	साग	रे-	रे-
दाऽ	दीब	ण्डे	बऽ	धा	इयां	जीऽ	ऽऽ
सासा	सानी़	ध़-	नी़-	सा-	रेसा	सा-	सा-
अज	स्हाढ़े	बाऽ	लेने	जऽ	न्म	लेऽ	याऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

30. उठो–उठो जी पिया

उठो–उठो जी पिया, उठो जागो जी पिया,
मेरिया सस्सू जो तुरत बुलाएओ रे पिया।

उठो–उठो नी माए उठ जाग नी माए,
तेरिया नूआँ नैं तुरत बुलाएओ जी माए।

तुसां आओ नी सस्सू आई के बैठो नी सस्सू,
मेरिया रेइयां–गेइयां अतल–पलंग ते रैइयाँ।

उठो–उठो जी पिया, उठो जागो जी पिया,
मेरिया जेठाणिया जो तुरत बुलाएओ जी पिया।

उठो–उठो नी भाबो उठो जागो नी भाबो,
तेरिया दराणियां नैं तुरत बुलाएओ जी भाबो।

तुसां आओ नी भैणे आई के बैठो नी भैणे,
मेरिया रेइयां–गेइयां अतल–पलंग ते रैइयां।

उठो–उठो जी पिया, उठो जागो जी पिया,
मेरिया दराणिया जो तुरत बुलाएओ जी पिया।

उठो–उठो नी भाबो उठो जागो नी भाबो,
तेरिया जेठाणिया नैं तुरत बुलाएओ जी भाबो।

तुसां आओ नी भैणे आई के बैठो नी भैणे,
मेरियां रेइयां–गेइयां अतल पलंग ते पैइयां।"

भावार्थ : इस गीत में प्रसवास्था का चित्रण है। गर्भवती पत्नी अपने पति को उठाकर कहती है कि मेरी सास को जल्दी बुलाकर ले आओ, पति अपनी मां को उठाता है और कहता है कि आपकी बहू ने आपको जल्दी बुलाया है। सास के आने पर बहू कहती है कि मैं विवश–लाचार हो गई हूँ। कुछ कर नहीं सकती। पलंग तक सीमित हो गई हूँ। इसी तरह वह अन्य सम्बन्धियों को भी बुलाती कि वे शिशु जन्म में उसकी सहायता करें – अर्थात् जेठानी, देवरानी तथा ननद सभी उसकी स्मृतियों में हैं। वास्तव में हमारे लोकगीतों में शिशु जन्म को व्यक्तिगत नहीं समष्टीगत पर्व बना दिया गया है। जीवन के सुख व संघर्ष सब, सांझी मिट्टी पर सांझी संवेदना के उपक्रम हैं।

स्वर लिपी :-

		0				0	
		सा	सा	सा	रे	म	म
		उ	ठो	उ	ठो	जी	पि
प	–	प	पम	मप	–ध	धप	पम
या	ऽ	उ	ठोऽ	जाऽ	ऽगो	जीऽ	पिऽ
ग	रे	पम	मग	रे	ग	सा	सानी
या	ऽ	मेरि	याऽ	स	स्सू	ऽ	जो
ऩी	सा	रे	म	म	मग	गरे	रेसा
तु	र	त	बु	ला	एओऽ	रेऽ	पिऽ
सा	ऽ						
या	ऽ						

गीत की अन्य पंक्तियां भी इसी प्रकार गाई जाएंगी।

31. गुजरियां आइयां

बालक दे जन्म पर गुजरियां आइयां,
औंदियां गुजरियां गान बधाइयां ।
मामे कंस जो बधाइयां, मामी राणी जो बधाइयां,
अन्दर बधाइयां बाह्र बेह्ड़े जो बधाइयां,
बालक दे जन्म ....।

दादे राजे जो बधाइयां, दादी राणी जो बधाइयां,
अन्दर बधाइयां बाह्र बेह्ड़े जो बधाइयां,
बालक दे जन्म ....।

ताये राजे जो बधाइयां, ताई राणी जो बधाइयां,
अन्दर बधाइयां बाह्र बेह्ड़े जो बधाइयां,
बालक दे जन्म........।

चाचे राजे जो बधाइयां, चाची राणी जो बधाइयां,
अन्दर बधाइयां बाह्र बेह्ड़े जो बधाइयां,
बालक दे जन्म........॥

भावार्थ :- इस बधाई गीत में घर-घर में, शिशु जन्म पर बधाई देने पहुंची गुजरियों द्वारा बधाई देने का वर्णन है। जन्म के अवसर पर गुजरियाँ आई हैं तथा वे बधाई गीत गा रही हैं। यहां भी शिशु, कृष्ण रूप में ही चित्रित हैं। क्योंकि पहली बधाई मामा कंस को तथा मामी रानी को दी जा रही है। अन्दर-बाहर सभी को अर्थात घर परिवार के साथ-साथ गांव में रहने वाले लोगों को भी बधाई दी जा रही है। ये बधाई गीत क्रमशः दादा-दादी, ताया-तायी तथा चाचा-चाची को सम्बोधित हैं। खुशी में परिजन तथा समाज सभी को शामिल किया जा रहा है। लोक-चेतना में परिवार बहुत विस्तृत है। आनन्द में सभी की सांझेदारी रेखांकित की गई है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
सा-	रेरे	रे	ग	रे	रे	सा	ध़
बाऽ	लक	दे	ज	न	म	प	र
सा-	रे	रे	पग	रे	रे	सा	सा
गुऽ	ज	रि	यां	आ	ऽ	इ	यां
सा-	रेरे	रे	ग	रे	रे	सा	ध़
औंऽ	ऽऽ	दि	यां	गु	ज	रि	यां
सा-	रे-	रे	पग	रे	रे	सा	सा
गाऽ	ऽऽ	न	ब	धा	ऽ	इ	यां

गीत के अन्य बोल भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाए जाएंगे।

32. पिया लक्कैं मेरैं बड़ी पीड़

"पिया लक्कैं मेरैं बड़ी पीड़ सस्सू जी वैद सदावेगी,
गोरिये सस्सू जो बोले मन्दे बोल, सस्सू जी किंया आवेगी,
पिया सद्‌दो गुआँडणीं चार, जन्मे नन्द लाल सस्सू जी दौड़ी आवेगी।

पिया लक्कैं मेरैं बड़ी पीड़ जेठाणी वैद सदावेगी,
गोरिये जठाणी जो बोले मन्दे बोल, जठाणी जी नहीं आवेगी,
पिया सद्‌दो गुआँडणीं चार, जन्मे नन्द लाल जठाणी दौड़ी आवेगी।

पिया लक्कैं मेरैं बड़ी पीड़ दराणी जी वैद सदावेगी,
गोरिये दराणी जो बोले मन्दे बोल, दराणी किंया आवेगी,
पिया सद्‌दो गुआँडणीं चार, जन्मे नन्द लाल दराणी जी दौड़ी आवेगी।

पिया लक्कैं मेरैं बड़ी पीड़ नणद जी वैद सदावेगी,
गोरिये नणदा जो बोले मन्दे बोल, नणद किंया आवेगी,
पिया सद्‌दो गुआँडणीं चार, जन्मे नन्द लाल नणद जी दौड़ी आवेगी।

भावार्थ : इस लोकगीत में सम्बन्धों का सूक्ष्म व मनोवैज्ञानिक वर्णन किया गया है। मां बनने जा रही स्त्री आश्वस्त है कि शिशु-जन्म पर उससे रूठी हुई सास, जेठानी व ननद आदि सब उसकी खुशी में सम्मिलित हो जाएंगी। पत्नी अपने पति को उठाकर कहती है कि मेरी कमर में पीड़ा हो रही है अर्थात प्रसवावस्था अति निकट है। अत: मेरी सास को बुला भेजो। तो पति कहता है कि तूने अपनी सास के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया है इसलिए वह नहीं आएंगी। तो पत्नी कहती है कि मेरी चार पड़ोसनें बुला लो। जब घर में बालक जन्म ले लेगा तो मेरी सास भी दौड़ी चली आएंगी। इसी तरह वह जेठानी, देवरानी व ननद का भी नाम लेती है। पति फिर भी वही दोहराता है कि वे नहीं आएंगी। पत्नी को विश्वास है कि शिशु जन्म का समाचार पाकर वे दौड़ी चली आएंगी। रिश्तों का मनोविज्ञान स्त्री, पुरूष से कहीं ज्यादा समझती है। इन्हें बनाए रखने के लिए वह शब्दों का तिलिस्म रचती है और नाटक करने से भी परहेज नहीं करती। अन्ततः सम्बन्ध मधुर हो जाते हैं।

स्वर लिपी :-

		0				0	
		सा-	सारे	ग॒रे	रेसा	सानी॒	नी॒ध़
		पिया	याऽ	ऽऽ	लक्	कैंऽ	मेऽ
ध़-	सा-	रेग॒	सारे	रेम	ग॒	रे	साध़
रैंऽ	ऽऽ	बऽ	ड़ीऽ	पीऽ	ऽ	ड़	सस्
ध़सा	सा	रेग॒	सारे	^{म}ग॒	-	रेग॒	रेसा
सूऽ	जी	वैऽ	दस	दा	ऽ	वेऽ	ऽऽ
सा-	--						
गीऽ	ऽऽ						
		सा-	सारे	ग॒रे	रेसा	सानी॒	नी॒ध़
		गोरि	येऽ	ऽऽ	सऽ	स्सू	जोऽ
ध़-	सा-	रेग॒	सारे	रेम	ग॒	रे	साध़
वोऽ	लेऽ	मन्	देऽ	बोऽ	ऽ	ल	सऽ
ध़सा	सा	रेग॒	सारे	^{म}ग॒	-	रेग॒	रेसा
स्सू	जी	किऽ	यांऽ	आ	ऽ	वेऽ	ऽऽ
सा-	--						
गीऽ	ऽऽ						

गीत की अन्य पंक्तियां भी इसी प्रकार गाई जाएंगी।

33. सौहरा बोलै नूंए

सौहरा बोलै नूंए पी लाचियां,
तैं स्हाढ़ा कुल जे बधाया चत्तर नूएं पी लाचियां।
देह्इयां दी अतली मैं पतली,
मरुह्ए केह्ड़ी डाली़ लाचियां स्हाढ़ा दुख जी हरेया।

जेठ बोलै भाबो पी लाचियां,
तैं स्हाढ़ा कुल जे बधाया चत्तर भाबो पी लाचियां।
देह्इया दी अतली मैं पतली,
मरुह्ये केह्ड़ी डाली़ लाचियां स्हाढ़ा दुख जी हरेया।

देवर बोलै भाबो पी लाचियां,
तैं स्हाढ़ा कुल जे बधाया चत्तर भाबो पी लाचियां।
देह्इया दी अतली मैं पतली,
मरुह्ये केह्ड़ी डाली़ लाचियां स्हाढ़ा दुख जी हरेया।

कन्त बोलै नाजो पी लाचियां,
तैं स्हाढ़ा कुल जे बधाया चत्तर नाजो पी लाचियां।
देह्इयो दी अतली मैं पतली,
मरुह्ये केह्ड़ी डाली़ लाचियां स्हाढ़ा दुख जी हरेया।

भावार्थ : इस गीत में नवजात शिशु की मां के प्रति परिवार का आभार ज्ञापन व्यक्त हुआ है। उसके स्वास्थ्य की चिन्ता भी इसमें शब्दबद्ध हुई है। इस गीत का महत्त्व इसलिए भी है कि इसमें शिशु की मां के प्रति यह आभार ज्ञापन तथा उसके लिए चिन्ता-सरोकार, परिवार के प्रमुख पुरूष सदस्यों की ओर से है। गीत ससुर से आरम्भ होता है कि वह बहू को इलायची डला पानी, दूध तथा काढ़ा आदि पीने का अनुरोध कर रहे हैं। वह कहते हैं कि बहू तुमने हमारे वंश में वृद्धि की है तथा तुम अत्यन्त बुद्धिमान हो। बहू कृतज्ञ भाव से कहती है कि इन्हीं इलायचियों के सेवन से वह वायु-विकार से मुक्त होकर पतली व स्वस्थ हो सकी है। इन इलायचियों ने उसका दु:ख क्लेश हर लिया है। अन्य

स्वर लिपी :-

			2				0			3			
सा	रे	सा	सा	नी̣	नी̣	नी̣	नी̣	सा	-	रे	सा	रे	म
सौ	ह	ऽ	रा	ऽ	वो	ऽ	लै	ऽ	ऽ	नूं	ऽ	ए	ऽ
म	-	-	रे	-	रे	सा	सा	-	-	-	-	-	-
पी	ऽ	ऽ	ला	ऽ	चि	ऽ	यां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	रे	सा	नी̣	सा	सा	-	नी̣	सा	-	रे	सा	सा	रे
तैं	ऽ	ऽ	स्न	हा	ढ़ा	ऽ	कु	ल	ऽ	जे	ऽ	ब	ऽ
मरे	-	-	सा	नी̣	नी̣	-	नी̣	सा	-	रे	सा	रे	म
धा	ऽ	ऽ	या	ऽ	च	ऽ	त्त	र	ऽ	नूं	ऽ	ए	ऽ
म	रे	-	रे	-	सा	-	मरे	-	-	-	-	-	-
पी	-	-	ला	ऽ	चि	ऽ	यां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

प्रस्तुत गीत में केवल स्थाई है। गीत की अन्य पंक्तियां इन्हीं स्वरों पर गाई जाएंगी।

सम्बन्धी, जेठ तथा देवर भी इसी तरह अनुरोध करते हैं। पुत्र की मां से यही निवेदन उसका पति भी करता है। सभी के प्रति कृतज्ञता का भाव अभिव्यक्त किया गया हो।

34. नणद मंगै कंगणा

नणद मंगै कंगणा बाले दी बधाई,
इक रुपइया मेरे सौह्‌रे दी कमाई है,
अद्‌ठन्नी लेइ लै नणदे बाले दी बधाई,
नणद मंगै कंगणा बाले दी बधाई।

इक अद्‌ठन्नी मेरे जेठे दी कमाई है,
चुआनी लेइ लै नणदे बाले दी बधाई,
नणद मंगै कंगणा बाले दी बधाई।

इक चुआनी मेरे द्‌योरे दी कमाई है,
दुआनी लेइ लै नणदे बाले दी बधाई,
नणद मंगै कंगणा बाले दी बधाई।

इक दुआनी मेरे कन्दे दी कमाई है,
अंगूठा लेइ लै नणदे बाले दी बधाई,
नणद मंगै कंगणा बाले दी बधाई।

भावार्थ : बधाई गीतों में हास-परिहास के साथ-साथ व्यंग्य भी है। इस गीत में पुत्र-जन्म के शुभ अवसर पर पुत्र की मां की ननद बच्चे के जन्म पर बधाई के रूप में कंगन मांगती है। उसकी भाभी परिवार की कमाई का व्यौरा देते हुए समझाती है। कमाई इतनी नहीं है कि सोने के कंगन दे दिए जाएं। ससुर की कमाई मात्र एक रुपया है। अतः यही संभव है कि तुम उसका आधा अर्थात आठ-आने ले लो। जेठ-देवर तथा पति भी इतना ही कमाते हैं। इसलिए उनकी आधी कमाई ही दी जा सकती है। आठ आने से चार आने पर आती है। फिर अन्त में कहती है कि पति की कमाई तो मात्र दो आने है अतः बधाई स्वरूप अंगूठा ही मिलेगा अर्थात कुछ भी नहीं मिलेगा। स्वर्ण कंगन बधाई स्वरूप देने का प्रश्न ही नहीं .....

स्वर लिपी :-

		0				0	
			ध़सा	गग	रेग	प-	म-
			न	णद्	मगै	कंग	णा
गग	रेग	सा-	सा-	सासा	गग	पप	पप
बाले	दीब	धाऽ	ईऽ	इक	रुप	इया	मेरे
मंमं	मंप	गम	ग-	साग	रेग	पप	म-
सौहरे	दीक	माई	हैअ	ठनी	लेले	नण	देऽ
गग	रेग	सा-	सा-				
बाले	दीब	धाऽ	ईऽ				

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

35. औखिया दा मारेया

औखिया दा मारेया माए तेरे मैं आया,
तैं मिन्जो चोरी लगाई,
सुण मेरी माए, मैं नैंई मख्खण खाया।

हत्थडू भी बन्ने माता पैरू भी बन्ने,
छमकियां, छमकाया सुण मेरी माए
मैं नैंई मख्खण खाया।

ढेई पेया अगणे ताँ चुकेया नरैणे
माता रेही पछतान्दी
सुण मेरी माए, मैं नैंई मख्खण खाया।

हत्थडू भी खोले माता पैरू भी खोले
मीड़ी-झम्बी गले लाया
सुण मेरी माए, मैं नैंई मख्खण खाया।

भावार्थ : यह गीत सूरदास के प्रसिद्ध पद्यांश का भावानुवाद है। माखन चुराने पर यशोदा द्वारा डांट पड़ने पर कृष्ण, शिशु सुलभ बहाने बना कर मां को भावुक कर देते हैं। उपालम्भ देते हुए कहते हैं कि मैं कठिनाई में पड़ने की वजह से तुम्हारे घर आया हूं और तुम मुझ पर चोरी का आरोप लगा रही हो। मैंने माखन नहीं खाया। फिर भी तुमने मेरे हाथ-पांव बांधाकर मुझे छड़ी से मारा। बंधे हाथ-पांव से चलने के प्रयास में कृष्ण आंगन में गिर पड़े तो साक्षात विष्णु ने थाम लिया। यह दैवी चमत्कार देख कर यशोदा मां ने कन्हैआ को बांहों में भींच कर गले से लगा लिया। कृष्ण मनुहारपूर्वक कहते हैं कि मैंने माखन नहीं खाया।

कृष्ण की बाल-लीलाओं का चित्रण, कांगड़ा के अनेक जन्म गीतों में है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
	पप़	ध़ऽ	प़ऽ	ध़ऽ	साध़	सा	रे
	औखि	याऽ	दाऽ	माऽ	रेया	मा	ए
ग	ग	ग	गरे	परेग	रेसा	सा	–
ऽ	ते	रे	मैंऽ	आऽ	ऽऽ	या	ऽ
–	ग–	ग–	पग	ग–	––	रे–	सा
ऽ	तैंऽ	मिंऽ	जोऽ	चोऽ	ऽऽ	रीऽ	ल
रेग	सा	–	पप़	प़ध़	ध़सा	सा	रे
गा	ई	ऽ	सुण	मेऽ	रीऽ	मा	ए
ग	ग	–	रेसा	सा–	–	ध़	सासा
ऽ	मैं	ऽ	नैंऽ	ई	ऽ	म	ख्खण
रेग	रेसा	–	–	–	–	–	–
खाऽ	याऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

गीत के अन्य बोल भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाए जाएंगे।

36. चरखा कतैन्दी गौरी

चरखा कतैन्दी गोरी, माला बटान्दी,
नणद परौणी आई ऐ।
ओयां नी नणदे बैठ पलंग ते,
मंगी लै बीरे ते बधाई।

सूट नी लैणा बीरा, साड़ी नी लैणी वीरा,
लैणा है भावो दा हार वे .....,
हार नी लैणा भैणे दित्तया गोरी देयां मापेयां।

गाईयां नी लैणियां वीरा, भैंसां नी लैणियां वीरा,
लैणा है भावो दा हार वे.....,
हार नी लैणा भैणे दित्तया गोरी देयां मापेयां।

ज़मीन नी लैणी वीरा, ज़गीर नी लैणी वीरा,
लैणा है भावो दा हार वे.....,
हार नी लैणा भैणे दित्तया गोरी देयां मापेयां।

भाण्डे नी लैणे वीरा......... नी लैणे वीरा,
लैणा है भावो दा हार वे.....,
हार नी लैणा भैणे दित्तया गोरी देयां मापेयां।

भावार्थ :- इस बधाई गीत में भी ननद-भाभी के बीच संवाद है परंतु भाभी बड़ी चतुराई से अपने पति के माध्यम से ननद को उत्तर दिलवा रही है। चरखा कात रही तथा माला बनाती हुई गोरी की ननद मायके से अतिथ्य के लिए आती है। भाभी उसे कहती है कि वह अपने भाई से पुत्र जन्म पर बधाई ले ले। ननद स्पष्ट कर देती है कि उसे वस्त्र, पशु- धन, जमीन-जागीर तथा बर्तन आदि नहीं चाहिए। परंतु भाई भी उतनी ही स्पष्टता से समझा देता है कि बहन तुम हार नहीं ले सकती क्योंकि यह हार गोरी अर्थात मेरी पत्नी के मायके से मिला है। यह उसके मां-बाप का दिया उपहार है। अधिकांश गीतों में पति, पत्नी से जबरन, अपनी बहन द्वारा मांगा गया गहना दिलवा देता है। परन्तु यहां इस गीत में अत्यन्त कोमल भाव है। पति अपनी पत्नी की भावनाओं का ध्यान रख रहा है। हर स्त्री को अपने मायके से मिला उपहार अत्यन्त प्रिय होता है। वह उस पर अपना अधिकार समझती है व मानती है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
	ध़ध़	सा–	सा	सारे	रेसा	रेग	(प)गरे
	चर	खाऽ	क	तैंऽ	दीऽ	गोऽ	रीऽ
–	रेग	रेसा	सा	सारे	रेसा	रेग	(प)गरे
ऽ	माऽ	ला़	ब	टाऽ	न्दी	गो	री
–	रेग	रेसा	सा	सारे	रेसा	रेग	गरे
ऽ	नण	ऽद्	प	रौऽ	ऽऽ	णी	ऽऽ
(ग)रे	सा	सा	–	–	–	–	–
आ	ई	ऐ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	ध़ध़	सा–	सा	सारे	रेसा	रेग	गरे
ऽ	ओऽ	यांऽ	नी	नऽ	णऽ	देऽ	ऽऽ
–	रेग	रेसा	सा	सारे	रेसा	रेग	गरे
ऽ	बैऽ	ठ	प	लंऽ	गऽ	तेऽ	ऽऽ
	रे–	गरे	रेसा	सा–	सारे	रेग	गसा
ऽ	मंऽ	गी	लैऽ	बीऽ	रेऽ	ते	बऽ
रे	सा	रे	–	–	–	–	–
धा	ई	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

गीत के अन्य बोल भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाए जाएंगे।

37. हरियावल गीगा पाल़णा

छणकण लगी आरसी, छणकण सुन्ने दे बोर,
नी हरियावल गीगा पाल़णा।

पंज रुपइये दाइया जो दिन्नि आं,
कुछ्छड़ मिलेया लाल ।
नी हरियावल गीगा पाल़णा ।।

घोल़ पतासा गुड़ सक्कर दिन्नि आं,
सुन्ने दी कटौरी,
नी हरियावल गीगा पाल़णा।

चनण कटी, पंघूड़ा बणानी आं,
रेशमी डोरा लाईयाँ,
नी हरियावल ...।

औंदे तां जांदे नन्ददेव झूटांदे,
गोपिया देन झुटारे
नी हरियाबल ...।

भावार्थ : जन्मगीतों में नवजात से सम्बन्धित हर चीज का विस्तृत व्योरा देने का प्रयास हुआ है। इस गीत में बच्चे के झूले या पालने का सुन्दर वर्णन है। आरसी से मधुर संगीत **फूट** रहा है और उसके सिरों पर लगे सोने के बोर भी छनक रहे हैं। बच्चे का पालना अत्यन्त मनोहारी है। दाई मां को पांच रुपये बधाई स्वरूप दिए जाए क्योंकि उसी के प्रयत्नों से गोदी में लाल है। मां यह भी कहती है कि बताशा घोल कर शर्बत बनाती हूं। साथ में गुड़-शक्कर भी बांट रही हूँ। चन्दन का पेड़ काट कर पालना बनाया है और उसमें रेशमी डोरे लगवाई हैं। सुन्दर पालने में लेटे हुए कन्हैया को आते-जाते, नन्ददेव (पिता) झुला रहे हैं। गोपियां भी पालने की रेशमी डोरी खींच-खींच कर झुलारे दे रही है। रेशमी डोर से बंधे, चन्दन की लकड़ी के नक्काशीदार पालने में अपने सुन्दर-सलोने कृष्ण सरीखे बच्चे को देखना हर मां का सपना है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
सासा	साम	म-	<u>ग</u>रे	<u>ग</u>-	-रे	सा-	--
छण	कण	लऽ	गीऽ	आऽ	ऽर	सीऽ	ऽऽ
सासा	सा<u>ग</u>	<u>ग</u>-	<u>ग</u>सा	सा<u>ग</u>	-<u>ग</u>	मप	प<u>ग</u>
छण	कण	सुऽ	न्नेदे	बोऽ	ऽर	नीऽ	हरि
<u>ग</u>-	पम	म-	<u>ग</u>रे	<u>ग</u>-	-रे	सा-	--
याऽ	वल	गीऽ	गाऽ	पाऽ	ऽल्	णाऽ	ऽऽ
सासा	साम	म-	<u>ग</u>रे	<u>ग</u>-	-रे	सा-	--
पंऽ	जरू	पइये	दाइ	याऽ	जोऽ	दिन्नि	आँऽ
सासा	सा<u>ग</u>	<u>ग</u>-	<u>ग</u>सा	सा<u>ग</u>	-<u>ग</u>	मप	प<u>ग</u>
कुछ	छड़्	मिऽ	लेया	लाऽ	ऽल्	नीऽ	हरि
<u>ग</u>-	पम	म-	<u>ग</u>रे	<u>ग</u>-	-रे	सा-	--
याऽ	बल	गीऽ	गाऽ	पाऽ	ऽल्	णाऽ	ऽऽ

प्रस्तुत गीत में केवल स्थाई है। गीत की अन्य पंक्तियां इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

38. उच्चेयाँ पीपलाँ पीहंगाँ

उच्चेयाँ पीपलाँ पीहंगाँ पेईयाँ जी, मैं भी झूटणा जाणा सुणेओ जी।
झूटे-झूटेंदियाँ खबरां होईयाँ जी भावो ने गीगा जाया
सद्दो कहारो पीहड़ा मेरी डोली जी मैं पेइयाँ दे घर जाणा
उठ नी भाबो सुण नी भाबो तेरी नणद परौह्णी आई नी
हत्थ कसीदा कुच्छड़ गीग्गा जी मैं तों उठया नी जान्दा जी
उठ नी भाबो गले लग मेरे तेरी नणद परौह्णी आई नी
उठ नी भाबो पलंग डुलाओ नी नणद परौह्णी जी आई सुणेया जी
भाइयां तुहाड़े बाण नी बट्टेया जी पलंग कित्थों डलावां
उठ नी भाबो रोटी पकायां जी नणद परौह्णी जे आई
भाइयां तुहाड़े आटा नी पीसेया रोटी कुथ्थों खलावाँ
सदो कहाराँ पीह्ड़ा मेरी डोली जी मैं घर सौरेयां दे जाणा
घरे ताँ जांदियाँ सस जे पुच्छे क्या कुछ अंदी गीगे दी बधाई
झूठेयाँ लोकाँ झूठ गलाया, भावो ने बेटड़ी जाई
झूठिये नूएँ झूठ गलाया, भावो ने मुँहे नी लाई।
तत्ता पाणी बीच मधाणी नीं, अम्माँ वाजों धी बगानी नीं,
भावो ने मुएं नी लाई, भावो ने मुएं नी लाई।
बारहाँ ताँ बरीआँ वीर घरें आया रुठड़ी भैण मनाई
सुच्चेयाँ दा थाल दित्ता उठ मेरी भैणे
तूँ मेरी भैण, मैं तेरा भाई, भावो बगानड़ी जाई।

भावार्थ : ननद व भाभी के सम्बन्धों में स्नेह एवं सख्य भाव की जगह नोंक-झोंक और उलाहनों का ही चित्रण अधिकाशं जन्म गीतों मे हुआ है। ननद भाई के यहाँ बेटे के जन्म पर अधिकार पूर्वक उपहार मांगती है और भाभी इन्कार करती है। .... ननद को पीपल पर बंधी पींग, झुलते हुए खबर मिलती है, कि भाभी ने बेटे को जन्म दिया है। कहारों को बुलाकर वह पालकी में बैठ,

स्वर लिपी (अनिबद्ध प्रकार) :-

सा– रे सानि़ सा सा रे– म गरे ग म सा रे सा नि़सा सा नि
उच्चेयाँ पिप लाँ ऽ पीह गाँ पेई याँ जी मैं भी झू ऽट ण जां

सा – सा– रे म सा रे– सा नि़सा – रे– म गरे ग ग –
णा ऽ सुणे ओ जी झू टेझू टे दियाँ ऽ खब रां होई याँ जी ऽ

ग गरे सानि़ सा – रे सा नि़ सा– रे म ग– ग रे सानि़सा
भा वोने गीऽ गा ऽ ऽ जा या सुणे ओ जी भाऽ बो ने गीऽ गा

– रे सा
ऽ जा या

प्रस्तुत गीत में केवल स्थाई है। गीत की अन्य पंक्तियां इन्हीं स्वरों पर गाई जाएंगी।

मायके पहुंच जाती है। घर का द्वार खोलने को कहती है तो भाभी बहाना बनाती है कि वह बेटे को गोदी में लिए कसीदा अर्थात कढ़ाई कर रही है सो कैसे उठे। ननद पलंग लगाने को कहती है। तो भाभी कहती है कि तुम्हारे भाई ने बाण नहीं बनाया। रोटी नहीं खिला सकती क्योंकि आटा नहीं पीसा। नाराज होकर वह ससुराल लौट जाती है। सास पूछती है कि बधाई में क्या मिला तो बहाना बनाती है कि लोगों ने झूठी खबर फैलाई थी। मेरी भाभी ने तो बेटी को जन्म दिया है। सास समझ जाती है कि माँ के बिना बेटी, मायके में पराई होती है। भाभी ने मुंह नहीं लगाया होगा। बारह वर्ष बाद भाई, नौकरी से लौटा तो रुठी हुई बहन को मनाया। सुच्चे मोतियों का थाल देकर कहा कि तू मेरी बहन और मैं तेरा भाई हूँ। भाभी तो पराई बेटी है .... यह गीत हंसी भरी छेड़-छाड़ द्वारा ही जीवन के सत्य को उद्‌घाटित कर जाता है कि माँ-जायों के बीच का स्नेह सम्बन्ध अटूट व प्रगाड़ होता है।

39. मंगो-मंगो रे नणदिया

मंगो-मंगो री नणदिया मंगण दी बहार
मंगो-मंगो री नणदिया मंगण दी बहार
गहणेयाँ मत मँगदी मेरे मुँह्य दा श्रृंगार
गहणेयाँ दे बिच वेसर देआं चुटकी लेआँ काट
मंगो-मंगो री नणदिया मंगण दी बहार

भाण्डेयां मत मँगदी मेरे चौंके दा श्रृंगार
भाण्डेयां दे बिच कड़छी देआं बींडी लेआं काट
मंगो-मंगो री नणदिया मंगण दी बहार
कपड़ेआँ मत मँगदी मेरे अंगे दा श्रृंगार
कपड़ेआँ दे बिच साड़ी देआँ चोली लेआँ काट
मंगो-मंगो री नणदिया मंगण दी बहार

मैहसियां मत मँगदी मेरे खुण्डे दा श्रृंगार
मैहसियां बिच कट्टू देआँ पूँछ लेआँ काट
मंगो-मंगो री नणदिया मंगण दी बहार

भावार्थ : यह जन्मगीत, बेटे को पाकर, बहुत प्रसन्न हुई भाभी के भावों की अभिव्यक्ति है। वह अपनी ननद को उपहार माँगने के लिए प्रेरित करती है और साथ ही अच्छी-अच्छी चीजों को देने से इन्कार भी कर देती है। माँगो-माँगो, मेरी ननद यह माँगने की बहार है। अर्थात सु-अवसर है। परन्तु गहने मत मांगना ये चेहरे मुंह का श्रृंगार है। बेसर (नथनी) तुम्हें दे दूंगी परन्तु उसके बीच सजी चुटकी अर्थात चूड़ीनुमा बेसर के बीच झूमर की तरह लटकता सोने का नक्काशी दार टुकड़ा काट लूंगी .... बर्तन मत माँगना मेरी रसोई की साज-सज्जा है। कड़छी तुम्हें दे दूंगी परन्तु बींडी (डण्डी) काट लूंगी। इसी तरह यदि साड़ी दूंगी तो चोली काट कर रख लूंगी। अन्त में कहती है कि भैंस मत मांगना मेरे खूंटों की शोभा है। दूंगी भी तो कट्टा और उसकी पूंछ काट लूंगी। यह गीत हंसी-ठिठोली के साथ-साथ मन में छुपे भाव भी प्रकट कर देता है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
		ध़	सा	रे	ग	रे-	सा-
		मं	गो	मं	गो	रेऽ	नूऽ
सा-	रे	प	म	ग-	ग-	रे-	ग-
णऽ	दि	या	ऽ	मंग	गण	दीऽ	बऽ
रे-	-सा	-	-	ध-	सा-	सा-	सा-
हाऽ	ऽर	ऽ	ऽ	गह	णेयाँ	मऽ	ऽत
सा-	सा	सा	रे	रे-	-ग	रे	सा
मँग	दी	मे	रे	मुँह	ऽय	दा	श्रं
सा	-	-	-	म-	रे-	म-	मम
गा	ऽ	ऽ	र	गह	णेयां	देऽ	विच
म-	रे-	म	म	प-	ध-	प-	म्
वेऽ	सर	दे	आं	चुट	कीऽ	लेऽ	आँ
गऽ	रे	ध	सा	रे	ग	रे-	सा-
काऽ	ट	मं	गो	मं	गो	रेऽ	नऽ

प्रस्तुत गीत में केवल स्थाई है। गीत की अन्य पंक्तियां इन्हीं स्वरों पर गाई जाएंगी।

40. दरेकां सै ढेई-ढेई

दरेकाँ सै ढेई-ढेई फुली रैइयाँ
ओ परदेसिया भाईया, मेरी अम्माँ देआ जाएआ
मिन्जो भी पेइयाँ दा चा होया, ओ वीरा लेई जायाँ ए

जेठ महीने दियाँ धुपाँ पेइयाँ, ओ परदेसणी भैणे
मेरिया अम्मा दिए जाइए।
गोदिया बालक याणा कि तूँ भैणे घर रियाँ ए

हत्थे मैं लैणी छतरी ओ परदेसिया भाईया
मेरिया अम्माँ देआ जाएआ । ओ वीरा लेई जायाँ ए
मिन्जो भी पेइयाँ दा चा होया। ओ वीरा लेई जायाँ ए

सौह्‌ण महीने दिया नदियाँ हो परदेसणी भैणे
मेरी अम्मा दिए जाइए ।
गोदिया बालक याणा कि तूँ भैणे घर रियां ए

चनण कटाई मैं बेड़ी बणवांदी हो परदेसिया भाईया
मेरिया अम्मा देआ जाएआ।
मिन्जो भी पेइयाँ दा चा होया, ओ वीरा लेई जायाँ ए ।

भावार्थ : यह गीत मायके जाने को तरसती युवती की विरह-वेदना है। बेटे को जन्म दिया है अत: माँ से मिलने का चाव है, फूलों का मौसम है। दरेक का पेड़ फूलों से भरकर झुका जा रहा है। मेरी माँ के जाए (जन्मे) मेरे परदेसी भाई, इस मौसम में मुझे मायके जाने की इच्छा है, सो मुझे ले चलो। भाई कहता है कि जेठ महीने की धूप है और तुम्हारी गोदी में छोटा बालक है। इसलिए तुम अपने घर ही रहो। बहन कहती है कि मैं छाता ओढ़ लूंगी। तब भाई बहाना बनाता है कि सावन ऋतु में नदी तूफान पर है, इसलिए तुम मत चलो। बहन

स्वर लिपी (अनिबद्ध प्रकार) :-

सा–	रे	सा	–	रे–	म	रे	म	प–	धप	म़	रे	प	प	प	–	
दरे	काँ	सै	ऽ	ढेई	ढे	ई	ऽ	फुली	रेइ	याँ	ऽ	ओ	प	र	ऽ	
म–	रे	सा	–	रेम	म	प	–	रे	रे	सा	–	सा	–	रेम	पा	
देऽ	सि	या	ऽ	भाई	ऽ	या	ऽ	मे	री	अ	माँ	दे	आ	जाए	आ	
सा	रे–	सा	–	रे	–	म	रे	–	प	धप	म	रे	रे	म–	रे	
मिं	न्जो	भी	ऽ	पे	इ	याँ	दा	ऽ	चा	होऽ	या	ऽ	ओ	वीऽ	रा	
मऽ	प	म	–	–												
लेई	जा	याँ	ऽ	ए												

प्रस्तुत गीत में केवल स्थाई है। गीत की अन्य पंक्तियां इन्हीं स्वरों पर गाई जाएंगी।

कहती है कि चन्दन का पेड़ कटाकर मैं नाव बनवा लूंगी, तुम मुझे ले चलो। मुझे मायके जाने का चाव है। परन्तु भाई कुछ-न-कुछ बहाना बना देता है। विवाह के बाद एक साथ-साथ पले-बढ़े भाई-बहनों के बीच आई दूरियां इस गीत में चित्रित हुई हैं।

41. भोले बाबा नैं

भोले बाबा नैं डमरू बजाया
अज दिन खुशियां दा आया

तेरे दादा नैं खुशियाँ मनाइयाँ
तेरी दादी नैं बण्डियाँ बधाइयाँ
भोले बाबा नैं डमरू बजाया
अज दिन खुशियां दा आया

तेरी नानी नैं खुशियाँ मनाइयाँ
तेरे नानैं नैं बण्डियाँ बधाइयाँ
भोले बाबा नैं डमरू बजाया
अज दिन खुशियां दा आया

तेरी मामी नैं खुशियाँ मनाइयाँ
तेरे मामे नैं बण्डियाँ बधाइयाँ
भोले बाबा नैं डमरू बजाया
अज दिन खुशियां दा आया
तेरी बूआ नैं खुशियाँ मनाइयाँ
तेरे बुआ नैं बण्डियाँ बधाइयाँ
भोले बाबा नैं डमरू बजाया
अज दिन खुशियां दा आया

तेरी चाची नैं खुशियाँ मनाइयाँ
तेरे चाचे नैं बण्डियाँ बधाइयाँ
भोले बाबा नैं डमरू बजाया
अज दिन खुशियां दा आया

तेरी ताई नैं खुशियाँ मनाइयाँ
तेरी ताए नैं बण्डियाँ बधाइयाँ
भोले बाबा नैं डमरू बजाया
अज दिन खुशियां दा आया

भावार्थ : पुत्र जन्म का अवसर कांगड़ा जनपदीय जन्मगीतों में उत्सव की तरह चित्रित हुआ है। इस खुशी में शिव को भी शामिल कर लिया गया है। भोले बाबा अर्थात शिव ने डमरू बजाया आज खुशी का चिरप्रतीक्षित दिन आया है।

बच्चे के दादा ने खुशियां मनाई और दादी ने बधाइयां बांटी हैं। सबको उपहार दिए हैं। इस गीत में सभी सगे सम्बन्धियों को परिवार की परिधि में घेर लिया गया है। दादी-दादा के बाद नाना-नादी, मामा-मामी, ताया-ताई इत्यादि।

स्वर लिपी :-

		0				0	
		सा	रे	ध़	–	ध़	सा
		भो	ले	बा	ऽ	बा	ने
सा	सा	सा	रे	गम	ऽ	म	ग
ड	म	रू	ब	जाऽ	ऽ	या	ऽ
रे	–	रे	ग	म	प	–	म
ऽ	ऽ	अ	ज	दि	न	ऽ	खु
ग	रे	म	ग	रे	–	सा	–
शि	यां	दा	ऽ	आ	ऽ	या	ऽ
–	–						
ऽ	ऽ						

गीत के अन्य बोल भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाए जाएंगे।

42. राहे–राहे जांदेआ

राहे–राहे जांदेआ मेरा लेई सुन्हेड़ा जा
मुण्डे दिया दादिया नूँ
दादिया झगा सीता, टोपू सीता
नौमण हीरे लाये, मुण्डे दिया दादिया नूँ
दादी शहर गई बजार गई, शाबाश हुन्दी आई
मुण्डे दिया दादिया नूँ
ताईया झगा सीता, टोपू सीता
नौमण हीरे लाये, मुण्डे दिया ताईया नूँ
ताई शहर गई बजार गई, शाबाश हुन्दी आई
मुण्डे दिया ताईया नूँ
चाचिया झगा सीता, टोपू सीता
नौमण गुदड़ लाये, मुण्डे दिया चाचियाँ नूँ
चाची शहर गई बजार गई, फिट–फिट हुन्दी आई
मुण्डे दिया चाचिया नूँ
बूआ झगा सीता, टोपू सीता
नौमण गुदड़ लाये, मुण्डे दिया बूआ नूँ
बूआ शहर गई बजार गई, फिट–फिट हुन्दी आई
मुण्डे दिया बूआ नूँ ।

भावार्थ : काँगड़ा में अधिकांशतः पहले बच्चों को मायके में जन्म देने की प्रथा है। इस गीत में यही स्थिति है। मायके में बच्चे को जन्म देने वाली युवती राह जाते राही के हाथों एक सन्देश अपनी ससुराल के लिए भेज रही है। वह असल में आभार प्रकट करना चाह रही है। कहती है कि दादी ने बच्चे के लिए झग्गग (कुर्ता) सिया और टोपी भी। शहर–बाजार जाकर हीरे लाई और टोपी में जड़ दिए। सब जगह दादी को शाबाशी दी जा रही है .... इसी तरह वह ताई के प्रति अपने भाव प्रकट करती है। परन्तु बच्चे की चाची तथा बुआ के साथ छेड़खानी की गई है। चाची ने तथा बुआ ने भी शिशु के लिए कुर्ता सिला परन्तु पुराने कपड़ों के टुकड़े जड़ दिए। सब लोग उन्हें फटकार दे रहे हैं।

स्वर लिपी :-

		0				0	
सा	सा	सा	सा	सा-	-सा	सा	सानि॒
रा	हे	रा	हे	जांऽ	ऽदे	आ	मेरा
नी॒सा	सारे	रे-	सा	नि॒	-प	पनि॒	रेसा
लेऽ	ईसु	न्हे	ड़ा	जा	ऽमु	ण्डे	दिया
नि॒-	नि॒-	–	–	–	–	नी॒-	नी॒प
दाऽ	दिया	नूँ	ऽ	ऽ	ऽ	दाऽ	दिया
प़-	नी॒	नी॒	सा	प	नी॒	नी॒-	सा
झऽ	गा	सी	ता	टो	पू	सीऽ	ता
नी॒-	सारे	रे-	सा-	नि॒-	-प	पनि॒	रेसा
नौऽ	मण	हीऽ	रेऽ	लाऽ	येमु	न्डे	दिया
नि॒-	नि॒-	–	–	–	–		
दाऽ	दिया	नूँ	ऽ	ऽ	ऽ		

गीत के अन्य बोल भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाए जाएंगे।

43. केहड़े मुहल्ले दी बंसरी तेरी

केहड़े मुहल्ले दी बंसरी तेरी
अड़ेया असाँ जो भी बजी सुणाओ
केहड़े मुहल्ले दी बंसरी तेरी...

काले महीने दीआँ न्हेरीयाँ राती
अड़ेया जन्मेया श्याम मुरारी,
मुहल्ले दी बंसरी तेरी
केहड़े मुहल्ले दी बंसरी तेरी

जां जन्मेआ जां दीपक वलेआ,
अड़ेया चौंई चक लोई होइयां
मुहल्ले दी बंसरी तेरी,
केहड़े मुहल्ले दी बंसरी तेरी

न्होता धोता पाट-पलेटया
अड़ेया कुच्छड़ चुकेया दाईया
मुहल्ले दी बंसरी तेरी
केहड़े मुहल्ले दी बंसरी तेरी
भन्न पतासा गुड़ सक्कर दिनी
अड़ेया सोयने दी रखदी कटोरी
मुहल्ले दी बंसरी तेरी
केहड़े मुहल्ले दी बंसरी तेरी

चनण कटाई तेरा बणेया पंगूड़ा
अड़ेया रेशम डोरा न लाईयाँ
मुहल्ले दी बंसरी तेरी
केहड़े मुहल्ले दी बंसरी तेरी

पँज-पच्यासी दाईया जो दिन्नी
अड़ेया पुत्र प्यारा ऐ पाएआ
मुहल्ले दी बंसरी तेरी
केहड़े मुहल्ले दी बंसरी तेरी

लट्ठा रे खास हेठ बच्छानी
अड़ेया मखमल वणेया सराहणा
मुहल्ले दी बंसरी तेरी
केहड़े मुहल्ले दी बंसरी तेरी ।

भावार्थ : गीत शुरु हो रहा है कि कौन से मुहल्ले की बंसरी है, हमें भी बजा कर सुनाओ। काले महीने की अंधेरी रातों में कृष्ण-मुरारी अर्थात घर में पुत्र जन्म हुआ है। उसके जन्म लेते ही दीपक प्रजवलित हो उठा, और अचानक ही सब ओर आलोक फैल गया। नहाया-धोया और सुन्दर वस्त्रों में लिपटा बच्चा दाय मां की गोद में विराजमान है। बताशा तोड़ कर बाटां, गुड-शक्कर भी दी। सोने की कटोरी भी रखी।

स्वर लिपी (अनिबद्ध प्रकार):-

प़	-ध़	प़	-	ध	सा	रे	ग	रे	ग	रे	-	रे	सा	-	-
के	हड़े	मु	ऽ	ह	ले	दी	ऽ	बं	स	री	ऽ	ते	री	ऽ	ऽ

सा-	सग	ग	ग़	ग	रे	रे	रे	-	ग	रेसा	सा	-	-	-	-
अड़े	आ-	अ	साँ	जो	भी	ब	जी	ऽ	सु	णा-	ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

प़	-ध़	प	-	ध़	सा	रे	-	रे	ग	रे	-	रे	सा	-	-
के	हड़े	मु	ऽ	ह	ले	दी	ऽ	बं	स	री	ऽ	ते	री	ऽ	ऽ

प्रस्तुत गीत में केवल स्थाई है। गीत की अन्य पंक्तियां इन्हीं स्वरों पर गाई जाएंगी।

शिशु जन्म पर बांसुरी वादन से स्पष्ट संकेत मिल रहे हैं कि कृष्ण ही अवतरित हुए हैं। चन्दन का पेड़ कटा कर झूला बनवाया तथा रेशम की डोरी बांधी। पच्चासी रुपयों में पांच और डाल कर दाय मां को देती हूँ, मुझे हीरे जैसा पुत्र प्राप्त हुआ है। लट्ठे की चादर बिछाती हूं और मखमल के गिलाफ वाला सिरहाना रखती हूं। प्रिय पुत्र के प्रति मां की रीझों का सुन्दर वर्णन इस गीत में हुआ है।

44. कौण लुटावै-दवानियाँ चवानियाँ

कौण लुटावै दवानियाँ-चवानियाँ
कौण लुटावै हीरे दी लड़ी
मोतियाँ नैं जड़ी जी मुबारक होवै
अज की घड़ी जी मुबारक होवै ...

दादी लुटावै दवानियाँ-चवानियाँ
दादा लुटावै हीरे दी लड़ी
मोतियाँ नैं जड़ी जी मुबारक होवै
अज की घड़ी जी मुबारक होवै ...

तायी लुटावै दवानियाँ-चवानियाँ
ताया लुटावै हीरे दी लड़ी
मोतियाँ नैं जड़ी जी मुबारक होवै
अज की घड़ी जी मुबारक होवै ...

चाची लुटावै दवानियाँ-चवानियाँ
चाचा लुटावै हीरे दी लड़ी
मोतियाँ नैं जड़ी जी मुबारक होवै
अज की घड़ी जी मुबारक होवै ...

नणद लुटावै दवानियाँ-चवानियाँ
नणदोइया लुटावै हीरे दी लड़ी
मोतियाँ नैं जड़ी जी मुबारक होवै
अज की घड़ी जी मुबारक होवै ...

भावार्थ : यह अत्यन्त लोकप्रिय व प्रच्चलित बधाई गीत है। पुत्र जन्म पर बधाई बाँटी जा रही है, सभी परिजनों को सम्मिलित किया गया है।....... कौन दुवनियां-चवनियां भेंट स्वरुप बांट रहा है और कौन हीरे की लड़ी बधाई स्वरुप दे रहा हैं। दादी दुवनियां-चवनियां बांट रही है और दादा हीरे की लडी बधाई में दे रहे हैं। इसी तरह अन्य रिश्तेदारों अर्थात ताया-ताई, चाचा-चाची, नंनद-ननदोई तथा बच्चे की बुआ का जिक्र है। इस गीत में एक खास बात स्पष्ट हो रही है कि महिलाओं की हैसियत दुवनियां-चवनियां बाँटने की है। हीरे की माला मर्द ही दे पाएंगे......... पुरुष-वर्चस्व सिद्ध हो रहा है।

स्वर लिपी :-

			2				0				3			
ग	–	–	ग	–	ग	–	रे	–	–	सा	–	रे	रे
को	ऽ	ऽ	ण	ऽ	लु	ऽ	टा	ऽ	ऽ	वै	ऽ	द	ऽ
ग	ग	–	म	–	ग	–	रे	–	–	सा	–	–	–
वा	नि	ऽ	याँ	ऽ	च	ऽ	वा	नि	ऽ	याँ	ऽ	ऽ	ऽ
ध़	–	–	सा	–	सा	–	ध	–	–	सा	–	सा	–
कौ	ऽ	ऽ	ण	ऽ	लु	ऽ	टा	ऽ	ऽ	वै	ऽ	ही	ऽ
ध़	–	–	सा	–	रे	–	ग	–	–	रे	–	सा	ध़
रे	ऽ	ऽ	दी	ऽ	ल	ऽ	ड़ी	ऽ	ऽ	मो	ऽ	ति	ऽ
सा	–	–	सा	–	रे	–	ग	–	–	रे	–	सा	–
याँ	ऽ	ऽ	नैं	ऽ	ज	ऽ	ड़ी	ऽ	ऽ	जी	ऽ	मु	ऽ
ऩी	ध़	–	ऩी	–	सा	–	ऩी	ध़	–	प	–	–	–
बा	ऽ	ऽ	र	ऽ	क	ऽ	हो	ऽ	ऽ	वै	ऽ	ऽ	ऽ
ध़	सा	–	सा	–	रे	–	ग	–	–	–	–	–	–
अ	ज	ऽ	की	ऽ	घ	ऽ	ड़ी	ऽ	ऽ	जी	ऽ	मु	ऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

45. हरे-हरे गोए दे लेण लपानी

हरे-हरे गोए दे लेण लपानी रामा
सुच्चेयां दा चौक दुआयो रे राम
अज दिन चलो सखियो सहेलियो
राजा दशरथे दे घर जन्मे राम
बड्ड़े लेख जिन्हा पढ़ेयां पंडतां दे
जिसा राम लग्न गणाओ रे
अज दिन चलो ...
बड्ड़े भाग जिसा माता कौसल्या
जिसा राम बेटा जाया ए
अज दिन चलो ....
बड्डे भाग जिसा दाईया जिसा माईया
जिसा बेटा राम नुहाया रे
अज दिन चलो ...
बड्ड़े भाग जिसा भैण सुमद्रा दे
जिसा भैणा नैं वीर खलाया रे
अज दिन चलो ...
बड्ड़े भाग जिसा कुन्ता बूआ दे
जिसा नर्मे दा चोलू सियाया ए
अज दिन चलो ...

भावार्थ : पुत्र जन्म का शुभ अवसर है। शगुन मनाए जा रहे हैं। .... हरे-हरे गोबर से आंगन की लिपाई करवा कर, पावन पवित्र चौक बनवाती हूँ। आज मेरी सखी-सहेलियो, चलो राजा दशरथ के घर बेटे राम ने जन्म लिया है। बुद्धिमान पढ़े लिखे पंडितों का बहुत सौभाग्य जिन्होने शिशु राम की जन्म पत्री में ग्रहों की गणना की। वह माँ कौशल्या अति भाग्यवान, जिसने बेटे राम को जन्म दिया।

स्वर लिपी :-

		0				0	
–	नी̱सा	सा	ग̱	रे	–	सा	–
ऽ	हरे	ह	रे	गो	ऽ	ए	ऽ
–	नी̱	प	प̣	नी̱	सा	सा	सा
ऽ	ले	ण	ल	पा	नी̣	रा	मा
नी̱	नी̱	सा–	रे	रे	–	सा	नी̱
ऽ	सुच	चेयां	दा	चौ	ऽ	क	दु
सा	सा	रे	–	सा	–	–	सा
आ	यो	रे	ऽ	रा	ऽ	ऽ	म

गीत की अन्य पंक्तियां भी इसी प्रकार गाई जाएंगी।

वह दाई–माँ भी बड़े भागों वाली जिसने शिशु को नहलाया। वह कुन्ता बुआ भी सौभाग्य शाली जो अपने भतीजे के लिए नर्म (मखमल) का चोलू (छोटा कुर्ता) सिलवा के लाई है। मेरी सखिओ चलो हम सब राजा दशरथ के महलों में बधाई गाने चलें।

46. सुँढ ले लो–सौंफ ले लो

सुँढ ले लो, सौंफ ले लो लाची ते जुआणेयां
सुते होए कन्त जी स्हाढ़ी ससू जो सदा दियो
चार चफेरे देख तां गोरिये न्हेरा सैह् न्हेरा
चुप करी सोई जा नी गोरिएऽऽ
होण दे सवेरा नी गोरिए ....।

सुँढ ले लो, सौंफ ले लो लाची ते जुआणेयां
सुते होए कन्त जी स्हाढ़ी जेठाणी जो सदा दियो
चार चफेरे दिख तां गोरिये न्हेरा सैह् न्हेरा
चुप करी सोई जा नी गोरिए ऽऽ
होण दे सवेरा नी गोरिए ....।

सुँढ ले लो, सौंफ ले लो लाची ते जुआणेयां
सुते होए कन्त जी स्हाढ़ी दराणी जो सदा दियो
चार चफेरे दिख तां गोरिये न्हेरा सैह् न्हेरा
चुप करी सोई जा नी गोरियोऽऽ
होण दे सवेरा नी गोरिए........।

सुँढ ले लो, सौंफ ले लो लाची ते जुआणेयां
सुते होए कन्त जी स्हाढ़ी ननद जो सदा दियो
चार चफेरे दिख तां गोरिये न्हेरा सैह् न्हेरा
चुप करी सोई जा नी गोरियोऽऽ
होण दे सवेरा नी गोरिए........।

भावार्थ : इस जन्म गीत में प्रसव वेदना के शुरु हाते ही या अंदेशे मात्र से चिन्तित पत्नी सोए हुए पति से कहती है कि मुझे सौंठ, सौफ, इलायची व अजवाइन लाकर दो और सास को बुला दो। नींद का लोभी कन्त (पति) समझाता है कि देख चारों तरफ स्याह अंधेरा है। चुप–चाप सो जा गोरी और सुबह होने दे। यही अनुरोध फिर से दोहराया जाता है, जेठानी, देवरानी तथा ननद के नाम से। हर बार पति का वही जवाब है कि गहरा अंधकार है सब तरफ।

स्वर लिपी :-

		0				0	
ग-	-सा	रे	ग	रे	--	सा	सा
सुँऽ	ऽढ	ले	लो	सौं	ऽफ	ले	लो
रे	ग	रे	-सा	रे	-प	-	म-
ला	ची	ते	ऽजु	आ	ऽणे	ऽ	यांऽ
ग	सा	रे	ग	रे-	--	-सा	सा
सु	ते	हु	ए	कन्‍	तजी	स्हा	दी
रे	ग	रे	सा	रे	प	-	म
स	सू	जो	स	दा	ऽ	दि	यो
ग-	-सा	रे	ग	रे	--	सा	सा
सुंऽ	ऽढ	ले	लो	सौं	ऽफ	ले	लो

गीत के अन्य बोल भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाए जाएंगे।

अभी सो जाओ। सुबह होने दो। इस गीत में पुरुष का किंचित लापरवाह दृष्टिकोण भी स्पष्ट हुआ है।

47. सीया खड़ी पछतावे

सीया खड़ी पछतावे लव–कुश बणे च होए
बणे च होए दो लाल लव–कुश बणे च होए
जे घर हुन्दे दशरथ पिता जी
खुशियाँ लैह्न्दे मनाई, लव–कुश बणे च होए

सीया खड़ी पछतावे लव–कुश बणे च होए
बणे च होए दो लाल लव–कुश बणे च होए
जे घर हुन्दे राम–चंद्र पति जी
लग्न लैह्न्दे गणाई लव–कुश बणे च होए।

सीया खड़ी पछतावे लव–कुश बणे च होए
बणे च होए दो लाल लव–कुश बणे च होए
जे घर हुन्दे लच्छमण भ्राता जी
दमां लैह्न्दे लुटाई लव–कुश बणे च होए

सीया खड़ी पछतावे लव–कुश बणे च होए
बणे च होए दो लाल लव–कुश बणे च होए
जे घरे हुन्दे माता कौशल्या
खुशियाँ लैह्न्दे मनाई लव–कुश बणे च होए

सीया खड़ी पछतावे लव–कुश बणे च होए
दो लाल लव–कुश बणे च होए
जे घर हुन्दे भैण सुभद्रा
बीरां लैह्न्दी खलाई लव–कुश बणे च होए

भावार्थ : यद्यपि यह गीत पुत्र जन्म पर ही गया जाता है। परन्तु यह गीत लोक–मानस की संवेदनाओं के व्यापक फलक का परिचायक है। बहाने से सीता के साथ हुए अन्याय और परिताप को भी अभिव्यक्ति मिली है। सीता ने लव–कुश, दो पुत्रों को जन्म दिया है। परन्तु प्रसन्नता की जगह वह पश्चाताप से भरी खड़ी है। उसने वन में पुत्रों को जन्म दिया। यदि घर में होती तो राजा दशरथ खुशियां मना लेते। उसे पछतावा है कि महल में न होने की वजह से उसके पति रामचन्द अपने बेटों की राशि नहीं लिखवा पाए। भाई लक्ष्मण को प्रसन्न हो कर धन–धान्य लुटाने का अवसर नहीं मिला। मां कौशल्या की खुशी मनाने की रीझ पूरी नहीं हुई और बहन सुभद्रा को बच्चों को खिलाने का सौभाग्य नहीं मिला। लोक–गीतों में राम व कृष्ण की लीलाओं का वर्णन है और वे परस्पर गडमड भी हो गई है।

स्वर लिपी :–

		0				0	
–	ग	ग	ग	रे	–	ग	ग
ऽ	सी	या	ख	ड़ी	ऽ	प	छ
म	–	ग	–	सा	रे	सा	ऩी
ता	ऽ	वे	ऽ	ल	व	कु	श
–	सा	रे	रे	ग	–	सा	–
ऽ	ब	णे	च	हो	ऽ	ए	ऽ
–	ग	ग	ग	रे	–	ग	–
ऽ	ब	णे	च	हो	ए	दो	ऽ
म	–	ग	–	सा	रे	सा	ऩी
ला	ऽ	ल	ऽ	ल	व	कु	श
–	सा	रे	रे	ग	–	सा	–
ऽ	ब	णे	च	हो	ऽ	एं	ऽ

गीत के अन्य बोल भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाए जाएंगे।

48. सोने दा छणकणा

सोने दा छणकणा जीयो लाल जी
सांजोह् राम जी ने दित्तड़ा जीयो लाल जी......।

तूँ ताँ खेल वे प्यारेया खेल वे
अपणी दादिया दी गोदिया खेल वे
तेरे दादा करेंगे लख वेल वेल वे
सोने दा छणकणा जीयो लाल जी......।

तूँ ताँ खेल वे प्यारेया खेल वे
अपणी ताईया दी गोदिया खेल वे
तेरे ताया करेंगे लख वेल-वेल वे
सोने दा छणकणा जीयो लाल जी......।

तूँ ताँ खेल वे प्यारेया खेल वे
अपणी चाचिया दी गोदिया खेल वे
तेरे चाचा करेंगे लख वेल-वेल वे
सोने दा छणकणा जीयो लाल जी......।

तूँ ताँ खेल वे प्यारेया खेल वे
अपणी बूआ दी गोदिया खेल वे
तेरे बूआई करेंगे लख वेल-वेल वे
सोने दा छणकणा जीयो लाल जी।

भावार्थ : कुछ जन्मगीत मुख्यत: दो या चार पंक्तियों के होते हैं। विभिन्न सम्बन्धों या रिश्तों को जोड़-जोड़ कर उन्हीं पंक्तियों को दोहराया जाता है। यह भी इसी प्रकार का गीत है। परन्तु इसकी धुन इसे अत्यन्त आकर्षक व कर्णप्रिय बना देती है। शब्दों की सहजता व सरलता की वजह से गाने वाली स्त्रियां इसे गाते हुए अत्यन्त माधुर्यपूर्ण वातावरण की सृष्टि करने में सफल होती हैं। मां अपने बच्चे को बहलाने हेतु एक खिलौने का प्रयोग करते हुए कहती है कि यह सोने का छुनछुना हमें राम जी से प्राप्त हुआ है। प्रिय, तू अपनी दादी की गोदी में इसके साथ खेल। तुझे यह छुनछुना बजाते देखकर प्रसन्न हुए दादा बेल अर्थात रूपये वार कर गरीबों में बांटेंगे। इसी क्रम में ताई की गोदी तथा ताया की प्रसन्नता, चाची की गोदी और चाचा की प्रसन्नता व बुआ की गोदी आदि का वर्णन किया गया है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
म	ग	रे	सा	नि़	ध	नि़-	नि़-
सो	ऽ	ने	ऽ	दा	ऽ	छऽ	णक
सा	नि़	सा	रे	रे-	-सा	सा	रे
णा	ऽ	जी	यो	लाऽ	ऽल	जी	ऽ
म	ग	रे-	-सा	नि़-	ध	नि़-	-नि़
सां	जोह	राऽ	ऽम	जीऽ	ने	दिऽ	ऽत्त
सा	नि़	सा	रे	रे-	-सा	सा	रे
ड़ा	ऽ	जी	यो	लाऽ	ऽल	जी	ऽ
अन्तरा							
रे	ग	म-	-म	प	ध-	प	म
तूँ	ताँ	खेऽ	ऽल	वे	प्या	ऽ	रे
ग	रे	म-	-प	ग	रे	-	-
या	ऽ	खेऽ	ऽल	वे	ऽ	ऽ	ऽ
रे-	ग-	म-	म-	प	ध-	प-	म
अप	णीऽ	दाऽ	दिऽ	या	दीऽ	गोऽ	दि
ग	रे	म-	-प	ग	रे	-	-
त्रा	ऽ	खेऽ	ऽल	वे	ऽ	ऽ	ऽ
म	ग	रे	सा	नि़	ध	नि़-	नि़
ते	रे	दा	ऽ	दा	क	रेंऽ	गे
सा	नि़	सा	रे	रे	सा	सा	रे
ल	ख	वे	ल	वे	ल	वे	ऽ

गीत के अन्य बोल भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाए जाएंगे।

49. बाल्अ खेलदा है

बाल्अ खेलदा है निम्बुये दे हेठ दादे ते पंगूड़ा मंगदा
दादैं चनण कटाया रोइया पार, उसदा पंगूड़ा बणेया
दादिया रेशम कताया दिल्ली शह्र, उस दियां डोरां बणियां
बाल्अ खेलदा है निम्बुये दे हेठ दादे ते पंगूड़ा मंगदा..।

बाल्अ खेलदा है निम्बुये दे हेठताये ते पंगूड़ा मंगदा
ताऐं चनण कटाया रोइया पार, उसदा पंगूड़ा बणेया
दादिया रेशम कताया जम्मू शहर, उस दियां डोरां बणियां
बाल्अ खेलदा है निम्बुये दे हेठ दादे ते पंगूड़ा मंगदा..।

बाल्अ खेलदा है निम्बुये दे हेठ चाचे ते पंगूड़ा मंगदा
चाचैं चनण कटाया रोइया पार, उसदा पंगूड़ा बणेया
चाचिया रेशम कताया जम्मू शह्र, उस दियां डोरां बणियां
बाल्अ खेलदा है निम्बुये दे हेठ दादे ते पंगूड़ा मंगदा..।

बाल्अ खेलदा है निम्बुये दे हेठ बूआई ते पंगूड़ा मंगदा
बूआइऐं चनण कटाया रोइया पार, उसदा पंगूड़ा बणेया
बूआ रेशम कताया जम्मू शह्र, उस दियां डोरां बणियां
बाल्अ खेलदा है निम्बुये दे हेठ दादे ते पंगूड़ा मंगदा।

भावार्थ : इस गीत में शिशु द्वारा पालना या झूला मांगने का वर्णन है। झूले में झूलना हर बच्चे को प्रिय लगता है। नींबू के पेड़ के नीचे खेलता हुआ बच्चा अपने दादा से पंगूड़ा अर्थात् पालना मांग रहा है। दादा प्रसन्नतापूर्वक उसकी इच्छा पूरी करने को तत्पर होते हैं। रावी नदी के पार के जंगल से चन्दन का वृक्ष कटवाया जाता है। दादी दिल्ली शहर से रेशम मंगवाती है और उसकी डोरें बनवाती हैं। बच्चा यही माँग अपने ताया, चाचा व फूफा के सामने भी रखता है। उनकी ओर से भी यही प्रयत्न किया जाता है। संयुक्त परिवारों में बच्चे सभी का ध्यान व प्यार पाकर बड़े होते हैं। बच्चा अपने माता तथा पिता पर ही निर्भर नहीं होता। उनका ही दुलारा नहीं होता। अन्य सम्बन्धियों से भी उसे ममत्व मिलता है, जो उसे दृढ़ विश्वासी बनाने में सहायक होता है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
–	–	सा-	-सा	सा	ग	ग	ग
		बाऽ	लुअ	खे	ल	दा	ऐ
ग	ग	प	ध	प	–	–	म
नि	म्बु	ये	दे	हे	ऽ	ऽ	ठ
रे	रे	प	म	ग	ग	रे	–
दा	दे	ते	पं	गू	ड़ा	मं	ग
सा	–	सा	ऩि	सा	-ग	ग	ग
दा	ऽ	दा	दैं	च	न	ण	क
ग	म	प-	ध	प	–	–	म
टा	या	रोइ	या	पा	ऽ	ऽ	र
रे	रे	प	म	ग	ग	रे	–
उ	स	दा	पं	गू	ड़ा	ब	णे
सा	–						
या	ऽ						

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

50. शुभ दिन आया

शुभ दिन आया सखियो
हारा वाले़ नैं लेआ अवतार ....
जां जम्मेया जां दीपक बले़या
चौंई चक होइयां लोई
हारा वाले़ नैं लेआ अवतार
शुभ दिन आया सखियो ...।
रूख कटानी पंगूड़ा वणानी
रेशमी डोरा लगानी सखियो
हारा वाले़ नैं लेआ अवतार
शुभ दिन आया सखियो ...।
पंज रुपइए मैं दाईया जो दिनिआं
पुत्तर प्यारा माइया दा
हारा वाले़ नैं लेआ अवतार
शुभ दिन आया सखियो ...।
औन्दी बूआ झूटा झुटांदी
कन्ने ता दिन्दी बधाइयां
हारा वाले़ नैं लेआ अवतार
शुभ दिन आया सखियो ...।

भावार्थ : पुत्र जन्म के अवसर की खुशी इस गीत में अभिव्यक्त हुई है। अपने पुत्र को हारा वाला अर्थात विष्णु का अवतार मानते हुए मां कह रही है कि सखियो शुभ दिन आया है। आज मेरे यहां हारों वाले ने शिशु रूप में जन्म लिया है। जन्म होते ही दीपक प्रज्ज्वनित हुआ और चारों ओर आलोक फ़ैल गया। पेड़ कटवा कर मैं पालना या झूला बनवाती हूं तथा रेशमी डोरियां लगवाती हूं। पांच रूपये मैं अपने प्यारे पुत्र पर वार कर धाय मां को देती हूं। बुआ आकर बच्चे को झूला झुलाती है तथा साथ ही बधाई भी देती है। अत्यन्त भाग्यशाली शुभ दिन आया है। आज विष्णु ने मेरे पुत्र के रूप में अवतार लिया है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
ध़	रे	रे	रे	ध़	रे	रे	ग
शु	भ	दि	न	आ	या	स	खि
म	मग	ग–	रे–	सा–	नि़	नि़	–
यो	ऽऽ	हाऽ	रांऽ	वाऽ	ले़	ऽ	नैं
सा	रे	सा	नि़	ध–	–	–	–
ले	आ	अ	व	ताऽ	ऽ	र	ऽ
म	–	म	म	ग	रे	रे	ग
जां	ऽ	ज	म्मे	या	ऽ	जां	ऽ
म	–	प	म	ग	–	रे	–
दी	ऽ	प	क	व	ले़	आ	ऽ
ध	रे	रे	रे	ध	रे	रे	ग
चौं	ई	च	क	हो	इ	यां	लो
म	मग	ग–	रे–	सा–	नि़	नि़	–
ऽ	ईऽ	हाऽ	रांऽ	वाऽ	ले़	ऽ	ने
सा	रे	सा	नि़	ध़	–	–	–
ले	आ	अ	ब	ताऽ	ऽ	र	अ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

51. सुंड गरी दे लड्डू

सुंड गरी दे लड्डू मेरे मापेयां दे घरों आये जी
मापेयां दे घरों आये, मेरे बावा लेई करी आए जी
बावा लेई करी आए, स्हाड़ी सस्सु नैं चुराये जी

देई दे सस्सू लड्डू नी मैं डोल़ी ताल़ा लाई देणा
डोल़ी ताला लाई देणा मैं जेल पुल़स च भी कही देणा
जेल पुल़स तिक नीं मनणा, मैं काल़ा पाणी कराई देणा
सुंड गरी दे लड्डू ...

देई दे नणदे लड्डू नी मैं डोल़ी ताल़ा लाई देणा
डोल़ी ताला लाई देणा मैं जेल पुल़स च भी कही देणा
जेल पुल़स तिक नी मनणा, मैं काल़ा पाणी कराई देणा
सुंड गरी दे लड्डू ...

देई दे दराणी लड्डू नी मैं डोल़ी ताल़ा लाई देणा
डोल़ी ताला लाई देणा मैं जेल पुल़स च भी कही देणा
जेल पुल़स तिक नी मनणा, मैं काल़ा पाणी कराई देणा
सुंड गरी दे लड्डू ...

देई दे जठाणी लड्डू नी मैं डोल़ी ताल़ा लाई देणा
डोल़ी ताला लाई देणा मैं जेल पुल़स च भी कही देणा
जेल पुल़स तिक नी मनणा, मैं काल़ा पाणी कराई देणा
सुंड गरी दे लड्डू ...

भावार्थ : जन्म गीतों में हास-परिहास का भाव प्रमुख है। यह छेड़-छाड़ नवजात शिशु की मां के ससुराल तथा मायके के सन्दर्भ में की जाती है। इस गीत में शिशु की मां कहती है कि नारियल के लड्डू मेरे मायके के यहां से आए हैं तथा मेरे बावा लेकर आए हैं। यहां, मेरी सास ने ये लड्डू चुरा लिए। सासू मां,

स्वर लिपी :-

		0				0	
ग–	गग	रे–	गम	रे	सासा	ध	सा
सुंऽ	डग	रीऽ	देऽ	ल	ड्डू	मे	रे
रे–	गम	रेसा	सासा	सा	रे	प	म
माऽ	पेयां	देऽ	घरों	आ	ये	जी	ऽ
ग–	गम	रे–	गम	रे	सासा	ध	सा
माऽ	पेयां	देऽ	घरों	आ	येऽ	मे	रे
रे–	गम	रेसा	सासा	सा	रे	प	म
बाऽ	वाऽ	लेई	करी	आ	ये	जी	ऽ
ग–	गग	रे–	गम	रे	सासा	ध़	सा
बाऽ	वाऽ	लेई	करी	आ	येऽ	स्हा	ड़ी
रे–	गम	रेसा	सासा	सा	रे	प	म
स	स्सू	नैऽ	चुऽ	रा	ये	जी	ऽ

गीत के अन्य बोल भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाए जाएंगे।

कृपया लड्डू लौटा दो। अन्यथा मैं पुलिस में रपट दर्ज करवा दूंगी। बल्कि काला पानी करवा दूंगी। यही वह क्रमशः ननद, देवरानी व जेठाणी से दोहराती है।

52. सांजोह् बीरे कनैं खेलणे दा चॉ

सांजोह् बीरे कनैं खेलणे दा चॉ
इक बीर मंगा देबिए
असाँ औंगे भैण भरा
इक बीर मंगा देबिए

शगणा दे दिन लोक खुशियां मनांवदे
खुशियां मनांदे कनैं फुल्ल बरसांवदे
सांजोह् भाबो कनैं खेलणे दा चॉ
इक बीर मंगा देबिए

वसाखी वाले दिन लोक खुशियां मनांवदे
खुशियां मनांदे कनैं फुल्ल बरसांवदे
सांजोह् तिलक लगाणे दा चॉ
इक बीर मंगा देबिए

राखी वाले दिन लोक खुशियां मनावंदे
खुशियां मनांदे कनैं फुल्ला बरसांवदे
सांजोह् रखड़ी पह्नाणे दा चॉ
इक बीर मंगा देबिए

भावार्थ : यह गीत बहन के मन में छुपी, भाई पाने की इच्छा को शब्दबद्ध करता है। बहन देवी मां से प्रार्थना करते हुए कहती है कि मुझे भाई के साथ खेलने का चाव है। देवी मां, एक भाई मुझे दो। हम दोनों भाई बहन तुम्हारे द्वार शीश नवाने आएंगे। विवाह वाले दिन लोग खुशियां मनाते हुए फूल बरसाते हैं। मुझे भी भाभी के साथ खेलने का चाव है। मैं एक भाई तुमसे मांगती हूं। बैसाखी के दिन लोग खुशी मनाते हैं, मेरा मन भी भाई को तिलक करने को होता है। मैं चाहती हूं कि मेरा भी भाई हो जिसकी कलाई पर मैं राखी बांध सकूं। मां ! मैं एक भाई की भीख तुमसे मांगती हूं ....। बहन के हृदय की संवेदनशील पारम्परिक इच्छा को अभिव्यक्ति देता यह गीत वरदायिनी मां के समक्ष एक प्रार्थना है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
		सा	सा-	रे-	-ग	ग	ग
		सां	जोह	बीऽ	ऽरे	क	नैं
रे-	ग	रे	सा	रे	-	-	ग
खेऽ	ल	णे	दा	चॉ	ऽ	ऽ	-
प	प	ग-	-रे	ग	ग	रे	रे
इ	क	वीऽ	ऽर	मं	गा	दे	बि
सा	-	सा	सा	रे	ग	-	ग
ए	ऽ	अ	सां	औं	ऽ	गे	ऽ
रे	ग	रे	सा	रे	-	-	ग
भै	ऽ	ण	भ	रा	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	गऽ	-रे	ग	ग	रे	-रे
इ	क	बीऽ	ऽर	मं	गा	दे	बि
सा	-						
ए	ऽ						

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

53. अंगणे स्हाढ़े दरेका दा बूटा

अंगणे स्हाढ़े दरेका दा बूटा, आई बैह्न्दे कालड़े काग मेरी माँ,
उच्चे खड़ोई मैं दिखदी माए लख औन्दे लख जांदे मेरी माँ।
इक ना आया मेरिया अम्मा दा जाया, होर सै लोक पराये मेरी माँ।।

बड्डे भाइये न भेजेयां माए, बड्डा रखै बड्याई मेरी माँ,
मंझले भाइये ना भेजयां माए, मंझला बड़ा सरमाये मेरी माँ,
छोटड़े भाइये जो भेजयां माए, छोटड़ा बड़ा प्यारा मेरी माँ,
अंगणे स्हाढ़े दरेका दा बूटा, आई बैह्न्दे कालड़े काग मेरी माँ,

उच्चे खड़ोई मैं दिखदी माए लख औन्दे लख जांदे मेरी माँ।
अद्धी-अद्धी राती पहर सवेला बग्गी खड़कदी आई मेरी माँ,
अज ताँ आया मेरी अम्मा दा जाया सब कम छड्डी गले लाया मेरी माँ,
अंगणे स्हाढ़े दरेका दा बूटा, आई बैह्न्दे कालड़े काग मेरी माँ,

उच्चे खड़ोई मैं दिखदी माए लख औन्दे लख जांदे मेरी माँ।
अद्धी-अद्धी राती कोई बड्डा सवेरा बूट खड़कदे आये मेरी माँ,
अज ताँ आया मेरिया अम्मा दा जाया खुशिया च बंडा बधाईयां मेरी माँ,
अंगणे स्हाढ़े दरेका दा बूटा, आई बैह्न्दे कालड़े काग मेरी माँ,

भावार्थ : शिशु जन्म से पूर्व मां बनने जा रही बेटी अपने भाव यूं व्यक्त कर रही है कि हमारे आंगन में पेड़ पर काग बैठ रहे हैं। हे कागा! तू मेरी मां के पास जाना व मेरे भाई को बुला लाना क्योंकि यहां जो भी आ रहे हैं वे सभी पराऐ हैं। फिर वह कहती है कि मेरे बड़े भाई को मंत भेजना वह अपना बड़प्पन दिखाता है और मंझला शर्माता है। छोटे भाई को ही भेजना वह बड़ा प्यारा है। वह ऊँचाई पर खड़ी होकर प्रतीक्षा करती रहती है कि मेरा कोई अपना आएगा। वह सवेरे-सवेरे वग्गी की आहट सुनती है तो अपने भाई को देखते ही सब काम छोड़कर उसे गले से लगाती है। जूतों की आहट सुनती है और देखती है कि उसका भाई आ पहुँचा है। खुशी के अतिरेक में वह झूम उठती है और बधाईयां बांटती है।

पहली दो पंक्तियों में सुसराल में परायापन महसूस करती युवती दार्शनिक सी हो कर कहती है कि पेड़ पर कितने-कितने पक्षी बैठते हैं और उड़ते हैं। पर उनमें से कोई मेरा अपना नहीं होता ......

स्वर लिपी :-

			2				0			3			
										ध़	–	सा	–
										बा	ऽ	ल्	अ
रेग	रे	–	रे	–	सा	–	सा	रे	–	प	–	म	–
श्या	ऽ	ऽ	म	ऽ	क	ऽ	त	ण	ऽ	सां	ऽ	जो	ह
ग	–	–	रे	–	सा	–	सा	–	–	–	–	–	–
नै	ई	ऽ	जी	ऽ	दिं	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	–	ग	–	म	–	प	प	–	प	म	म	ध
जां	ऽ	ऽ	मैं	ऽ	क	ऽ	त	ण	ऽ	बै	ऽ	ठां	ऽ
ध	–	–	ध	–	ध	–	पम	–	–	म	–	–	–
झू	ऽ	ऽ	टै	ऽ	क	ऽ	न्है	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	–	प	–	म	–	प	ध	–	प	–	म	–
झू	ऽ	ऽ	टे	ऽ	यां	ऽ	दे	ऽ	ऽ	मे	ऽ	री	ऽ
ग	–	–	रे	–	सा	–	सा	रे	–	प	–	म	–
मैं	इ	ऽ	या	ऽ	क	ऽ	त	ण	ऽ	सां	ऽ	जो	ह
ग	–	–	रे	–	सा	–	सा	–	–				
नै	ई	ऽ	जी	ऽ	दिं	ऽ	दा	ऽ	ऽ				

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

54. बाल्अ श्याम कतण सांजोह्

बाल्अ श्याम कतण सांजोह नैईं जी दिंदा
जां मैं कतण बैठां झूटै कन्हैया
झूटेयां दे मेरी मैइया, कतण सांजोह् नैईं जी दिंदा
काले़ महीने दिया न्हेरिया राती
जन्मेया कृष्ण मुरारी
कतण सांजोह् नैईं जी दिंदा
जा जम्मेया जा दीवक वले़या
चौ चक होई गेइआ लोई
कतण सांजोह् नैईं जी दिंदा
औंदे ता जांदे मामा–मामी झूटाँदे
झूटेयां देई खलाया जी
कतण सांजोह् नैईं जी दिंदा
चंदण कटाई पंगूड़ा बणानी आं
रेशम डोरां लाईयाँ जी
कतण सांजोह् नैईं जी दिंदा

भावार्थ : इस गीत में शिशु–जन्म के बाद, दिनचर्या में आए परिवर्तन की बात कर के मां बच्चे के प्रति अपने लाड़–दुलार को व्यक्त कर रही है। बच्चे की ज़िद व मनुहार का वर्णन है, इस गीत में। नन्हा श्याम हमें चरखा कातने नहीं देता। जब भी चरखा कातने बैठती हूँ श्याम झूले पर आ बैठता है। अनुरोध करता है कि मैया मुझे झुटारे दे अर्थात् झूला झुला। काले माह की अंधकार भरी रात्री में जन्मा कृष्ण मुझे कातने नहीं देता। इसके जन्म पर सम्पूर्ण सृष्टि आलोकित हो उठी थी। आते–जाते मामा–मामी इसका झूला–झुला कर इसे खिलाते हैं। चन्दन का पेड़ कटवा कर मैंने इसके लिए पालना बनवाया है तथा रेशम की डोरें लगवाई हैं। यह मुझे मेरा काम नहीं करने देता। मां को पुत्र की जो लीलाएं लुभाती हैं, प्रत्यक्षता वह उन्हीं के प्रति खिन्नता व्यक्त कर रही है। परोक्षता यह स्नेह ज्ञापन ही है।

स्वर लिपि (अनिबद्ध प्रकार) :-

ध़	सा	सा	रे	ध़	ध	प़-	प़
अं	ग	णे	ऽ	ऽ	स्	हाढ़े	ऽ
ध़	सा	-	सा	सा	रे	रेग	सा
द	रे	का	दा	बू	ऽ	टाऽ	ऽ
सारे	ग	रेरे	ध़	ध़-	ध़सा	सा	सारे
आई	वै	हन्दे	ऽ	काऽ	लऽ	ड़े	काऽ
गरे	गरे	सा	सा	-	-	-	-
गऽ	मेऽ	री	मां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ध़	सा-	सा	रे	ध़	ध़	प़	प़
उ	च्चे	ख	ड़ो	ई	मैं	ऽ	ऽ
ध़	सा	-	सा	सा	रे	रेग	सा
दि	ख	दी	मा	ऽ	ए	ऽऽ	ऽ
सारे	ग	रेरे	ध़	ध़-	ध़सा	सा	सारे
लऽ	ख	औऽ	न्दे	ऽऽ	लऽ	ख	जांऽ
गरे	गरे	सा	सा	-	-	-	-
देऽ	मेऽ	री	मां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

55. मेरा दिल दरिया

मेरा दिल दरिया नी नणदे
खिल्लां पतासे नणदे मेरे मत अणदी
मेरे लड्डुआँ दा रवाज नी नणदे ...

झग्गू ता टोपू नणदे मेरे मत अणदी
मेरे ताँ सूटां दा रवाज नी नणदे
मेरा दिल दरिया नी नणदे

चाँदी ताँ पित्तल् नणदे मेरे मत अणदी
मेरे ताँ सोने दा रवाज नी नणदे
मेरा दिल दरिया नी नणदे

न्हेरे ता न्हेरे नणदे मेरे मत औन्दी
मेरे ताँ लोई दा रवाज नी नणदे
मेरा दिल दरिया नी नणदे

लैणे ताँ दैणे दी तूं गल्ल मत करदी
भाई ताँ तेरा है गरीब नी नणदे
मेरा दिल दरिया नी नणदे

भावार्थ : इस गीत में हास-परिहास के साथ-साथ व्यंग्य भी है। शिशु की माँ की चतुराई उसकी बातों से जाहिर हो रही है। वह जन्मोत्सव में अपनी ननद को आमंत्रित कर रही है। 'अपना दिल, दरिया बता रही है परन्तु अच्छी-अच्छी वस्तुएं लेकर, अंधेरे से पहले-पहले पहुंच जाने का आदेशनुमा अनुरोध ननद से कर रही है। कहती है कि मेरा मन बड़ा है। खीलें व बताशे लेकर मेरे घर में मत आना। हमारे यहां लडडू लेकर आने की रस्म है। बच्चे के लिए मात्र कमीज तथा टोपी नहीं लाना यहां पूरा सूट लाने की प्रथा है। चांदी या पीतल लेकर नहीं, सोने का गहना लेकर आना। आते-आते अंधेरा मत कर देना दिन रहते पहुंचना।

स्वर लिपी :-

		0				0	
ध़	सा	सा	नि़	सा	रे	सा	नि
मे	ऽ	रा	ऽ	दि	ल	द	रि
ध़	–	–	नि़	सा–	रे–	सा	–
या	ऽ	ऽ	नी	नऽ	णऽ	दे	ऽ
–	ध़	सा	सा	रे–	ग–	रेग	म
ऽ	खि	ल्लां	प	ताऽ	सेऽ	नण	दे
–	म	ग	रेसा	सारे	ग	सा	–
ऽ	मे	रे	मत	अऽ	ण	दी	ऽ
–	ध़	सा	सा–	रे–	–	सा	नि
ऽ	मे	रे	लड्डु	डआँऽ	ऽ	दा	र
ध़	–	–	नि़	सा–	रे–	सा	–
वा	ऽ	ज	नी	नऽ	णऽ	दे	ऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

अन्त में कहती है कि लेन–देन की बात तूं मत करना क्योंकि तेरा भाई गरीब है। इस गीत की प्रथम पंक्ति, 'मेरा दिल दरिया', सहज ही हास्य उत्पत्ति का हेतू बन जाती है।

56. तत्ते तत्ते बबरू गोरी दिया

तत्ते-तत्ते बबरू गोरी दिया सस्सू देई भेजे न
कुसा देइया बेला नूएं होलरू जाया है
चन्दे दिया चानणिया परछाइयां बेई करी नौह्ती आं
उसा देइया बेला वे सस्सू होलरू जाया है

तत्ते-तत्ते बबरू गोरी दिया जठाणिया देई भेजे न
कुसा देइया बेला दराणिए होलरू जाया है
चन्दे दिया चानणिया परछाइयां बेई करी नौह्ती आं
उसा देइया बेला वे जठाणिये होलरू जाया है

तत्ते-तत्ते बबरू गोरी दिया दराणिया देई भेजे न
कुसा देइया बेला जठाणिए होलरू जाया है
चन्दे देईया चानणियां परछाईयां बेई करी नौह्ती आं
उसा देईया बेला वे दराणिए होलरू जाया है

भावार्थ : इस गीत में शिशु जन्म तथा जन्मदिन के अवसर विशेष पर परिवार की महिला सदस्यों का नवजात बच्चे की मां के प्रति स्नेह-सरोकर अभिव्यक्त हुआ है। गीत प्रारम्भ होता है कि गर्म-गर्म बबरू (आटे व शक्कर से बना गोलाकार मिष्ठान) सास ने बहू के लिए भेजे हैं। उसने यह भी पूछा है कि बहू ने किस समय होलरू अर्थात बच्चे को जन्म दिया। बहू का उत्तर है कि चान्द की चान्दनी की परछाई में नहाते हुए मैंने शिशु को जन्म दिया। अर्थात रात के दूसरे पहर में शिशु का जन्म हुआ। क्रमशः जेठानी (पति के बड़े भाई की पत्नी) तथा देवरानी (पति के छोटे भाई की पत्नी) की ओर से भी यही मिष्ठान भेजने का वर्णन है। यही प्रश्न तथा यही उत्तर दोहराया गया है। शिशु जन्म एक उत्सव है जिसमें समस्त परिजनों की खुशी सम्मिलित है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
सा	रे	ध़	सा	सा-	रे-	रे-	रेसा
त	त्ते	त	त्ते	बऽ	बरू	गोरी	दिया
सा	-	सारे	गरे	रे	रे·	सा	-
स	ऽ	स्सू	देई	भे	जे	न	ऽ
सा	रे	ध़-	-सा	सा-	रे-	रे-	रेसा
कु	सा	देइ	ऽया	वेऽ	लाऽ	नूऽ	एंऽ
सा	-	सारे	गरे	रे	रे	सा	-
हो	ऽ	लऽ	रुऽ	जा	या	है	ऽ
सा	रे	ध़	सा	सा	रे-	रे	रेसा
च	न्दे	दि	या	चा	नणि	यां	पर
सा-	-	सारे	गरे	रे	रे-	सा	-
छाइ	यां	बेई	करी	नौ	हृती	आं	ऽ
सा	रे	ध़-	सा	सा-	-रे	रे	रेसा
उ	सा	देइ	या	वेऽ	लावे	स	स्सू
सा	-	सारे	गरे	रे	रे	सा	-
हो	ऽ	लऽ	रुऽ	जा	या	है	ऽ

प्रस्तुत गीत में केवल स्थाई है। गीत की अन्य पंक्तियां इन्हीं स्वरों पर गाई जाएंगी।

57. हलवाईया कड़ाईया मिन्जो दे

हलवाईया कड़ाईया मिन्जो दे मेरा मन हलवे जो
सस्स मनाई लेई पैरा हत्थ लाईकैं
सौरा मनाया न जाए, मेरा मन हलवे जो
जठाणी मनाई लेई पैरा हत्थ लाईकैं
जेठ मनाया न जाए, मेरा मन हलवे जो
हलवाईया कड़ाईया मिन्जो दे मेरा मन हलवे जो
नणद मनाई लेई पैरां हत्थ लाई कैं
नणदोइया मनाया न जाए, मेरा मन हलवे जो
हलवाईया कड़ाईया मिन्जो दे मेरा मन हलवे जो

भावार्थ : यह गीत 'सहूड़ी' के अन्तर्गत आता है। ये ऐसे गीत हैं जो शिशु जन्म के पहले अर्थात जननी की गर्भावस्था में गाए जाते हैं। इस गीत में मां बनने की प्रक्रिया से गुज़रती स्त्री की इच्छाओं का वर्णन है। इस समय किसी खास भोज्य पदार्थ की चाह अचानक जागती है। यहां मां बनने जा रही स्त्री का मन हलवा खाने को होता है। वह हलवाई से कढ़ाई के लिए अनुरोध करती है। वह कहती है कि सास को मैं इसके लिए मना लूंगी। उनके पांव छूकर अनुरोध करूंगी तो वह मान जाएंगी। परन्तु ससुर को मैं नहीं मना पा रही। इसी तरह जेठणी तथा देवरानी को भी मना लेने की बात कहती है। परन्तु जेठ तथा देवर नहीं मानते। हल्का संकेत इस ओर है कि नारियां इस अवसर विशेष पर गर्भावस्था से गुज़रती स्त्री की इच्छाओं को समझती हैं और उनका सम्मान करती हैं। लेकिन पुरूष न तो समझते हैं और न ही इच्छाएं पूरी करने में सहायक होते हैं।

स्वर लिपी :-

		0				0	
		ध़	सा	रे	–	म	म
		ह	ल	वा	ई	या	क
ग–	ग	रे	रे	सा	रे	नि़	नि़
ड़ाई	या	मिं	जो	दे	ऽ	ऽ	मे
सा	–	रे	रे	म	ग	रे	रे
रा	ऽ	म	न	ह	ल	वे	ऽ
सा	–	–	–	–	ध	–ध़	स
जो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स	स्स	म
रे	ग	ग	म	–	म	ग	रेसा
ना	ई	ले	ई	ऽ	पै	रां	हत्थ
सारे	ग	रे	स	ध–	स–	स–	नि
ला–	ई	कैं	ऽ	सौऽ	राऽ	ऽऽ	म
सारे	–	सा	नी़	ध़	–	ध़	नि
नाऽ	ऽ	या	न	जा	ऽ	ए	मे
सा	–	रे	रे	म	ग	रे	रे
रा	ऽ	म	न	ह	ल	वे	ऽ
सा	–	–	–	–	–	–	–
जो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

58. चन्द घनेरड़ी रात

चन्द घनेरड़ी रात अजी श्यामा चन्द घनेरड़ी रात।
मरुए छौआं कौण खड़ी अजी हां मरुए छौआं।

तू साहूकारा दा पुत अजी श्यामा तू साहूकारा दा पुत,
गरीबां दी धियो खड़ी अजी हां गरीबां दी धियो खड़ी।

जे तू गरीबां दी धियो अजी राधे जे तू गरीबां दी धियो,
पौड़ी-पौड़ी औवां चढ़ी अजी हाँ पौड़ी-पौड़ी औवां चढ़ी।

खेलदी थी सैयां दे नाल अनी राधे खेलदी थी सैयां दे नाल,
सैयां सरदार कि हुण कैं चुप खड़ी अजी हाँ पौड़ी-पौड़ी औवां चढ़ी।

बड़ी भारी सरमां दी बात अजी श्यामा बड़ी भारी सरमा दी बात
किसी संग कही न जावे अजी हाँ किसी संग कहीं न जावे।

मेरा तेरा बड़ा प्यार अजी राधे मेरा तेरा प्यार,
मेरे संग कहि ओ देणी अजी हाँ मेरे संग कहि ओ देणी।

कंड्डी गया लसकार अजी श्यामा कंड्डी गया लसकार,
जंघे बांहे सैलपइया अजी हां हां मरुए छौआं।

भावार्थ :- पति अपनी नव विवाहिता पत्नी से जो माँ बनने वाली है, मीठी चुटकी लेते हुए पूछता है कि घनी चान्दनी युक्त रात छाई हुई है। मरुए की छाया में कौन खड़ी है? तो पत्नी कहती है, तू तो साहूकार का बेटा है, गरीब की लड़की खड़ी है। पति कहता है कि अगर तू गरीब की लड़की है तो मैं एक-एक सीढ़ी चढ़ता हुआ ऊपर आऊं, हे राधा तू तो अपने प्रियतम के साथ खेलती थी। अब चुप क्यों खड़ी है। पत्नी कहती है कि बड़े शर्म की बात है, किसी से कही नहीं जाती। पति कहता है कि तेरा मेरा बहुत प्यार है तू मेरे साथ कह दे। तब वह बताती है कि उसे प्रसव-वेदना आरम्भ हो गई है। पीठ में दर्द की लहर सी उठ रही हैं और बांहों तथा टांगों में बेचैन हिलोरें उठती मालूम पड़ रही है। मां बनने की प्रसन्नता तथा उत्साह, दर्द में भी गौरव महसूस करवा रहा है। साथ ही लाज का भाव भी है।

स्वर लिपी :-

			2				0			3			
ध़	–	सा	सा	–	सा	–	रे	म	–	प	–	म	–
च	ऽ	न	द	ऽ	घ	ऽ	ने	ऽ	ऽ	र	ऽ	ड़ी	ऽ
प	–	–	–	–	प	–	प	म	–	प	ध	ध	–
रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त	ऽ	अ	जी	ऽ	श्या	ऽ	मा	ऽ
प	ध	–	प	–	म	–	म	–	–	म	ध	ध	ग॒
च	ऽ	न	द	ऽ	घ	–	ने	ऽ	ऽ	र	ऽ	ड़ी	ऽ
ग॒	–	–	रे	ग॒	सा	सा	सा	–	–	रे	म	म	–
रा	ऽ	ऽ	त	ऽ	म	रु	ए	ऽ	ऽ	छौ	ऽ	आं	ऽ
ग॒	रे	–	सा	–	रे	–	सा	–	–	नि॒	–	ध़	सा
कौ	ऽ	ऽ	ण	ऽ	ख	ऽ	ड़ी	ऽ	ऽ	अ	ऽ	जी	ऽ
सा	–	–	–	–	सा	सा	रे	ग॒	सा	रे	म	म	–
हां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	रु	ए	ऽ	ऽ	छौ	ऽ	आं	ऽ
ग॒	रे	–	सा	–	रे	–	स	–	–	नि॒	ध़	ध़	सा
कौ	ऽ	ऽ	ण	ऽ	ख	ऽ	ड़ी	ऽ	ऽ	अ	ऽ	जी	ऽ
सा	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
हां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

59. उआरे ते उतरी बैहण देवकी

उआरे ते उतरी बैहण देवकी अजी ओ,
अजी ओ! पारे ते उतरी जसोदा झांझर झूलदी।
बैहणी तां बैहणीं दोहयो किट्ठियां होईयां अजी ओ,
अजी हो! दुख-सुख लैणा सणाई झांझर झूलदी।
बैहण तां पुच्छे जिसा देवकिया अजी ओ,
अजी ओ! दुबली किहियां करी होई झांझर झूलदी।
सत्त तां जम्मैं राजैं कंसैं मारे अजी ओ,
अजी ओ! अठुएं पैर है भारी झांझर झूलदी।
जे तेरे जम्मै भैंण पुतर ही अजी ओ,
अजी ओ! कन्या लियां बदलाई झांझर झूलदी।
भरेया छड़ोलू देवकी घरैं आई अजी ओ,
अजी ओ! चढ़ी गए धरम दुआर झांझर झूलदी।
भादूं महीना तिथ अष्टमी अजी ओ,
अजी ओ! जन्मेया जदुपति राव झांझर झूलदी।
जागदे पहरी रामा सेई गए अजी ओ,
अजी हो! खुली गए धरम दुआर झांझर झूलदी।
चादरुए छेकी देवकिएं फाह्लड़ू कित्ते अजी ओ,
अजी ओ! देई दित्ता वसुए दी गोद झांझर झूलदी।
अग्गैं सैह जमना लैहरियां लैंदी अजी ओ,
अजी हो! पिच्छे ते सिंह गरणाए झांझर झूलदी।
चरनां तां बंदी जमना पिछछैं गेई अजी ओ,
अजी ओ! सिंहां लिया बणवास झांझर झूलदी।
सुतिए जसोदा भैणें जागी जायां अजी ओ,
अजी हो! कन्या दियां बदलाई झांझर झूलदी।
कन्या लेई बसुआ घरैं आया अजी ओ,
अजी ओ! चढ़ी गए धरम दुआर झांझर झूलदी।
औंदड़ी कन्या रोणां लग्गी अजी ओ,
अजी ओ! जागी गए पहरेदार झांझर झूलदी।
खबर होई जिस कंसे राजे अजी ओ,
अजी ओ! देवकिएं कन्या है जाई झांझर झूलदी।
होणा था देवकिया पुत्र ही अजी ओ,
अजी ओ! कन्या किस बिधा होई झांझर झूलदी।
खबर करा जिस चौंसरे धोबिएं अजी ओ,
अजी ओ! कन्या जो सिला पर पछाड़ झांझर झूलदी।
हत्थे ते छुटी कन्या ओह गेई है अजी ओ,
अजी ओ! अम्बरैं होया लसकारा झांझर झूलदी।
मिंजो कजो मारदा वो कंसा भाइया अजी ओ,
अजी ओ! तेरे मारने वाला जमना पार झांझर झूलदी।

स्वर लिपी :-

			2				0			3			
ध़-	ध़सा	सा	रे	म	प	म-	प	-	म	पनि॒	-प	प	म
उआ	रेऽ	ते	उ	त	री	बैहण	दे	ऽ	व	कीऽ	ऽऽ	अ	जी
पग॒	ग॒ग॒	ग॒म	प	-	-	-	पम	पनि़॒	पम	ग॒	रे	सा	ग॒रे
ओऽ	अजी	ओऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	पाऽ	रेऽ	तेऽ	उ	त	री	ज
नि़	-	नि़	सा	-	रेम	पम	ग॒रे	सारे	रेनि़	सा	-	साग॒	ग॒रे
सो	ऽ	धा	झां	ऽ	झऽ	रऽ	झूऽ	ऽऽ	ल	दी	ऽ	अऽ	जीऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

भावार्थ : इस गीत में कृष्ण-जन्म की कथा देवकी तथा यशोदा के परस्पर संवादों में अभिव्यक्त हुई है। अतिकल्पना (फैंटेसी) का प्रयोग लोक साहित्य में बहुधा होता है। यहां भी देवकी तथा यशोदा के मिलन की परिकल्पना की गई है। दोनों सुख-दुःख सांझा कर रही हैं। देवकी अपनी व्यथा सुनाती है कि उसने सात पुत्रों को जन्म दिया परन्तु कंस ने उन सभी का वध करवा दिया। अब आठवीं बार उसने गर्भ धारण किया है। यशोदा कहती है कि यदि तुमने पुत्र को जन्म दिया तो मेरी पुत्री से बदला लेना। भादों माह की अष्टमी को यदुपति ने जन्म लिया। द्वार खुल गए। ओढ़नी को फाड़ कर देवकी ने बच्चे को ढका-लपेटा। वासुदेव शिशु को लेकर चले तो राह में सिंह गर्जना करने लगे और यमुना आन्दोलित हो उठी। जो कन्हाई के चरण स्पर्श कर के शान्त हुई तथा सिंह भी जंगल को लौट गए। यशोदा को पुत्र दिया व कन्या लेकर वह लौटे तो उसके रूदन से पहरेदार जाग गए। राजा कंस को अचरज हुआ कि पुत्र ही पैदा होना था, बेटी ने कैसे जन्म लिया। उसने चौसर धोबी को बुलवाया जिसने पत्थर पर पछाड़ कर उसकी हत्या करनी चाही परन्तु हाथ से छूट कर देवी कन्या आसमान की ओर जाते हुए बोली कि कंस तुम मुझे क्यों मार रहे हो। तुम्हें मारने वाला, यमुना पार पहुंच गया है। मैं तेरे महलों के ऊपर बिजली बन कर चमकूंगी तथा तेरे वैभव का नाश कर दूंगी .....। पूरे गीत में दो शब्द बार-बार आए हैं - 'झांझर झूलदी' ये सुर-लय साधने हेतु प्रयोग हुए हैं। सरस माधुर्य उत्पन्न करते हैं। इस गीत में यशोदा का बलिदान पराकाष्ठा पर है।

60. चन्दर खलौणा दे मेरी अम्मा जी

चन्दर खलौणा दे मेरी अम्मा जी,
चन्दर खलौणा लैणा ऐ।
चन्दर खलौणे दा चा मेरी अम्मा जी,
चन्दर खलौणा लैणा ऐ।

चन्दर खलौणा दे मेरी ताई जी,
चन्दर खलौणा लैणा ऐ।
चन्दर खलौणे दा चा मेरी ताई जी,
चन्दर खलौणा लैणा ऐ।

चन्दर खलौणा दे मेरी चाची जी,
चन्दर खलौणा लैणा ऐ।
चन्दर खलौणे दा चा मेरी चाची जी,
चन्दर खलौणा लैणा ऐ।

चन्दर खलौणा दे मेरी बूआ जी,
चन्दर खलौणा लैणा ऐ।
चन्दर खलौणे दा चा मेरी बूआ जी,
चन्दर खलौणा लैणा ऐ।

चन्दर खलौणा दे मेरी मामी जी,
चन्दर खलौणा लैणा ऐ।
चन्दर खलौणे दा चा मेरी मामी जी,
चन्दर खलौणा लैणा ऐ।

स्वर लिपी :-

		0				0	
ध़सा	सासा	रेग	सा-	सारे	रेम	मम	मग
चन्द	रख	लौऽ	णाऽ	देऽ	मेरी	अम्मा	जीऽ
रेग	रेसा	रेम	मग	रेग	रेसा	सा-	--
चन्द	रख	लौऽ	णाऽ	लैऽ	णाऽ	ऐऽ	ऽऽ
ध़सा	सासा	रेग	सा-	सारे	रेम	मम	मग
चन्द	रख	लौऽ	णेदा	चॉऽ	मेरी	अम्मा	जीऽ
रेग	रेसा	रेम	मग	रेग	रेसा	सा-	--
चन्द	रख	लौऽ	णाऽ	लैऽ	णाऽ	ऐऽ	ऽऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

भावार्थ : यह गीत शिशु की इच्छाओं को दर्शाता एक सरल गीत है। इसलिए महिलाएं सहज ही इसमें अपना स्वर मिला देती हैं। सूरदास लिखित कृष्ण-लीलाओं का असर जन्मगीतों में अक्सर परिलक्षित होता है। यहां, इस प्रस्तुत गीत में भी श्री कृष्ण की तर्ज़ पर बालक चन्द्र रूपी खिलौने की मांग कर रहा है। सर्वप्रथम अपनी मां से अनुरोध करते हुए कहता है कि मुझे चन्द्र खिलोना चाहिए। मेरे मन में उसी से खेलने का चाव उमड़ा है। यही अनुरोध वह अन्य परिजनों से भी करता है। सांझे परिवार में उसके लिए ताई, चाची, बुआ तथा मामी सभी मां जैसी हैं। उनसे भी वह उसी अधिकार से मांगता है जिस अधिकार से अपनी मां से मांगता है। यह अधिकार भाव, स्नेह बन्धनों की गांठ को मजबूत करता है।

61. अज्ज मिंजो चॉ होया

अज्ज मिंजो चॉ बड़ा होया कृष्णा,
तेरे शुभ दिन मनाणे दा मेरेया श्यामा,
तेरे शुभ दिन मनाणे दा।

हत्थे च गड़वा गंगा जल पाणी,
स्नान करावण आई आं कृष्णा,
तेरे शुभ दिन मनाणे दा, मेरेया श्यामा।।

हत्थे च कटोरी केसर कोली़
तिलक लगावण आई आं कृष्णा
तेरे शुभ दिन मनाणे दा, मेरेया श्यामा।।

हत्थे च किरनी फुल्लां कनैं भरनी
हार पह्नावण आई आं कृष्णा
तेरे शुभ दिन मनाणे दा, मेरेया श्यामा।।

हत्थे च थाली़ बदाम-सुपारी
भोग लगावण आई आं कृष्णा
तेरे शुभ दिन मनाणे दा, मेरेया श्यामा।।

भावार्थ : इस गीत में मन में उमड़ती प्रसन्नता व चाव का वर्णन है। पुत्र जन्म पर खुशियां तथा पूजा-अर्चना सम्बन्धी संस्कार सम्पन्न करने को लेकर मां का उतावलापन अभिव्यक्त हुआ है। वह कहती है कि आज मुझे बहुत चाव तथा उत्साह हो रहा है। तुम्हारे जन्म से संम्बद्ध शुभ दिन मनाने के लिए मैं गंगा जल से भरा गड़बा (कलश) लेकर आई हूं। मैं तुम्हें स्नान करवाना चाहती हूं। केसर से भरी कटोरी लेकर आई हूं ताकि तुम्हारे माथे पर तिलक लगा सकूं। फूलों से भरी बांस की बनी टोकरी (किरनी) लेकर आई हूं। तुम्हें हार पहनाने के लिए। बादाम व सुपारी भरी थाली मेरे हाथों में है, भोग हेतु। पुत्र को श्री कृष्ण का रूप मानते हुए उसकी विधिवत् पूजा-अर्चना का चाव वर्णित हुआ है।

स्वर लिपी :-

			2				0			3			
सा	रे	–	रे	म	म	ग	रे	सा	–	सा	–	सा	–
अ	ज	ऽ	मिं	ऽ	जो	ऽ	चॉ	ऽ	ऽ	ब	ऽ	ड़ा	ऽ
सा	रे	–	म	–	ध	प	प	–	–	प	ध	ध	प
हो	या	ऽ	कृ	ऽ	ष्ट	ऽ	णा	ऽ	ऽ	ते	ऽ	रे	ऽ
रे	रे	–	म	म	म	प	प	ध	–	प	म	प	म
शु	भ	ऽ	दि	न	म	ऽ	ना	ऽ	ऽ	णे	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	–	–	–	–	–	सा	रे	–	रे	ध	ध	प
दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मे	रे	ऽ	या	ऽ	श	या
प	–	–	प	ध	ध	प	रे	रे	–	म	म	म	प
मा	ऽ	ऽ	ते	ऽ	रे	ऽ	शु	भ	ऽ	दि	न	म	ऽ
प	ध	–	प	म	प	म	म	–	–	–	–	–	–
ना	ऽ	ऽ	णे	ऽ	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

62. बालक लोरी लै

कुंगुए भरियां कटोरियां, दराटिया लुणी हरी द्रूब
कि बालक लोरी लै।
सस्सू नी नर्वेदणिये मेरे उठी वो कलेजें पीड़
कि बालक लोरी लै।
नूंए नी नवेलड़िये, तैं क्या हिलकण-मिलकण लाया
तैं सुतड़ा लोक जगाया
कि बालक लोरी लै।
जिस दिन गीगें जन्म लेया
पेई बो नगारेयां चोट
कि बालक लोरी लै।
सस्सू नी सुण मेरिये लायां दमां दियां बोरियां
अपणेयां देवतेयां जठेरेआं मनायां
कि बालक लोरी लै।
नूएं नी मेरीए तेरा किल्हण-मिल्हण सच्चा
तेरा किल्हण-मिल्हण सच्चा, जुग-जुग जीए तेरा बच्चा
कि बालक लोरी लै।

भावार्थ : प्रस्तुत गीत में बहू की प्रसवास्था का वर्णन है। पुत्र उत्पन्न होने से पहले घर में कुम-कुम कटोरी में भरकर रखा है। द्रूव भी आंगन में इतनी उगी है कि उसे द्रांती से काट लो। बहू के कलेजे में पीड़ा हो रही है। वह सास के प्रति उपालम्भपूर्ण सोचती है कि उसे इस बात का पता नहीं कि उसकी बहू माँ बनने वाली है। पुत्रवधू जब बार-बार करवटें बदलती है और प्रसव वेदना में कराहती है तो सास परेशान होती है ओर कहती है कि तुम औरों को भी सोने नहीं देती। किन्तु अचानक बहू पुत्र को जन्म देती है। इस स्वर को सुनते ही नगाड़ों पर चोट पड़ जाती है। अर्थात् सब तरफ यह शुभ समाचार फैल जाता है। बहू अपनी सास को कहती है कि अब आप धन की बोरीयां लुटा दो,

स्वर लिपी :-

		0				0	
सा-	रे	ध़-	सा-	रे	-म	प	-
कुँगु	ए	भरि	यांक	टो	-रि	यां	ऽ
म-	प-	ध-	प-	मम	-रे	म-	प-
दरा	टिया	लुणी	हरी	द्रुव	किऽ	बा	लक
म	प	ध़	प	मम	-रे	म-	प-
लो	री	लै	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
सा-	रे-	ध़-	सा-	रे-	-म	प-	--
सऽ	स्सू	नीऽ	नऽ	वेंद	ऽणि	येऽ	मेरे
म-	प-	ध-	प-	मम	-रे	म-	प-
उठी	वोक	लेऽ	जेऽ	पीऽ	ऽड़	बाऽ	लक
म	प	ध	प	मम	-रे	म-	प-
लो	री	लै	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इसी प्रकार गाई जाएंगी।

आपको पोत्र की प्राप्ती हुई है। तब बेचारी सास बहू को कहती है कि तुम्हारी छटपटाहट सत्य थी। मैं तो यह समझ ही न सकी। तुम्हारा बेटा जुग-जुग जीये और बालक को उठाकर लोरी देने लगती है।

63. झग्गे तेरे सुच्चे जड़े

झग्गे तेरे सुच्चे जड़े बाला जी झग्गा तिज्जो किन्ही दिता
रावल पिण्डी मेरे दादा रैह्न्दे दादी जी मिन्जो झग्गा ऊन्हा दिता
झग्गे तेरे सुच्चे ....

झग्गे तेरे सुच्चे जड़े बाला जी झग्गा तिज्जो किन्ही दित्ता
रावल पिण्डी मेरे ताया रैह्न्दे ताई जी मिन्जो झग्गा ऊन्हा दिता
झग्गे तेरे सुच्चे ....

झग्गे तेरे सुच्चे जड़े बाला जी झग्गा तिज्जो किन्ही दित्ता
रावल पिण्डी मेरे चाचा रैह्न्दे चाची जी मिन्जो झग्गा ऊन्हा दित्ता
झग्गे तेरे सुच्चे ....

झग्गे तेरे सुच्चे जड़े बाला जी झग्गा तिज्जो किन्ही दित्ता
रावल पिण्डी मेरे बूआई रैह्न्दे बूआ जी मिन्जो झग्गा ऊन्हा दित्ता
झग्गे तेरे सुच्चे ....।

भावार्थ : इस गीत में बच्चे से परिवार के स्नेह-सम्बन्ध का विवरण है। संयुक्त परिवार में शिशू सभी का लाड़ला-दुलारा होता है। सुन्दर कमीज पहने हुए बच्चे से दादी पूछती है कि तुम्हारे कुर्त्ते में असली मोती जड़े हुए हैं। यह तुम्हें किसने दिया है। बच्चा कहता है कि मेरे दादा, रावल पिण्डी में रहते हैं, उन्होंने ही यह उपहार मुझे दिया है। यही प्रश्न ताई, चाची तथा बुआ करती है। बालक उत्तर में ताया, चाचा तथा फूफा द्वारा मोतियों जड़ा कुर्त्ता लाने की बात कहता है। विभाजन पूर्व से गाए जा रहे इन गीतों में रावल पिण्डी तथा लाहौर शहर का वर्णन अक्सर आता है। दोनों देशों के मध्य कितनी भी दूरियां आ गई हों। परन्तु लोकमानस ने इन शहरों को बिसराया नहीं है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
सा	रे	नी	ध	ध़	सा	रे	रे
झ	ग्गे	ते	रे	सु	च्चे	ज	ड़े
सा	रे	म	–	ग	रे	सानि़	सा
बा	ला	जी	ऽ	झ	ग्गा	तिज्	जो
रे	--	सा	–	सारे	-सा	नि़ध़	ध़ध़
कि	न्हीं	दि	ता	राव	लपि	ण्डीऽ	मेरे
सा	–	रें-	-रे	सा	रे	म	–
दा	दा	रै	न्दे	दा	दी	जी	ऽ
ग	रे	सानि	-सा	रे	--	सा	–
झ	गा	मिऽ	न्जो	ऊ	न्हा	दि	ता

गीत के अन्य बोल भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाए जाएंगे।

64. ऐसा छन्नरिया

ऐसा छन्नरिया पेटे जे उगमे बैर ही बैर पुकारै
मेरा मन बैरां जो, बैर ही बैर पुकारै ......

बैरां जो ढूंढण सौहरा जे निकले
घुमी-फिरी घर आए, मेरा मन बैरां जो
ऐसा छन्नरिया पेटे जे उगमे, बैर ही बैर पुकारै
मेरा मन बैरां जो .....

बैरां जो ढूंढण जेठ जे निकले
ताश खेली घर आए, मेरा मन बैरां जो
ऐसा छन्नरिया पेटे जे उगमे, बैर ही बैर पुकारै
मेरा मन बैरां जो .....

बैरां जो ढूंढण देयोर जे निकले
खिनुआँ खेली घर आए, मेरा मन बैरां जो
ऐसा छन्नरिया पेटे जे उगमे, बैर ही बैर पुकारै
मेरा मन बैरां जो .....

बैरां जो ढूंढण कन्त जे निकले
बैर लेई घर आए, मेरा मन बैरां जो
ऐसा छन्नरिया पेटे जे उगमे, बैर ही बैर पुकारै
मेरा मन बैरा जो .....

भावार्थ : प्रसवावस्था में एक भावी मां क्या अनुभव करती है, इसी का वर्णन इस गीत में है। शरीर ही नहीं, मन के स्तर पर भी बहुत परिवर्तन आता है। खान-पान को लेकर, इच्छाएं अनियन्त्रित हो जाती हैं। जन्मगीतों के वर्गीकरण के आधार पर, ऐसे गीत 'सूहड़ी' शीर्षक के अन्तर्गत आते हैं। मां बनने जा रही युवती कहती है कि ऐसा शरारती खिलदंड बच्चा मेरे पेट में हलचल मचा रहा है जो बैर खाना चाहता है। बैर-बैर पुकार रहा है अत: मेरा मन बैर खाने को

स्वर लिपी :-

			2				0			3			
सा	–	–	सा	–	सा	–	रे	सा	–	रे	–	–	–
ऐ	ऽ	ऽ	सा	ऽ	छ	ऽ	न्न	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ
नी़	–	–	सा	–	सा	–	रे	सा	नि़	सां	रे	–	–
पे	ऽ	ऽ	टे	ऽ	जे	ऽ	उ	ग	ऽ	मे	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	–	–	सा	–	सा	–	सा	–	–	सा	–	सा	रे
बै	ऽ	ऽ	र	ऽ	ही	ऽ	बै	ऽ	ऽ	र	ऽ	पु	ऽ
नी़	–	–	सा	–	सा	–	रे	सा	नि़	सा	रे	–	–
का	ऽ	ऽ	रै	ऽ	मे	ऽ	रा	ऽ	ऽ	म	ऽ	न	ऽ
नि़	–	–	सा	–	सा	–	सा	–	–	–	–	–	–
वै	ऽ	ऽ	रां	ऽ	जो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

हो रहा है। सुसर बैर लाने के लिए घर से निकलते हैं। परन्तु घूम फिर कर लौट आते हैं। मेरे ज्येष्ठ (पति के बड़े भाई) बैर ढूंढने घर से बाहर गए। लेकिन ताश खेल कर खाली हाथ वापिस आ गए। देवर भी बेर लाने का बहाना कर के निकला, परन्तु गेंद खेल कर घर आ गया। मेरे पति मेरी इच्छा पूरी करने के लिए निकले और बेर ले आए। अर्थात मेरे प्रिय के अतिरिक्त किसी को भी मेरी इच्छा/अनिच्छा का धयान नहीं है। हास परिहास के बहाने सम्बन्धों की ज़रा-ज़रा सच्चाइयां सामने आ जाती हैं।

65. बीहणे क्यारिया वीजदिया

बीहणे क्यारिया बीजदिया जी लसाका गेया
बाहरे ते पुच्छदा है सौरा नूएं तिजो क्या जी होया
अन्दरे ते दिन्दी जवाबा मरद पीड़ां क्या जाणदे।

बीहणे क्यारिया बीजदिया जी लसाका गेया
बाहरे ते पुच्छदा है जेठ तिजो क्या जी होया
अन्दरे ते दिन्दी जवाबा मरद पीड़ां क्या जाणदे।

बीहणे क्यारिया वीजदिया जी लसाका गेया
बाहरे ते पुच्छदा है द्योर भावी तिजो क्या जी होया
अन्दरे ते दिन्दी जवाबा मरद पीड़ां क्या जाणदे।

भावार्थ : यह गीत प्रसव पूर्व की पीड़ा के सम्बन्ध में है। मां शिशु को जन्म देने की प्रक्रिया में बहुत कष्ट से गुजरती है। इस दर्द को केवल नारी ही समझ सकती है। केवल नदी जानती है कि चप्पू कितना गहरा जाता है मल्लाह नहीं जान सकता। नौका में बठै लोग भी नहीं जान पाते। इसी तरह पुरूष इस कष्ट को नहीं समझ सकते। धनिया बीजते हुए सुवती की पीठ में दर्द की लहर उठती है। एक बिजली सी लहरा जाती है। ससुर पूछते हैं कि बहू तुम्हें क्या हुआ है। तो वह उत्तर देती है कि मैं क्या बताऊं। क्योंकि मर्द इस पीड़ा को नहीं समझ सकते। बारी-बारी से परिवार के सभी पुरूष सदस्य अर्थात पति का बड़ा व छोटा भाई भी यही प्रश्न पूछता है। वह यही उत्तर दोहराती है कि आप मेरा दुःख नहीं समझ सकते।

स्वर लिपी :-

			2				0			3			
प़	–	सा	नि़	–	नि़	–	सा	–	–	सा	–	सा	–
वी	ऽ	ह	णे	ऽ	क	ऽ	या	ऽ	ऽ	रि	ऽ	या	ऽ
रे	–	–	सा	–	सा	–	नि़	–	–	नि़	–	सा	–
वी	ऽ	ऽ	ज	ऽ	दि	ऽ	या	ऽ	ऽ	जी	ऽ	ल	ऽ
रे	–	–	सा	–	नि़	–	सा	–	–	–	–	–	–
सा	ऽ	ऽ	का	ऽ	गे	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प़	सा	–	नि़	–	नि़	–	सा	–	–	सा	–	सा	–
वा	ह	ऽ	रे	ऽ	ते	ऽ	पु	च्छ	ऽ	दा	ऽ	है	ऽ
रे	–	–	सा	–	सा	–	नि़	–	–	नि़	–	सा	–
सो	ऽ	ऽ	रा	ऽ	नू	ऽ	एं	ऽ	ऽ	ति	ऽ	जो	ऽ
रे	–	–	सा	–	नि़	–	सा	–	–	–	–	–	–
क	या	ऽ	जी	ऽ	हो	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

66. ए जी नणद-भरजाईया

ए जी नणद-भरजाईया दा जोड़ा कत्तण चरखा डाह बैठियां
भावो जे तेरे जन्मेगा पुत्तर, बधै तेरा गोत बधाई सांजोह क्या जे दिंगी
नणदे जे मेरे जन्मेगा पुत्तर बधै मेरा गोत
बधाई तिजो कड़ेयां जोड़ी
ए जी भावो जो लगीयां न पीड़ा नणद बूओ बाह्र खड़ी
भावो हुण तेरे जन्मेगा पुत्तर बधाई सांजोह क्या जे दिंगी
नणदे मापेयां घरे ते आए साड़े नाल
कंगण तिज्जो न दियांगी
ए जी पलंग बैठे गोरी दे सौह्रा
गोरी दी सस बोले नूएं देई दे कंगण जोड़ी
धी स्हाड़ी रुस गेई है
ए जी नणद भरजाईयां दा जोड़ा ....।
नणदे जे मेरे जन्मेगी धीवड़, घटे मोरा जिया
बधाई तिजो न देणी जी।
ए जी नणद-भरजाईयां दा जोड़ा ....।

भावार्थ : इस गीत में ननद तथा भाभी के बीच संवाद है। दोनों चरखा कातते हुए बातचीत कर रही हैं। ननद, शीघ्र ही मां बनने जा रही भाभी से पूछती है कि यदि उन्होंने पुत्र को जन्म दिया तो मुझे क्या बधााई देंगी। पुत्र जन्म से मायके की वंश-वृद्धि होगी अतः उपहार तो मैं लूंगी ही। भाभी उसे कंगनों की जोड़ी देने की बात कहती है। परन्तु बाद में, प्रसव-प्रक्रिया से गुज़रते हुए कहती है कि, मायके से दहेज में पर्याप्त वस्तुएं आई हैं। लेकिन ननद कंगनों के लिए ही आग्रह करती है। सास-ससुर भी चाहते हैं कि वह उपहार स्वरूप कंगन दे दे। अन्यथा बेटी रूठ जाएगी। भाभी फिर भी टालने की चेष्टा करते हुए कहती है कि यदि मैंने बेटी को जन्म दिया तो मेरा मन घबराएगा तब मैं कुछ भी नहीं दे पाऊंगी। यद्यपि हास-परिहास भरा गीत है परन्तु मायके में बेटी के वर्चस्व की ओर भी संकेत इसमें है।

स्वर लिपी :-

			2				0			3			
										सा	–	रे	–
										ए	ऽ	जी	ऽ
सा	–	–	नि़	–	प	प	नि़	सा	–	रे	–	रे	–
न	ण	ऽ	दा	ऽ	भ	र	जा	ई	ऽ	यां	ऽ	दा	ऽ
म	–	–	रे	–	सा	नि़	नि़	सा	–	रे	–	म	–
जो	ऽ	ऽ	ड़ा	ऽ	क	ऽ	त	ण	ऽ	च	र	खे	ऽ
म	–	–	रे	–	सा	नि़	सा	–	–	सा	–	रे	–
डा	ऽ	ह	बैं	ऽ	ठि	ऽ	यां	ऽ	ऽ	भा	ऽ	वो	ऽ
सा	–	–	नि़	–	प	प	नि़	सा	–	रे	–	रे	–
जे	ऽ	ऽ	ते	ऽ	रे	ऽ	ज	न्	ऽ	मे	ऽ	गा	ऽ
म	–	–	रे	–	सा	नि़	नि़	सा	–	रे	–	म	–
पु	ऽ	ऽ	त्त	र	ब	ऽ	धै	ऽ	ऽ	ते	ऽ	रा	ऽ
म	–	–	रे	–	सा	नि़	सा	–	–	रे	–	म	–
गो	ऽ	ऽ	त्र	ऽ	ब	ऽ	धा	ई	ऽ	सां	ऽ	जो	ह
म	–	–	रे	–	सा	नि़	सा	–	–				
क	या	ऽ	जे	ऽ	दिं	ऽ	गी	ऽ	ऽ				

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

67. गीगा जम्मेया बलो

गीगा जम्मेया बलो, बावे नैं सुणेया की ना,
बावा सुणदे आये सुणदे, गुणदे आए,
द्रुवा सजांदे आये, बधाइयां लैंदे आए,
मेरेया होल्लरूआ चन्दा, खेलेयां दादिया केहड़िया गोद।

गीगा जम्मेया बलो, ताये नैं सुणेया की ना,
ताया सुणदे आये सुणदे, गुणदे आए,
द्रुवा सजांदे आये, बधाइयां लैंदे आए,
मेरेया होल्लरूआं चन्दा, खेलेया ताईया केहड़िया गोद।

गीगा जम्मेया बलो, चाचे नैं सुणेया की ना,
चाचा सुणदे आये सुणदे, गुणदे आए,
द्रुवा सजांदे आये, बधाइयां लैंदे आए,
मेरेया होल्लरूआं चन्दा, खेलेया चाचिया केहड़िया गोद।

गीगा जम्मेया वलो, मामे नैं सुणेया की ना,
मामा सुणदे आये सुणदे, गुणदे आए,
द्रुवा सजांदे आये, बधाइयां लैंदे आए,
मेरेया होल्लरूआं चन्दा, खेलेया मामिया केहड़िया गोद।

भावार्थ : प्रस्तुत गीत में शिशु जन्म के समाचार को सम्बन्धियों तक पहुंचने को लेकर व्याग्रता अभिव्यक्त हुई है। भारतीय समाज में, खुशियों को सांझा करने की प्रथा और ललक दोनों है। नवजात बच्चे की मां उत्सुकतावश पूछती है कि बच्चे ने जन्म लिया है इसकी ख़बर दादा तक पहुंची है कि नहीं। बताया जाता है कि दादा सुनते व समझते हुए घर पहुंचे हैं। रास्ते भर उनकी पगड़ी पर हरी दूब सजाई गई है और वह बधााई स्वीकारते हुए घर पहुंचे हैं। यही प्रश्न क्रमश ताया, चाचा व मामा के सम्बन्ध में पूछा गया है। उत्तर में सभी द्वारा दूब स्वीकार करने व बधााई लेने की बात कही गई है। साथ-साथ बधाई देने का अर्थात उपहार स्वरूप धनराशि देने का भी जिक्र है। सुख-दुख के हर संस्कार में दान की प्रथा, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से विद्यमान है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
–	–	पऩि	ऩि	सारे	रे	रेसा	सारे
–	–	गीऽ	गा	जम्न	मे	याऽ	वऽ
रे	–ऩि	पऩि	ऩिऩि	ऩिसा	सारे	रे	रेसा
लो	ऽऽ	बाऽ	बेनै	सुऽ	णेऽ	या	कीऽ
सा	–	पऩि	ऩि	रेसा	सा	ऩिं	ऩि
ना	ऽ	बाऽ	वा	सुण	दे	आ	ए
पऩि	ऩिम	ऩिसा	सा	ऩि	ऩि	पऩि	नि
सुण	देऽ	गुण	दे	आ	ये	द्रुऽ	वा
ऩिसा	सा	ऩि	ऩिम	पऩि	ऩि	रेसा	सा
सजां	दे	आ	येब	धाइ	यां	लैंऽ	दे
ऩि	ऩि	पऩि	ऩिऩि	सारे	रेरे	रेसा	सारे
आ	ये	मेऽ	रेया	होऽ	लरु	आऽ	चंऽ
रे	–ऩि	पऩि	ऩिऩि	ऩिसा	सारे	रे–	रेसा
दा	ऽऽ	खेऽ	लेयां	दाऽ	दिया	केऽ	ड़िया
सा	–						
गो	द						

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

68. पत्थरां तां मारी मेरा घड़ा तोड़ेया

पत्थरां तां मारी मेरा घड़ा तोड़ेया, नी जसोधा तेरे लाल नैं,
छोटी देई राधकां दा दिल तोड़ेया, नी जसोधा तेरे लाल नैं,
हथ्थे च गड़वा गंगा जल पाणी, चरण धुआणे दी बेल्ला मुख मोड़ेया,
नी जसोधा [illegible] लाल ने .....।

पत्थरां तां मारी मेरा घड़ा तोड़ेया, नी जसोधा तेरे लाल नैं,
छोटी देई राधकां दा दिल तोड़ेया, नी जसोधा तेरे लाल नैं,
हथ्थे च करणी फुलां कनैं भरणी, हार पहनाणे दी बेल्ला मुख मोड़ेया, नी जसोधा तेरे लाल ने .....।

पत्थरां तां मारी मेरा घड़ा तोड़ेया, नी जसोधा तेरे लाल नैं,
छोटी देई राधकां दा दिल तोड़ेया, नी जसोधा तेरे लाल नैं,
हथ्थे च थाली केसर वाली, तिलक लगाणे दी बेल्ला मुख मोड़ेया,
नी जसोधा तेरे लाल ने .....।

भावार्थ : जन्म के या जन्मदिन मनाए जाने के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों में कृष्ण लीला, लोक मानस का प्रिय विषय है। इस गीत में बृज की गोपियों का उपालंभ चित्रित है। मां यशोदा से शिकायत करती हुई कहती हैं कि तुम्हारे बेटे ने पत्थर मार कर घड़ा तोड़ दिया। यही नहीं उन्होंने नन्हीं सी राधिका का दिल भी तोड़ दिया। जो हाथ में गंगा जल से भरा कलश लिए खड़ी थी परन्तु जैसे ही उसने चरण धोने की चेष्टा की, कृष्ण ने मुख फेर लिया। मटका तो फोड़ दिया। परन्तु राधा द्वारा फूलों का हार नहीं पहना। वह केसर से भरी कटोरी लिए खड़ी थी। परन्तु कन्हाई ने तिलक नहीं लगवाया। कृष्ण द्वारा राधा को छेड़ने व चिढ़ाने का वर्णन इस गीत में है।

स्वर लिपी :- स्थायी

		0				0	
ऩि	ऩिरे	रे	रेसा	सा	-सा	सा	सारे
प	त्थ	रां	ताऽ	मा	ऽरी	मे	राऽ
ऩि	ऩि	सा	सा	रे	-म	रे	रेसा
घ	ड़ा	तो	ड़े	या	ऽऽ	नी	जऽ
ऩिसा	सारे	रे	रेसा	सा	-सा	सा	-
सोऽ	धाऽ	ते	रेऽ	ला	ऽल	नैं	ऽ
ऩि	ऩिरे	रेऩि	रेसा	सा	सा	सा	रेसा
ह	ऽऽ	थ्थे	चऽ	ग	ड़	बा	गंऽ
ऩिसा	सारे	रे	रेसा	सा	सा	सा	-
गाऽ	ऽऽ	ज	लऽ	पा	ऽ	णी	ऽ
ऩि	ऩिरे	रे	रेसा	सा	सासा	सा	गरे
च	रऽ	ण	धुऽ	आ	णेदी	बे	ल्ला
ऩि	ऩि	सा	सा	रे	-म	रे	रेसा
मु	ख	मो	ड़े	या	ऽऽ	नी	ऽज
ऩिसा	सारे	रे	रेसा	सा	-सा	सा	-
सोऽ	धाऽ	ते	रेऽ	ला	ऽल	ने	ऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

69.. मैं तिज्जो पुछ्छां

मैं तिज्जो पुछ्छां मेरे अति लाडो चिट्टड़ा तू किन्है गुणैं
दादिया घड़ी ऐ भ्याई जी चौल् चढ़ाई कि चिट्टड़ा मैं इन्हा गुणैं
मैं तिज्जो पुछ्छां मेरे अति लाडो रंगला तू किन्है गुणैं
माइया घड़ी ऐ भ्याई जी गान्ना चढ़ाई कि रंगला मैं इन्हा गुणैं
मैं तिज्जो पुछ्छां मेरे अति लाडो बटला तू किन्है गुणैं
ताइया घड़ी ऐ भ्याई जी सुपारी चढ़ाई कि बटला मैं इन्हा गुणैं
मैं तिज्जो पुछ्छां मेरे अति लाडो लम्बड़ा तू किन्है गुणैं
चाचिया घड़ी ऐ भ्याई जी डोरी चढ़ाई कि लम्बड़ा मैं इन्हा गुणैं
मैं तिज्जो पुछ्छां मेरे अति लाडो सैलड़ा तू किन्है गुणैं
मामिया घड़ी ऐ भ्याई जी दूब चढ़ाई कि सैलड़ा मैं इन्हा गुणैं
मैं तिज्जो पुछ्छां मेरे अति लाडो छैलड़ा तू किन्है गुणैं
मासिया घड़ी ऐ भ्याई जी फुल्ल चढ़ाई कि छैलड़ा मैं इन्हा गुणैं

भावार्थ : इस गीत में कुलदेवी की प्रतीक रूप.माटी की मूर्त्त भ्याई की पूजा–अर्चना की विधि, परोक्ष रूप से वर्णित है। प्रत्यक्षता यह गीत मां और बेटे के मध्य संवाद लड़ी है। मां मनुहारपूर्वक पूछती है कि मेरे अत्यन्त लाड़ले लाल मुझे बता कि तूं इतना गोरा किन गुणों या कारणों से है। पुत्र का जवाब है कि मेरी दादी ने भ्याई मां की मूर्त्ति घड़ी जिस पर धवल चावल चढ़ाए, इसी कारण मैं श्वेतवर्णी हुआ हूं। फिर मां पूछती है कि तू ऐसा रंगदार व सुहावना कैसे हुआ। बेटा उत्तर देता है कि मेरी मां ने अर्थात तुमने भ्याई माता जी की वन्दना, गाना (लाल धागे की डोरी) बांध कर की। इसी लिए मैं सुहावना हुआ हूं। मां पूछती है कि तुम ऐसे बटले अर्थात् अकड़न भरे क्यूं हो तो उत्तर मिलता है कि सुपारी चढ़ाई गई थी। मां पुनः पूछती है कि लम्बे कैसे हुए हो तो बेटा बताता

स्वर लिपी :-

			2				0			3			
ध़	–	–	सा	–	रे	–	सा	सा	–	सा	–	ध़	–
मैं	ऽ	ऽ	ति	ऽ	जो	ऽ	पु	च्छां	ऽ	मे	ऽ	रे	ऽ
ध़	सा	–	सा	–	रे	–	सा	सा	–	ध़	–	ध़	–
अ	ति	ऽ	ला	ऽ	डो	ऽ	चि	ट	ऽ	ड़ा	ऽ	तू	ऽ
ध़	–	–	सा	–	रे	–	रे	–	–	–	–	–	–
कि	ऽ	ऽ	न्है	ऽ	गु	ऽ	णै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
रे	रे	–	रे	–	–	–	रे	–	–	ग	–	रे	–
दा	दि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	घ	ड़ी	ऽ	ऐ	ऽ	[illegible]	ऽ
सा	–	–	ध़	–	–	–	रे	रे	–	रे	–	–	–
या	ऽ	ऽ	ई	ऽ	जी	ऽ	चौ	ऽ	ऽ	ल़	ऽ	च	ऽ
रे	–	–	ग	–	रे	–	सा	–	–	ध़	–	–	–
ढ़ा	ऽ	ऽ	ई	ऽ	कि	ऽ	चि	ट	ऽ	ड़ा	ऽ	तू	ऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

है कि चाची ने डोरी चढ़ा कर भ्याई मां की पूजा की थी। मां फिर पूछती है कि तुम में हरयावल और सौन्दर्य कैसे आया तो बेटा कहता है कि मामी व मासी ने हरी दूब व फूल चढ़ाए थे, भ्याई मां को। कहने का अभिप्राय यह है कि मांगलिक धागा, डोरी, फूल-दूब व अक्षत से भ्याई माता की पूजा-अर्चना करने का विधान है। सभी सम्बन्धियों को इस पूजा से जोड़ कर परिवार के स्नेह को दर्शाया गया है।

70. तू गोकले दी राणी

अंगणे मेरे चमेली दा बूटा अंगण लेआ है छाई ए
माइया जसोदा बेटड़े जाए मख्खण खाद्दा चुराई ए

हथ्यड़ू भी बन्ने माए पल्लड़ू भी बन्ने छमकियां छमकाया ए
मैं नहीं खाद्दा मेरिए माए खाई गेआ बड्डा भाइ ए

हथ्यड़ू भी खोले माइया पल्लड़ू भी खोले भीड़ी झम्बी गले़ लाया ए
तूं जुग जिआं बेटा लख बरेसां होएआं गढ़ मथुरा दा राजा ए

झूठ गलांदे गोप-ग्वाले़ सच्ची तेरे लाड़ले दी बाणी ए
तू जुग जिआं माए लख बरेसां होएआं तू गोकले दी राणी ए

भावार्थ : अधिकांश लोकगीत विभिन्न पेड़-पौधों के नाम से आरम्भ होते हैं। पर्यावरण के प्रति चिन्ता की आवश्यकता तब नहीं थी पर स्नेह ऐसा अटूट था कि वह आज भी यदि बना रहता तो चिन्ताग्रस्त नहीं होना पड़ता। आंगन में चमेली का बूटा है जिसने अपनी हरी-हरी शाखाओं से सारे आंगन को छा लिया अर्थात अपनी छांव के प्रभाव क्षेत्र में ले लिया है। मां जसोदा ने दो बेटों को जन्म दिया है। दोनों बड़े नटखट हैं। उन्होंने मथुरा की गोपियों का माखन चुरा लिया है। शिकायत आने पर मां यशोदा कन्हाई के हाथ-पांव बांध कर पेड़ की हरी लकड़ी से उनकी पिटाई करती हैं। कन्हाई कहते हैं कि माखन तो बड़े भइया बलराम ने खाया है। तो मां हाथ-पांव खोल कर उन्हें गले से लगा लेती हैं और आशीर्वाद देती हैं कि तुम युगों-युगों, लाख बरस तक जिओ। मथुरा के किले के

स्वर लिपी :-

		0				0	
-	नी॒सा	सा	ग॒रे	रे	-	सा	-
ऽ	अंऽ	ग	ऽणे	मे	ऽ	रे	ऽ
-	नी॒-	नी॒प़	प़	सा	-	नी॒	-
ऽ	चमे	लीऽ	दा	बू	ऽ	टा	ऽ
-	नी॒सा	सा	ग॒रे	रे	--	सा	नी॒
ऽ	अंऽ	ग	ऽण	ले	ऽ	आ	है
नी॒सा	सारे	रे	सानी॒	सा	-	-	-
छाऽ	ईऽ	ऽ	ऽऽ	ए	ऽ	ऽ	ऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इसी प्रकार गाई जाएंगी।

राजा बनो। कृष्ण प्रसन्न हो कर कहते हैं कि गोप ग्वाले झूठे हैं। मैं ही सच्च कहता हूं।'मां तुम लाख बरस जिओ। तुम गोकुल की रानी हो। कन्हाई का नटखटपन हर मां का अभीष्ट है।

71. कौण लेयाए चोलू-टोपू

कौण ल्याया चोलू टोपू कौन ल्याया छुण-छुणू,
खेल मेरेया बालका रंगीन तेरा छुण-छुणू।
अम्मा ले आई चोलू टोपू बावा ले आए छुणू-छुणू,
खेल मेरेया बालका रंगीन तेरा छुण-छुणू।
दादी ले आई चोलू टोपू दादा ले आए छुण-छुणू,
खेल मेरेया बालका रंगीन तेरा छुण-छुणू।
चाची ले आई चोलू टोपू चाचा ले आए छुण-छुणू,
खेल मेरेया बालका रंगीन तेरा छुण-छुणू।
बुआ ले आई चोलू टोपू बुआई ले आए छुण-छुणू,
खेल मेरेया बालका रंगीन तेरा छुण-छुणू।

भावार्थ : घर में शिशु ने जन्म लिया तो मात्र मां व पिता ही नहीं उसके सभी सम्बन्धी उसके प्रति प्रेम दर्शाते हैं। स्नेह प्रतीक के रूप में बच्चे के लिए वस्त्र लाते हैं तथा उसे बहलाने के लिए झुनझुना भी लाते हैं। मां सभी का परिचय बच्चे से करवाती है। कहती है कि कौन मेरे बालक के लिए कुर्ता तथा टोपी लाया है और कौन झुनझुना लाया है। स्वयं ही उत्तर देती है कि दादा कुर्ता तथा टोपी लाए हैं और दादी झुनझुना लाई हैं। फिर बच्चे को सम्बोधित करते हुए कहती है कि मेरे बच्चे तू खेल, तेरा खिलौना अत्यन्त सुहावना व रंगीन है। दादा व दादी के बाद वह चाचा तथा चाची का नाम लेती है कि वे भी उपहार लाए हैं। इसी तरह बुआ आदि को भी याद करती है। उपहार देने-लेने की प्रथा स्नेह सूत्रों को प्रगाढ़ करती हैं।

स्वर लिपी :-

		0				0	
ध़-	-ध़	सा	रे	म	म	म	म
कौऽ	णल्	या	या	चो	लू	टो	पू
ग-	-ग	रे	ग	रे	रे	सा	-
कौऽ	णले	या	या	छु	ण	छु	णू
ध़-	सा	रे-	ग॒	रे-	रे	सा	-
खेऽ	ल	मेर	या	बाऽ	ल	का	रं
सा-	नी॒	ध़	प	ध़	सा	सा	-
गीऽ	न	ते	रा	छु	ण	छु	णू
ध़-	-ध़	सा	-रे	म	म	म	म
अऽ	म्मा	ले	आई	चो	लू	टो	पू
ग-	-ग	रे-	-ग	रे	रे	सा	-
बाऽ	ऽवा	लेऽ	आए	छु	णू	छु	णू
ध़-	सा	रे-	ग॒	रे-	रे	सा	-
खेऽ	ल	मेर	या	वाऽ	ल	का	रं
सा-	नी॒	ध़	प	ध़	सा	सा	-
गीऽ	न	ते	रा	छु	ण	छु	णू

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

72. अज स्हाढ़े लिप्पणा परोलणा

अज्ज स्हाढ़े लिप्पणा परोलणा, कल स्हाढ़े बजणी बधाई सइयो
मेरी गोत्रण, चण्डले दी ताई, चण्डे जम्मे आयी,
बदले वाली कि बदला में लेई लवांगी।

सस्सू जो भेज्जां मैं परोह्त कि नणदा जो नाई ए,
जठाणियां जो भेज्जां केहड़ा नाई सइयो,
मेरी गोत्रण, चण्डले दी ताई, चण्डे जम्मे आयी।
बदले वाली कि बदला में लेई लवांगी।

सस्सू जो डावां मैं पीढ़ी कि नणदा जो पटड़ी ए,
जठाणिया जो पलंग डलावां सइयो,
मेरी गोत्रण, चण्डले दी ताई, चण्डे जम्मे आयी।
बदले वाली कि बदला में लेई लवांगी।

सस्सू जो भेज्जा मैं अज्ज नणाना जो संझा ए,
जठाणी रहे दिन चार सइयो,
मेरी गोत्रण, चण्डले दी ताई, चण्डे जम्मे आयी।
बदले वाली कि बदला में लेई लवांगी।

भावार्थ : प्रस्तुत गीत में शिशु जन्म के अवसर पर बधाई-उत्सव का आकार-प्रकार विश्लेषित हुआ है। नवजात की मां कह रही है कि आज घर की लिपाई-पुताई हो रही है। कल यहां वधावे (वधाई-गीत) गाए जाएंगें। मेरे अपने गोत्र की महिला अर्थात मेरे पुत्र की ताई बच्चे के जन्म के बाद आ रही है। उसके इस व्यवहार का बदला तो ले ही लूंगी। सास को पुरोहित तथा ननद को नाई के हाथ आमंत्रण भेज रही हूं। जेठानी को आमंत्रित करने हेतु किसे भेजूं? सास को आसन के रूप में पीढ़ी तथा ननद को पटड़ी देती हूं। जेठानी के लिए पलंग डलवाऊंगी। सास को मैं आज ही विदा कर दूंगी। ननद को कल भेजूंगी परन्तु जेठानी दो-चार दिन रह जाए। इस गीत में जेठानी से ही सर्वाधिक नाराज़गी जताई गई है परन्तु उसी के प्रति स्नेह भी दर्शाया है। क्योंकि दोनों समान गोत्र की हैं और दोनों को लम्बे समय तक साथ-साथ रहना है।

स्वर लिपी :-

			2				0			3			
सा	सा	–	सा	–	सा	–	रे	म	–	प	–	म	–
अ	ज्ज	ऽ	स्हा	ऽ	ढ़े	ऽ	लि	प्प	ऽ	णा	ऽ	प	ऽ
प	–	–	–	–	म	–	पम	गरे	–	–	–	–	–
रो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल्	ऽ	णाऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	म	–	रे	–	सा	–	ऩि	सा	–	रे	–	रे	म
क	ल	ऽ	स्हा	ऽ	ढ़े	ऽ	ब	ज	ऽ	णी	ऽ	ब	ऽ
म	–	ग	रे	–	सा	ऩि	ऩि	सा	–	रे	–	रे	म
धा	ऽ	ऽ	ई	ऽ	स	इ	यो	ऽ	ऽ	मे	ऽ	री	ऽ
म	–	ग	रे	–	सा	ऩि	ऩि	सा	–	रे	–	रे	म
गो	ऽ	ऽ	त्र	ऽ	ण	ऽ	चण	ड	ऽ	ले	ऽ	दी	ऽ
म	–	ग	रे	–	सा	ऩि	ऩि	–	सा	रे	–	रे	म
ता	ऽ	ऽ	ई	ऽ	च	ण	डे	ऽ	ऽ	ज	ऽ	म्मे	ऽ
ग	–	रे	सा	–	सा	ऩि	ऩि	सा	–	रे	–	रे	म
आ	ऽ	ऽ	यी	ऽ	ऽ	ऽ	ब	द	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	ग	रे	–	सा	ऩि	ऩि	सा	–	रे	–	रे	म
वा	ऽ	ऽ	ली	ऽ	कि	ऽ	ब	द	ऽ	ला	ऽ	मैं	ऽ
म	–	ग	रे	–	रे	सा	सा	–	–	–	–	–	–
लै	ई	ऽ	ल	ऽ	वां	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

73. संझकिया बेला माये

संझकिया बेला माये ढलदिया बेला
सस बोलै बच्छड़े भूखे नूएं गाई दूईआ

हत्थे लैंदी लोटा माये, कच्छ लैंदी बच्छड़ा
पेई जान्दी बखिया दे भार,
माये, जित्थु कोई नी है अपणा
संझकिया बेला माये ढलदिया बेला

संझकिया बेला माये ढलदिया बेला
जठाणी बोलै बच्छड़े भूखे भैणे गाई दूई आ
हत्थे लैदी लोटा माये, कच्छ लैंदी वच्छड़ा
पेई जांदी बखिया दे भार
माये नी जिथ्थु कोई नी है अपणा
संझकियाँ बेला माए ढलदिया बेला

संझकिया बेला माये ढलदिया बेला
दराणी बोलै बच्छड़े भूखे भैणे गाई दूई आ
हत्थे लैदी लोटा माये, कच्छ लैंदी वच्छड़ा
पेई जांदी बखिया दे भार
माये नी जिथ्थु कोई नी है अपणा
संझकियाँ बेला माये ढलदिया बेला

भेजी दिगीं घोड़ा धीये भेजी दिगीं डोला
आई जायाँ सुए-सुए (लाल) डोले
धीये इथ्थु सब कोई है अपणा
संझकिया बेला माए ढलदिया बेला

भावार्थ : इस गीत में गर्भावस्था में घर के काम-काज करते हुए आई असुविधा व कठिनाई का चित्रण है। मां बनने जा रही युवती मां से सम्बोधित है। (यहां भी फैंटेसी अर्थात अति कल्पना का प्रयोग हुआ है) संध्या समय, ढलती हुई बेला में सास कहती है कि बहू जा, गाय से दूध ले आ। बच्छड़े भूखे होंगे। मैं हाथ

स्वर लिपी :-

			2				0			3			
सा	रे	सा	सा	–	नि़	–	सा	–	–	रे	सा	रे	म
सं	झ	ऽ	कि	ऽ	या	ऽ	बे	ला	ऽ	मा	ऽ	ये	ऽ
म	म	रे	सा	–	–	सा	रे	–	–	सा	–	–	–
ढ	ल़	ऽ	दि	ऽ	या	ऽ	बे	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	–	म	–	म	–	ग	–	–	रे	रे	सा	–
स	ऽ	ऽ	स	ऽ	बो	ऽ	लै	ऽ	ऽ	ब	च्छ	ड़े	ऽ
सा	रे	सा	सा	–	नि़	–	सा	–	–	रे	सा	रे	म
भू	ऽ	ऽ	खे	ऽ	नू	ऽ	एं	ऽ	ऽ	गा	ऽ	ई	ऽ
रे	–	–	सा	–	–	–							
दू	ई	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ऽ							

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

में गड़वा और कांख तले बच्छड़ा लेकर चलते हुए पसलियों के भार गिर जाती हूं। ऐसी जगह जहां मेरा कोई भी अपना नहीं है। यही आदेश उसे क्रमशः जेठानी व देवरानी से भी मिलता है। ससुराल बैठे ही उसे अपने मायके से मां का आश्वासन मिल जाता है कि मैं तेरे लिए घोड़ा तथा डोला, भिजवाती हूं। तू लाल-लाल झमने (डोली पर पड़ा आवरण) वाले डोले में बैठ कर चली आ। यहां सभी तेरे अपने हैं। मायके के प्रति स्नेह विश्वास व आश्वस्त भाव अधिकांश गीतों में व्यक्त हुआ है।

74. फुल फुल्लेया माये

फुल फुल्लेया माए, बीणे दिया क्यारिया
अज बण्डेआ माए, बावे दिया खटिया

जन्दे लगेओ धिए कुण्डे अड़ेओ बेटी
बावे दिया हटिया
जन्दे खोड़ी देणे कुण्डे तोड़ी देणे
बावे दिया हटिया
फुल फुल्लेया माए, बीणे दिया क्यारिया
अज बण्डेआ ताई ताए दिया खटिया

जन्दे लगेओ धिए कुण्डे अड़ेयो धिए
ताए दिया हटिया
जन्दे खोड़ी देणे कुण्डे तोड़ी देणे
ताए दिया हटिया
फुल फुल्लेया माए, बीणे दिया क्यारिया

अज बण्डेआ चाची, चाचे दिया खटिया
जन्दे लगेओ धिए कुण्डे अड़ेओ बेटी
बावे दिया हटिया
फुल फुल्लेया माए, बीणे दिया क्यारिया

भावार्थ : इस गीत में शिशु जन्म का समाचार प्रतीकात्मक शैली में दिया जा रहा है। नवजात की मां अपनी मां से कहती है कि बीण (धनिया) की क्यारी में फूल खिला है। अर्थात पुत्र ने जन्म लिया है। आज इस खुशी के अवसर पर तुम पिता की कमाई बांटो। मां बहाना बनाती है कि बेटी पिता की दुकान में ताला लगा हुआ है। कुण्डों (चिटकनियों) से दुकान बन्द है। बेटी अनुरोध करती है कि जन्दे (ताले) खोल दो और चिटकनियां तोड़ दो। वह यही बात क्रमशः ताई तथा चाची आदि सम्बन्धियों से भी कहती है। ताई तथा चाची उपरोक्त उत्तर दोहराती हैं।

स्वर लिपी :-

			2				0			3			
										ध़	–	सा	ऽ
										फु	ऽ	ल	ऽ
रे	ग	रे	सा	–	रे	–	ग	–	–	रे	–	रे	–
फु	ल्ले	ऽ	या	ऽ	मा	ऽ	ये	ऽ	ऽ	वी	ऽ	णे	ऽ
ध़	ध़	–	रे	–	रे	–	सा	–	–	ध़	–	सा	–
दि	या	ऽ	क	या	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	अ	ऽ	ज	ऽ
रे	ग	रे	सा	–	रे	–	ग	–	–	रे	–	रे	–
बं	डे	ऽ	या	ऽ	मा	ऽ	ये	ऽ	ऽ	बा	ऽ	वे	ऽ
ध़	ध़	–	रे	–	रे	–	सा	–	–				
दि	या	ऽ	ख	ऽ	टि	ऽ	या	ऽ	ऽ				

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

75. बाल्अ खेलदा ऐ निम्बुए दे हेठ

बाल्अ खेलदा ऐ निम्बुए दे हेठ, कच्चा निंबू कुन्ही तोड़ेया
इक तोड़ेया ऐ सीसे दा ग्लास, दूजा मेरा दुध डोल्ह्या
माता मिली जान्दे सीसे दे ग्लास
दूध पुत्त नहीं जी मिलदे
बाल्अ खेलदा ऐ निंबुए ...।

बाल्अ खेलदा ऐ निम्बुए दे हेठ, कच्चा निंबू कुन्ही तोड़ेया
इक तोड़ेया सीसे दा ग्लास, दूजा मेरा दुध डोल्ह्या
दादी मिली जान्दे सीसे दे गलास
दूध पोते नहीं जी मिलदे
बाल्अ खेलदा ऐ निंबुए ...।

बाल्अ खेलदा ऐ निम्बुए दे हेठ, कच्चा निंबू कुन्ही तोड़ेया
इक तोड़ेया सीसे दा ग्लास, दूजा मेरा दुध डोल्ह्या
चाची मिली जान्दे सीसे दे गलास
दूध भतीजे नहीं जी मिलदे
बाल्अ खेलदा ऐ निंबुए ...।

भावार्थ : इस गीत में शिशु द्वारा की जा रही शरारतों का चित्रण है। मां, दादी, चाची आदि द्वारा शिकायत की गई है और बच्चा उत्तर दे रहा है। उसका उत्तर भावनात्मक है अर्थात् वह अपनी मां, दादी या चाची को भावुक बना कर अपने प्रति क्षमाशील बनाने की चेष्टा कर रहा है। बालक नीम्बू के पेड़ तले खेल रहा है। कच्चा नीम्बू किसने तोड़ा ? फिर मां कहती है कि एक तो मेरा शीशे का गिलास तोड़ दिया दूसरा दूध बिखरा दिया। बेटा बहुत संवेदनशील होकर कहता है कि मां गिलास मिल जाते हैं। पुत्र व दूध नहीं मिलते। गाँव में दूध को भी पुत्र जितनी ही महत्ता दी जाती है। प्रच्चलित कहावत है कि 'दुध पुत्त नीं मिलदे', इसी का प्रयोग पुत्र द्वारा किया गया है। वह तो मात्र अपने बचाव में ही इसका इस्तेमाल कर रहा है । पर एक जीवन मूल्य यहां उद्घाटित हुआ है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
		सा–	नि̱	सा–	–ग	ग–	ग
		वाऽ	लूअ	खेऽ	ऽल	दाऽ	ऐ
ग	म	प	ध	प	–	–	म
निं	बु	ए	दे	हे	ऽ	ऽ	ठ
रे	रे	प	म	ग̇	ग	रे	–
क	चा	नि̱	बु	कु	न्ही	तो	ऽ
सा	–	सा	नि	सा	–ग	ग	ग
ड़े	या	इ	क	तो	ऽड़	या	ऽ
ग	म	प	ध	प	–	–	म
सी	से	दा	ग	ला	ऽ	ऽ	स
रे	रे	प	म	ग	ग	रे	–
दू	जा	मे	रा	दु	ध	डो	ऽ
सा	–						
ले़	या						

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

76. अज जम्मेया कल गेया पताल

अज जम्मेया कल गेया पताल़, लड़ेआ नागाँ नाल़ जी
नागणियां तां रोज रूआइयां, नागाँ दे पाई ले हार जी...

कलिए नागे दे भारे बन्ने
आणी सट्टे दरबार जी
नागणियां तां रोज रूआइयां
नागाँ दे पाई ले हार जी
अज जम्मेया कल गेया पताल़, लड़ेआ नागाँ नाल़ जी

जां जम्मेया जां दीवक बल़ेआ
लोई होइयाँ संसार जी
नागणियां तां रोज रूआइयां
नागाँ दे पाई ले हार जी
अज जम्मेया कल गेया पताल़, लड़ेआ नागाँ नाल़ जी

काले महीने दियाँ न्हेरिया रातीं
जम्मेया कृष्ण मुरार जी
नागणियां तां रोज रूआइयां
नागाँ दे पाई ले हार जी
अज जम्मेया कल गेया पताल़, लड़ेआ नागाँ नाल़ जी

भावार्थ : इस गीत में कृष्ण की बाल लीला के प्रसिद्ध प्रसंग कालिया नाग मर्दन का वर्णन है। आज ही जन्मे माधव अर्थात छोटी वय में ही, पाताल पहुंच गए। वहां उन्होंने कालिया नाग से युद्ध किया। नागिनियों को रोने पर विवश किया और नागों को कंठ में हारों की तरह धारण कर लिया। यही नहीं, उन्होंने क्षत-विक्षत विशालकाय नाग को लकड़ी के गट्ठर की तरह बांध कर गोप-ग्वालों के दरबार में ला पटका। पहले अन्तरे के बाद कृष्ण जन्म पर धर्म व ज्ञान के आलोक के चहुं ओर प्रकाशित होने का वर्णन है। काले मास

स्वर लिपी :-

		0				0	
साध्	ध्सा	सा-	सारे	रेप	-प	म-	-म
अज	जम	मेया	कल	गेया	ऽप	ताऽ	ऽल्
ग-	-रे	सा-	ग-	रे-	-रे	ग-	रेसा
लड़े	ऽआ	नाऽ	गाँऽ	नाऽ	ऽल्	जीऽ	ऽऽ
साध्	ध्सा	सा-	सारे	रेप	-प	म-	-म
नाऽ	गणि	यांऽ	तांऽ	रोऽ	ऽज	रूआ	इयाँ
ग-	-रे	सा-	ग-	रे-	-रे	ग-	रेसा
नाऽ	गाँदे	पाई	लेऽ	हाऽ	ऽर	जीऽ	ऽऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

की घनी-अंधेरी रात में जन्मे कृष्ण इस विश्व के लिए तेजस्वी सूर्य हो कर आए हैं। स्याह रात में कृष्ण जन्म तथा उनके अवतार ग्रहण के शुभअवसर पर दीप प्रज्जवल का वर्णन भिन्न धुनों में विभिन्न मुखड़ों के अन्तर्गत हुआ है।

77. पट नरमे देआ खिनुआँ

पट नरमे देआ खिन्नुआँ किन्ही सै देई भेज्या
नानी मैहलां दी राणी ओन्ही देई भेजेया
बालक खेलै चौखण्डिया नणदा छुपाई रखेया
देई दे नणाने बालक कजो रूसया
सारा शहर मैं हण्डेया खिन्नू सैह् नहीं मिलेया।

पट नरमे देआ खिन्नुआँ किन्ही सै देई भेजेया
मामी मैहलां दी राणी ओन्ही देई भेज्या
बालक खेलै चौखण्डिया जठाणिया छुपाई रखेया
देई दे जठाणिए बालक कजो रूस्या
सारा शहर मैं हण्डेया खिन्नू सैह् नहीं मिलेया।

पट नरमे देआ खिन्नुआँ किन्ही सै देई भेज्या
मासी मैहलां दी राणी ओन्ही देई भेजया
बालक खेले चौखण्डिया दराणियाँ छुपाई रखेया
देई दे दराणिए बालक कजो रूसया
सारा शहर मैं हण्डेया खिन्नू सैह् नहीं मिलेया।

भावार्थ : जन्मगीतों में शिशु की मां के मुख से अपने मायके के किसी न किसी प्रसंग का वर्णन मिल जाता है। वह सदैव मां-बाप के घर तथा ससुराल के घर और घर के सदस्यों का तुलनात्मक चित्रण करती है। इस चित्रण में मायका स्नेह-सम्मान व आशीर्वाद के प्रतीक रूप में सामने आता है। इस गीत में बच्चे को नानी से नर्म कपड़े से बने गेन्द के उपहार स्वरूप मिलने की बात है। साथ ही चौखण्डी अर्थात घर से ज़रा दूर बने अतिथिगृह में खेलने गए बालक के गेन्द के खो जाने का भी जिक्र है। युवती अपनी ननद पर आरोप लगाती है कि उसने गेन्द छुपा दिया है। आग्रह करती है कि गेन्द लौटा दे क्योंकि इसके लिए बेटा रूठ गया है। आगे क्रमशः महलों की रानी मामी तथा मासी की ओर से गेन्द

78. मेरेया बाल्या श्यामा

मेरेया बाल्या श्यामा बाहर खेलण मत जायाँ
अंगुली ते पकड़ी माता हण्डणा सखाया
अंगण मेरा बथेरा मेरेया बाल्या श्यामा
बाहर खेलण मत जायाँ ...।

काले महीने दियां न्हेरिया रातीं
जन्मेया कृष्ण मुरारी, मेरेया बाल्या श्यामा
बाहर खेलण मत जायाँ ...।

जां जम्मेया जां दीवक वलेया
चौं चक होई गेईयाँ लोई, मेरेया बाल्या श्यामा
बाहर खेलण मत जायाँ ...।

घोल बताशा मैं गुण सक्कर दिनीआं
सोने दी ऐ कटोरी, मेरेया बाल्या श्यामा
बाहर खेलण मत जायाँ...।

चनण कटी, मैं पंगूड़ा बणानी
रेशमी डोरा न लाईयां, मेरेया बाल्या श्यामा
बाहर खेलण मत जायाँ ...।

भावार्थ : इस गीत में भी प्रच्चलित कृष्ण जन्म गाथा की ही पुनरावृत्ति हुई है। मुखड़ा भिन्न है। मां कन्हाई से कह रही है कि तुम बाहर खेलने मत जाओ। अभी-अभी अंगुली पकड़ कर तुम्हें चलना सिखाया है। मेरा आंगन पर्याप्त बड़ा है। यहीं पर खेलो। काली अंधेरी रातों में कान्हा ने जन्म लिया। उसके जन्म पर चारों ओर आलोक फैल गया। प्रसन्नता में मैं बताशा तोड़ कर बांटती हूं। गुड़ शक्कर भी देती हूं। चन्दन का पेड़ कटवा कर बालक श्याम के लिए झूला भी बनवाती हूं। मां की ममता बच्चे के प्रति उसे अति संवेदनशील बना देती है। वह पल-पल उसकी सकुशलता को लेकर चिन्तित रहती है। यही मनोविज्ञान इस गीत के केन्द्र में है।

स्वर लिपी :-

		0				0	
		–	प़प़	प़ध़	ध़सा	सा–	रे
			मेरे	याबा	ल्या	श्या	मा
रे	ग–	प–	रेसा	सा–	–सा	ध़–	–सा
ऽ	बाह	रऽ	खेऽ	लऽ	ऽण	मऽ	ऽत
रेसा	प़प़	ध़–	प़–	ध़ध़	सा	सा–	–सा
जायाँ	अंगु	लीऽ	तेऽ	पक	ड़ी	माऽ	ऽता
सा	रेग	ग–	गरे	ग	–	रे	सा
ऽ	हंड	णाऽ	सऽ	खा	ऽ	या	ऽ
सा	रेग	गरे	ग	प–	ग–	रे	सा
ऽ	अंऽ	गऽ	ण	मेऽ	राऽ	ऽ	ब
ग	रे	–	प़प़	प़ध़	ध़सा	सा–	–रे
थे	रा	ऽ	मेरे	वाऽ	ल्या	श्या	ऽमा

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

80. बिन्नुआं दित्ता रुढ़ाई

काले़ महीने दियां न्हेरियां रातीं, जन्मेया कृष्ण कन्हाई,
बांह मरोड़ी मेरी मटकी फोड़ी बिनुआं दित्ता रूढ़ाई।

बांईं जां जांदी मैं भरने जो पाणी, मटकी फोड़े कन्हाई,
बांह मरोड़ी मेरी मटकी फोड़ी बिनुआं दित्ता रूढ़ाई।

हत्थड़ू भी बन्ने माए पैरू भी बन्ने, छुमकणियां छमकाई,
बांह मरोड़ी मेरी मटकी फोड़ी बिनुआं दित्ता रूढ़ाई।

देवकिया जाया मैं पुतर पराया, दे मेरी कम्बली़ काली़,
बांह मरोड़ी मेरी मटकी फोड़ी बिनुआं दित्ता रूढ़ाई।

हत्थड़ू तां पैरू खोली मनाया, गले़ लाया कन्हाई,
बांह मरोड़ी मेरी मटकी फोड़ी बिनुआं दित्ता रूढ़ाई।

भावार्थ – अधिकांश जन्मगीत, काले माह की अंधेरी रातों में कृष्ण जन्म की सुघोषणा से आरम्भ होते हैं। यद्यपि अन्तरे भिन्न-भिन्न होते हैं। इस गीत में भी यही है। गोपी शिकायत करती है कि मैं बावड़ी में पानी भरने के लिए जाती हूं तो कन्हाई मेरी मटकी फोड़ देता है। यशोदा क्रोधित होकर उसके हाथ-पांव बांध देती है। फिर वह लाठी से उसे डराती है। कन्हाई मां की भावनाओं को आन्दोलित करते हुए रूठ कर कहता है कि मैं देवकी पुत्र हूं। तुम्हारे लिए पराया

81. दूर लहौरां ते नणद जे आई

"दूर लहौरों नणद जे आई मन रीझ करो,
क्या-क्या बंडदी आई-मन रीझ करो ।
दाड़ दाखां नौरंग केले, घर-घर बंडदी आई,
घर-घर बंडदी बधाई-मन रीझ करो ।

इक नी भाबो परोल घुआड़ी, दूईए बैठकू दित्ता नी,
तीजिए भाबो पैर धुआए, चौथिया भाबो भोजन दित्ता ।
पंजियां भाबो दे मन भाई -मन रीझ करो ।

सूट तां बगे लैह नी नणाने, गीगे दी है बधाई,
गीगे जम्मै आई नी मन रीझ करो ।

सूट तां बगिए घर रख भावो, मैं लोहिये कारण आई,
मैं लोहिया लैंणा बधाई-नी मन रीझ करो ।

लोहिया सै मेरे मापेयां दित्ता नी मन रीझ करो,
ओह् तां दित्ता नी जांदा- नी मन रीझ करो ।

मार मटाका घर गेई नणद- नी मन रीझ करो,
घरै जे गेई सस्म पुछणा लग्गी, क्या मिली गीगे बधाई ।
माई तां म्हारा परदेसां तुरेया, भाबो धीवड़ जाई,
भाबो-बगानड़ी-जाई- नी मन रीझ करो।

भावार्थ : भाई के घर बेटा पैदा होने पर, बहन का अपनी ससुराल से, मायके आने का वर्णन अक्सर जन्मगीतों में हुआ है। वह अधिकारपूर्वक अपने मायके आती है और बधाई स्वरूप कोई उपहार मांगती है। भाभी यह कह कर देने से

स्वर लिपी :-

		2			0		3		
ऩिसा	सारे	रे	सा	रेऩि	ऩिऩि	ऩिऩि	ऩिसा	सारे	ऩि
दूऽ	रेल	हौ	रां	ऽ	नण	दजे	आऽ	ईऽ	ऽ
ऩिसा	सारे	रे–	सा	रेऩि	ऩि	ऩि	ऩिसा	सारे	ऩि
क्या	क्या	बण्ड	दी	ऽ	आ	ई	सुण	तूंऽ	ऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी। यह एक मात्र गीत झप ताल में निबद्ध है।

इन्कार करती है कि यह वस्तु उसे, उसके मां–बाबा से मिली है। इस गीत में भी लाहौर शहर से ननद मन में रीझ लिए, रास्ते भर बधाइयां बांटती हुई आई है। किशमिश, दाड़िम तथा विभिन्न प्रकार के फल आदि। एक भाभी ने आते ही मुख्य द्वार खोला, दूसरी ने बैठने के लिए आसन दिया, तीसरी भाभी ने पाँव धुलाए और चौथी ने भोजन परोसा। पुत्र जन्म पर बधाई के रूप में भाभी, बगा (स्त्री–पुरूष के पहनने योग्य वस्त्र) देने की बात कहती है। परन्तु ननद तो लोहिया ही चाहती है। नहीं देने पर नाराज़ होकर लौट जाती है। सास से बहाना बनाती है कि भाभी ने बेटी को जन्म दिया। फिर उदास होकर कहती है कि भाभी मेरी मां जाई नहीं है। इसलिए मुझे पर्याप्त सम्मान नहीं दिया। हास–परिहास के बहाने से बेटी का अपने मां–बाप के घर से दूर होते जाने का दर्द इस गीत में व्यंजित होता है।

82. कांगड़े दे उच्चे नी पहाड़

कांगड़े दे उच्चे नी पहाड़, बालक मेरा खेलै गडरिया,
ग्वाल़ेआं बिच गोपाल, बालक मेरा खेलै गडरिया,।

खिन्नूं तां बालक मेरा खेलणे जो मंगदा,
होर क्या मंगै मेरा लाल, बालक मेरा खेलै गडरिया।

बंसी तां बालक मेरा बज्जणे जो मंगदा,
होर क्या मंगै मेरा लाल, बालक मेरा खेलै गडरिया।

मक्खण तां बालक मेरा खाणे जो मंगदा,
होर क्या मंगै मेरा लाल, बालक मेरा खेलै गडरिया।

राधका राणी बालक साथे जो मंगदा,
होर क्या मंगै मेरा लाल, बालक मेरा खेलै गडरिया।

पींगा तां बालक मेरा झूटणे जां मंगदा,
होर क्या मंगै मेरा लाल, बालक मेरा खेलै गडरिया।

भावार्थ – कांगड़ा जनपद का यह गीत, कांगड़ा की पर्वतीय सुन्दरता से आरंभ होता है। पहाड़ पर बालक ''गडरिया-गडरिया'' खेल, खेल रहा है। अर्थात भेड़ बकरियां चराने वालों का अभिनय कर रहा है। गोप-ग्वालों के मध्य वह स्वयं को कृष्ण के रूप में परिकल्पित कर रहा है। मां कहती है कि मेरा बच्चा खेलने के लिए गेंद मांग रहा है। अति प्रसन्न होकर फिर स्वयं से ही प्रश्न कर रही है कि और क्या मांग रहा है मेरा लाल। बजाने के लिए बांसुरी, खाने के लिए मक्खन, झूलने के लिए पींग मांगता है। बहुत कोमल व संवेदनशीलता से कहती है कि साथ के लिए 'राधा' मांगता है। मां अपने शिशु को माधव रूप में देखते हुए उसी की रूचि के अनुसार इच्छाएं बता रही हैं।

		0				0	
–	सा–	ग–	ग–	ग–	गरे–	ग	पम
ऽ	काँग	ड़ेऽ	देऽ	उऽ	च्चे	नी	पऽ
ग	ग	ग	सा	सा–	रेरे–	सा	नी
हा	ऽ	ऽ	ड़	वाऽ	लक	मे	रा
–	सा	रे	रे	ग	रे	सा	–
ऽ	खे	लै	ग	ड	रि	या	ऽ
–	सा	ग	ग	ग–	ग–	प	प
ऽ	खिं	न्नू	तां	बाऽ	लक	मे	रा
	म–	ग	रे	ग	म	ग	–
ऽ	खेल	णे	जो	मं	ग	दा	ऽ
सा	सा	ग	ग–	ग	गरे	ग	प
ऽ	हो	र	क्या	मं	गैऽ	मे	रा
ग	–	–	सा	सा–	रेरे	सा–	नी–
ला	ऽ	ऽ	ल	वाऽ	लक	मेऽ	राऽ
–	सा	रे	रे	ग	रे	सा	–
ऽ	खे	ले	ग	ड	रि	या	ऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इसी प्रकार गाई जाएंगी।

रेरे	सानि़	ध़	प़	ध़सा	सा	गरे	गसा
राऽ	रीऽ	ऽ	नी	सुणे	यां	बैह	णेऽ

83. मदन मोहन जी दी प्यारी

मदन मोहन जी दी प्यारी,
नी सुणेयां बैह्णे बंसरिए।

भादों महीने दियां न्हेरियां राती,
जन्मेया कृष्णा मुरारी नी सुणेया बैह्णे बंसरिए।

जा जमेया जां दीपक बल्ेया,
चोंई चक होई रहियां लोई नी सुणेया बैह्णे बंसरिए।

घोल् बतासा घड़ोत मैं दिन्दी आं,
सोयने दी ऐ कटोरी नी सुणेया बैह्णे बंसरिए।

चनण कटी मैं पालणा बणादी आं,
डोरां लाइयां रेशमी नी सुणेया बैह्णे बंसरिए।

औन्दे ता जान्दे नन्ददेव झुटांदे,
जसोदा उतारैं नजरीं नी सुणेया बैह्णे बंसरिए।

भावार्थ : इस गीत में भी कृष्ण-जन्म गाथा का ही चित्रण है। परन्तु इसके सम्बन्ध में विशेष बात यह है कि यह गीत कन्हाई की प्रिय बासुंरी को सम्बोधित है। मदनमोहन की प्रिय बासुंरी, बहन सुन; भादों मास की अन्धेरी रात में कन्हैया ने जन्म लिया। उनके अवतरित होते ही चारों दिशाओं में प्रकाश फैल गया। सोने की कटोरी में बतासा घोल कर बच्चे को घड़ोत (प्रथम मीठा खाद्य) देती हूं। चन्दन का पेड़ कटवा कर बालक के लिए पालना बनवाती हूं तथा रेशमी डोरियां लगवाती हूं। जिसमें सोऐ बच्चे को आते-जाते बाबा नन्द झुटारे देते हैं और मां यशोदा उसकी नज़र उतारती हैं।

84. पिया सब फुल्ल-फुल्ले

पिया सब फुल्ल-फुल्ले, फुल्ले माली बाग, सिम्वले दा फुल नी फुल्लेया
गोरिये सिम्वले दा फुल्ल सै गैर गमानी, ना चढ़े दयो न देवतैं।

पिया न तुसाँ दे छट्टियां न पंजाप, मंदल किस घरैं बज्जेया।
गोरिये राजे दी नगरी बसे घणे लोक, क्या जाणे किस घरें बज्जेया।

पिया आवन नारां गावन गीत, ना सै तुहाड़ा लैंदियां,
पलक होया दिन प्रगास, नाई द्रुवा लेई आया
अजी किसदा तू नाई किसदा परोह्त किसदें द्रुवा लेई आया।

तेरा वो मैं नाई तेरा परोह्त, तेरैं मैं द्रुवा लेई आया,
कड्ड कटारा देई देआं जान, बालक मैंह ते छुपाया।
गोरिए तू मेरी नाजो चतर सुजान, बालक गोदा है तेरिया
खोलां पटारिया जंदरे भन्नां, घर-घर बंडदी बधाइयां।

अज मैं बालकें वालि़या पलंग डलवावां, दूईया जाणिया जो मंजली,
बालके वालि़या जो लेहफ बछावां, दूइया जाणियां जो खिंदड़ी।
बालके वालि़या जो सुंड खुआवां, दूइया जाणियां जो खिचड़ी।

भावार्थ : इस गीत में शिशु ने जन्म लिया है परन्तु पति अपनी पहली पत्नी से यह बात छुपा कर रखना चाहता है। लेकिन घर में बाजे भी बज रहे हैं पत्नी पूछती है - पिया, सब फूल खिल गये हैं किन्तु सिम्बल का फूल नहीं खिला। पति उत्तर देता है - गोरी सिम्बल का फूल अति साधारण होता है देवी-देवताओं को चढ़ाने योग्य नहीं माना जाता। (वास्तव में यह फूल खिलते ही हवा में बिखर जाता है) पत्नी पूछती है - पिया, आपके घर छटी (जन्म सम्बन्धी अनुष्ठान) या पंजाप (मुंडन संस्कार) नहीं है। फिर मन्दल (बाजा) किस घर बज रहा है। पति कहता है कि राजा की नगरी बड़ी विशाल है, क्या जानू कहां बज रहा है। इतने में सुबह हो गई और नाई बधाई देने को दूब लेकर आया। पत्नी सत्य को जान, नाराज होकर बोली - मैं कटार से अपनी जान ले लूंगी। आपने बच्चे की खबर मुझसे क्यों छुपाई। परन्तु बालक तो मां की गोद में ही था। वास्तव में पति की दूसरी पत्नी ने शिशु को जन्म दिया है। इस सच्चाई को पति इस

स्वर लिपी :-

			2				0			3			
										सा	–	रे	–
										पि	ऽ	या	ऽ
म	म	–	ग॒	–	रे	–	सा	–	–	ध़	–	सा	–
स	ब	ऽ	फु	ल्‌	ल	ऽ	फु	ऽ	ऽ	ले	ऽ	फु	ऽ
रे	–	म	रे	–	म	–	प	–	–	ध	–	–	–
ले	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ली	ऽ	बा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग
ध	ध	प	म	–	रे	–	सा	–	–	रे	–	म	–
सि	म्ब	ऽ	ले	ऽ	दा	ऽ	फु	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	–	ग॒	–	रे	–	सा	–	–	–	–	–	–
नी	ऽ	ऽ	फु	ऽ	ल्ले	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरावलियों पर गाई जाएंगी।

पत्नी से छुपाने की चेष्टा में था। नाई व पुरोहित द्वारा बधाई स्वरूप दूब लेकर आने पर सत्य सामने आ जाता है। पति इसी की गोद में शिशु को देते हुए बधाई देता है तो नारी सुलभ ममता से भर कर यही प्रसन्नतावश उपहार बांटने लगती है जो पहले नाराज़ थी। परन्तु संकेत रूप से यह गीत बहु पत्नी प्रथा की वजह से नारी को मिलते दंश व दु:ख को भी प्रकट कर देता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. **डा. गौतम शर्मा व्यथित** : काँगड़ी लोकगीत भाग-1
काँगड़ा शीला प्रकाशन-1973

2. **डा. गौतम शर्मा व्यथित** : काँगड़ा के लोकगीत साहित्यिक
विश्लेषण एवं मूल्यांकन-1984

3. **डा. गौतम शर्मा व्यथित** : झूमे धरती गाए लोक
प्रथम संस्करण, काँगड़ा कृष्णा
ब्रदर्स-1977

4. **डा. राजेन्द्र सिंह गुरूंग** : अप्रकाशित शोध प्रबन्ध
काँगड़ा के जन्म एवं विवाह संस्कार
गीतों का सांगीतिक विश्लेषण एवं
मूल्यांकन, गुरू नानक देव
विश्वविद्यालय, अमृतसर, वर्ष 1982-83

5. **केशव आनन्द** : हिमाचल का लोकसंगीत, संगीत
नाटक अकादमी,
नई दिल्ली - 110001

6. **डा. मनोरमा शर्मा** : लोकमानस के सुरीले स्वर
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय,
शिमला

7. **डा. मीनाक्षी दत्ता** : हिमाचली कृष्णकाव्य, काँगड़ा
शीला प्रकाशन, राज मन्दिर
नेरटी-1990

8. **डा. रमेश शर्मा अरूण** : काँगड़ी संस्कार गीतों की सामाजिक
व्याख्या 'रश्मि प्रकाशन'



जनमेजय सिंह गुलेरिया (राज्य शिक्षक सम्मान)
पुत्र स्व. श्रीमती शकुन्तला गुलेरिया व
श्री देस राज गुलेरिया (सेवानिवृत प्राचार्य)
जन्म : 4 फरवरी, 1968, नगरोटा सूरियां, कांगड़ा, हि.प्र.

शिक्षा

एम.एस.सी., एम. फिल गणित, एम.ए. संगीत, बी.एड, (हि.प्र. वि.वि. शिमला) संगीत विशारद, संगीत भास्कर, संगीत चूड़ामणि (स्वर्ण पदक) चण्डीगढ़

❖ शिक्षा व संगीत के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर प्रदेश की राज्यपाल महामहिम श्रीमती उर्मिला सिंह द्वारा शिक्षक दिवस पर 5 सितम्बर 2014 को सर्वश्रेष्ठ शिक्षक के रूप में सम्मानित।

❖ संस्कृति मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा काँगड़ा के विवाह गीतों के संगीतात्मक अध्ययन के लिए सीनियर फैलोशिप।

❖ संगीत नाटक अकादेमी दिल्ली व संस्कृति मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा प्रायोजित काँगड़ा लोक साहित्य परिषद नेरटी की दो परियोजनाओं में संगीत निर्देशन व स्वरांकन।

❖ काँगड़ा जनपदीय जन्मगीतों की गायन शैली के संगीतात्मक अध्ययन पर शोधप्रबन्ध।

❖ आकाशवाणी, दूरदर्शन व विभिन्न राज्यों के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अनेक प्रस्तुतियां व निर्णायक की भूमिका।

❖ टी. सीरीज व के एम. कंपनी के तीन पहाड़ी ऑडियो व वीडियो कैसटों में गायन व निर्देशक की भूमिका।

❖ संगीत विषय पर 'विश्व ध्यानाधार' व 'कला कुंज भारती' में आलेख प्रकाशित।

❖ स्वायत्त संस्थाओं – राजपूत कल्याण सभा (हि0प्र0), रोटरी क्लब धर्मशाला, शाहपुर व हिमाचल केसरी आदि विभिन्न संसस्थाओं द्वारा संगीत व शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए सम्मानित।

❖ वर्ष 2009 में लोक संगीत व शास्त्रीय संगीत के संवर्धन हेतु संगीतांजली कला केन्द्र की स्थापना जिसके अंतर्गत लोक संगीत, छिंजोटी गायन के संगीतात्मक अध्ययन हेतु संस्कृति मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय प्रतिभा छात्रवृति प्राप्त दो छात्रों का निर्देशन।

❖ अठारह वर्ष के अध्यापन काल में संगीत शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों द्वारा जिला, राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर निरन्तर पुरस्कार प्राप्ति के सन्दर्भ में मुख्य प्रेरक व निर्देशक

संप्रति– राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय शाहपुर में संगीत प्राध्यापक।

19 सिविल लाईन्ज, दुर्गा भवन, धर्मशाला
मो. 94180–65132 , मो. 98050–65132

ISBN: 978-81-931425-0-9